Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 35 • 6 - 12 जून, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 04-06-2022 • पेज : 24 • ₹ 10

भिक्षु वाणी

हिंसा

मछ गलागल लोक में,
सबला ते निबलां नें खाय।

लोक में मत्स्य न्याय चल रहा है। सबल निर्बल को खा रहा है।

अणुव्रतों के द्वारा पापों से बचा जा सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

बम्बलू, २६ मई, २०२२

जन-जन को अपने मंगल प्रवचन से चित्त समाधि प्रदान करने वाले महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी १४ किलोमीटर का विहार कर बम्बलू ग्राम में पधारे।

द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के ज्ञाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि समय का अच्छा उपयोग करना चाहिए। कोई भी घटना घटती है, उसके लिए समय और स्थान चाहिए।

समय एक ऐसा तत्त्व है, जो सामान्यतया फ्री मिलता है। बरसात का पानी कुंड में भरा जा सकता है, या नाली में व्यर्थ भी बह सकता है। वैसे ही समय भी बरस रहा है, उसका हम उपयोग क्या कर रहे हैं। कोई सामायिक में, कोई बात में या नींद में समय व्यतीत कर सकता है।

तीन शब्द हो जाते हैं–सदुपयोग, दुरुपयोग, अनुपयोग। अच्छे कार्य में समय का सदुपयोग हो जाता है। आदमी गलत काम करता है, तो समय का दुरुपयोग हो सकता है। ऐसे आलस्य में बैठा है, तो समय का अनुपयोग हो गया। हमें समय के दुरुपयोग से तो बचना ही चाहिए, अनुपयोग भी ठीक नहीं। हमें समय का सदुपयोग करना चाहिए।

हमें मानव जीवन का समय मिला है, इसका हम लाभ उठाएँ। आगे की उम्र में आगे का ध्यान देना चाहिए। साधना करनी चाहिए। यह एक प्रसंग से समझाया कि जवानी का मोती वापस नहीं आने वाला है।

साधु हो या गृहस्थ वृद्धावस्था में सबको आगे की सोचनी चाहिए। गुरुदेव

महाप्रज्ञ जी अंतिम वर्षों की यात्रा में फरमाते थे कि यात्रा तो महाश्रमण की हो रही है, मैं तो सहयोगी बन रहा हूँ। यह गुरु की कृपा थी। वो अपनी साधना में ज्यादा ध्यान देते थे। उम्र आने पर सांसारिक काम से निवृत्ति व साधना में प्रवृत्ति करें। हमें समय का मूल्यांकन करना चाहिए कि कब कहाँ पर मोड़ लें। जीवन में धारा के साथ चलें।

जिंदगी में सदाचार अच्छा रहे। शांति में रहें। मानव जीवन का बड़ा अच्छा अवसर हमें प्राप्त है, हमें इसका अच्छा लाभ उठाना चाहिए। गृहस्थों की दृष्टि से श्रावक बनना अच्छी बात है। बारहव्रती या सुमंगल साधना साधक बनें। ज्यादा से ज्यादा धर्म के मार्ग पर गृहस्थ चलें।

गृहस्थ सोचे–साधु तो महाव्रत पालने वाले, समता का जीवन जीने वाले हैं। मेरे से उतनी साधना वर्तमान में तो असंभव है। पर मैं अणुव्रत का तो पालन कर सकता हूँ। हमारा समय जितना पापों से बच सके हमें प्रयास रखना चाहिए। धर्म का जितना किया जा सके, आसेवन करना चाहिए। समय को सफल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

बम्बलू गाँव में आना हुआ है। हम तीन प्रतिज्ञाएँ–सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को बताने का प्रयास करते हैं। गाँव के लोगों ने भी समझकर प्रतिज्ञाएँ स्वीकार कीं।

आज चतुर्दशी का दिन हाजरी का दिन है। पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन किया। जागरूक रहने की प्रेरणा दी।

स्मृति सभा

पूज्यप्रवर के सान्निध्य में शासनश्री साध्वी मोहनांजी, साध्वीश्री कल्याणमित्रा जी एवं साध्वी विनयप्रभाजी की स्मृति सभा आयोजित की गई। पूज्यप्रवर ने तीनों साध्वियों का परिचय दिया। शासनश्री साध्वी मोहनांजी अंक विद्या, साहित्य लेख एवं सिलाई-रंगाई में निपुण थी। साध्वी कल्याणमित्राजी रोज ७०० गाथाओं का स्वाध्याय करती थीं। सिलाई-रंगाई में निपुण थी। इन्होंने साध्वी कलाश्री जी की अच्छी सेवा की थी। साध्वी विनयप्रभाजी को काफी समय से कैंसर की बीमारी थी। वे भी आगम साहित्य, सिलाई, व्याख्यान आदि में निपुण थी। आपको लगभग ढाई घंटे का संथारा आया था। साध्वी मोहनांजी वयोवृद्ध साध्वी थी।

(शेष पृष्ठ २ पर)

गुरु और ग्रंथ से मिले ज्ञान से अच्छा विकास हो सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

राजेरा, २७ मई, २०२२

भीषण गर्मी में अपनी वाणी से शीतलता प्रदान करने युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी १२ किमी विहार कर राजेरा गाँव पधारे। मुख्य प्रवचन में शांत सौम्यमूर्ति युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने पुनर्भव यानी पुनर्जन्म की बात बताई है। सिद्धांत यह है कि हर आत्मा ने अनंत-अनंत बार जन्म ग्रहण कर लिया है। प्रश्न होता है कि पुनर्जन्म क्यों होता है?

शास्त्रकार ने बताया है–हम पुनर्जन्म को एक वृक्ष मान लें। उसके जो मूल हैं, उनको सींचन देने वाला कषाय है। चार कषाय से पुनर्जन्म का वृक्ष हरा-भरा रहता है। यह पुनः जन्म, पुनः मरण का चक्कर चलता रहता है। अध्यात्म की साधना का प्रयोजन है–यह पुनर्जन्म की परंपरा समाप्त हो जाए। आत्मा मोक्ष में विराजमान हो जाए।

हो सकता है कोई आदमी पुनर्जन्म में विश्वास न भी करे। नास्तिक आदमी पुनर्जन्म, पुण्य-पाप का फल, स्वर्ग-नरक व मोक्ष को नहीं मानता है। अपना-अपना आस्था का विचार है। आस्तिक विचारधारा में पुनर्जन्म की बात को प्रतिपादित किया गया है। जैन धर्म में तो बहुत ही दृढ़ता के साथ, विस्तार के साथ पुनर्जन्म के सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया है।

पुनर्जन्म की पृष्ठभूमि में आत्मवाद का सिद्धांत है। पाँव हैं, तो आगे का शरीर ठीक चलता है। पुनर्जन्म के दो पाँव हैं–आत्मवाद और कर्मवाद। आत्मा है, तो पुनर्जन्म है और कर्मवाद है, तो पुनर्जन्म है। कषाय भी कर्मवाद की ही चीजें हैं। पुनर्जन्म के आधार पर अपनी जीवनशैली रखनी चाहिए कि पुनर्जन्म का सिद्धांत सही हो सकता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
6 - 12 जून, 2022

✦ *जीवन में सदुपदेश का थोड़ा-सा अंश भी उतरना शुरू हो गया तो जीवन में सत् परिवर्तन आ सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

स्वतंत्रता अच्छी हो सकती है स्वच्छंदता अच्छी नहीं होती है : आचार्यश्री महाश्रमण

लूणकरणसर, २४ मई, २०२२

साधना के श्लाका पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि दया, करुणा, अनुकंपा यह एक ऐसा तत्त्व है, जो आदमी की चेतना को अच्छा रखता है। अनुकंपाशील आदमी अनेक पापों से बच सकता है। अहिंसा की साधना के लिए दया का भाव सहायक तत्त्व होता है कि मेरी ओर से किसी की हिंसा न हो जाए। मेरी ओर से किसी को कष्ट न पड़े।

आदमी में दयाहीनता होती है, तब वह दूसरों को कष्ट देने का इरादतन प्रयास करता है। दया की चेतना है, तो वह फिर किसी को कष्ट नहीं देता है। साधु तो दया मूर्ति होना चाहिए। साधु के पाँच महाव्रतों में पहला महाव्रत है– सर्वप्राणातिपात विरमण। यह मुनि मेतार्य के जीवन प्रसंग से समझाया कि सावद्य सत्य भी नहीं बोलना चाहिए।

साधु तो अहिंसा मूर्ति, अहिंसा का पुजारी होना चाहिए। जो साधु मन, वचन, काया से किसी को दुःख नहीं देते ऐसे साधु का मुख-दर्शन करने से दर्शनकर्ता का पाप झड़ जाता है। साधु की तो अहिंसा-दया ही उसका धन है।

भारत का मानो भाग्य है कि यह संतों की धरती भी रही है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत और आचार्य महाप्रज्ञजी ने प्रेक्षाध्यान की बात बताई है और भी अनेक संत अतीत में हुए हैं और वर्तमान में भी हैं।

गृहस्थों में भी दया की भावना देखने

को मिल सकती है। यह भी एक प्रसंग से समझाया कि राज्य के विस्तार के लिए हिंसा का सहारा नहीं लेना चाहिए। युद्ध की बजाय शुद्ध कार्य में शक्ति का नियोजन करना चाहिए। अहिंसा परमधर्म है। अहिंसा एक ऐसी नीति है, जो सुख-शांति देने वाली है।

राजनीति हो या विदेश नीति, राष्ट्र नीति हो या समाज नीति, नीति में अहिंसा का प्रभाव रहना चाहिए। वो नीति सुनीति हो सकती है, जिस नीति के भीतर अहिंसा आत्मा के रूप में विराजमान हो। लोकतंत्र में समानता की बात है। न्यायपालिका में न्याय की बात सबके लिए समान है।

स्वतंत्रता तो ठीक हो सकती है, पर स्वच्छंदता ठीक नहीं है। अनुशासन तो सब जगह उपयोगी होता है। यह भी एक प्रसंग से समझाया कि आजादी अपनी सीमा में ही ठीक है। अहिंसा, दया, अनुकंपा, मानव को एक अच्छा मानव बनाए रखने वाला तत्त्व है। यह निरवद्य दया तो और भी उत्तम है। पाप आचरणों से स्वयं को बचाएँ। दया-अनुकंपा को हम हमारे जीवन के साथ रखने का प्रयास करें, यह काम्य है।

साध्वीप्रमुखाजी ने कहा कि पूज्यप्रवर जहाँ कहीं पधारते हैं, अनेक-अनेक लोग पूज्यप्रवर की उपासना में पधारते हैं। गाँवों में तो छत्तीस कोम के लोग प्रवचन सुनने आते हैं। गुरुदेव के प्रति लोगों का आकर्षण है। गुरु के द्वारा ही ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

मुख्यमुनिश्री ने कहा कि जो गुरु लज्जा, दया, संयम और ब्रह्मचर्य की शिक्षाएँ देते हैं, जो शिक्षाएँ कल्याण के इच्छुक व्यक्ति के लिए शुद्धि के स्थान हैं, ऐसे गुरु की मैं सतत पूजा करता हूँ, प्रणाम करता हूँ। ये चार गुण गुरु से ही प्राप्त हो सकते हैं। ये विशिष्ट गुण हैं।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि कल लूणकरणसर आना हुआ है। कल दिन में भी रात जैसी हो गई थी। साध्वी पानकुमारीजी जो दसवें दशक में हैं, उनसे मिलना हुआ। उनके सद्गुण पुष्ट रहें। साथ ही साध्वियाँ भी खूब अच्छा काम करती रहें। सब कुछ अच्छा चलता रहे।

साध्वी पानकुमारीजी के सिंघाड़े से साध्वी मंगलयशाजी ने अपनी प्रसन्नता के भाव पूज्य चरणों में अभिव्यक्त किए। पूज्यप्रवर की अभिवंदना में साध्वियों ने गीत की प्रस्तुति भी दी।

गुरु और ग्रंथ से मिले ज्ञान से अच्छा विकास...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मृत्यु होने पर शरीर निष्क्रिय हो जाता है, तो पहले कौन सा तत्त्व था जिसके कारण आदमी सक्रिय था। वो तत्त्व है, आत्मा। पुनर्जन्म के सिद्धांत के आधार पर ही यह साधुपन लिया जाता है। एक प्रसंग से समझाया कि विचारधारा एक होने से आदमी से स्नेह का भाव हो जाता है। पर नास्तिक आदमी आगे-पीछे कुछ नहीं मानता। पर साधुपन है, तो शांति का जीवन है। साधु तो पुनर्जन्म के सिद्धांत को मानते हैं। आस्तिकवाद का सिद्धांत सही है, तो फिर नास्तिकवाद का क्या होगा?

पुनर्जन्म है, इस सिद्धांत पर जीवन जीना चाहिए। अच्छा जीवन जीएँ, पापों से बचें। परलोक में संदेह होने पर भी अशुभ काम को तो छोड़ देना चाहिए। धर्म के मार्ग पर जितना संभव हो सके चलने का प्रयास करना चाहिए। गार्हस्थ्य में भी पापों से बचने का प्रयास करना चाहिए। झूठ-कपट, धोखा-छलना से बचें। ईमानदारी पर चलें। जीवन में सरलता-सच्चाई है। अहिंसा पर आस्था रहे। धर्म के मार्ग पर चलें, यह सुख, कल्याण और भलाई का मार्ग है।

हमारी गुरु परंपरा चलती आ रही है। हमारे गुरुओं ने कितना ज्ञान देने का प्रयास किया है। कितनों ने साहित्य सृजन किया है, तत्त्ववेत्ता हुए हैं। गुरु के प्रवचन से प्रेरणा पथ-दर्शन मिलता है। प्रवचन नवनीत हो सकता है। कई बार ग्रंथों के पढ़ने से जो बात समझ न आए वो बात ज्ञानी पुरुषों के प्रवचन सुनने व चर्चा-वार्ता करने से ज्ञान की स्पष्टता हो सकती है।

ग्रंथों का भी हमें बड़ा सहयोग मिलता है, पर ग्रंथ निर्जीव है। साथ में सजीव ज्ञानी-पुरुषों का संयोग मिल जाए तो कहना ही क्या? ग्रंथ और गुरु से ज्ञान को समझा जा सकता है।

हमें जीवन में आस्तिकवाद, नास्तिकवाद, पुनर्जन्म व नव तत्त्वों की बातों को आत्मसात करने का, अच्छी तरह बौद्धिकता से समझाने का यथाजीवन प्रयास करना चाहए।

आज राजेरा आए हैं। जैन-अजैन कोई हो। हमने तीन प्रतीज्ञाएँ बताई हैं–सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। राजेरा के लोगों को ये तीन संकल्प स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में राजेरा के सरपंच महेंद्र गोदारा, विजय आसकरण, मुकेश, सुरेश, पुगलिया ने गीत, महिला ग्रुप, महिला मंडल, मुन्नी देवी, मोणुराज शारस्वत ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अणुव्रतों के द्वारा पापों से बचा जा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तीनों साध्वियाँ धर्मसंघ में दीक्षित हो, धर्मसंघ में ही कालधर्म को प्राप्त हो गईं। सभी के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करते हुए चार लोगस्स का ध्यान करवाया। साध्वी मोहनांजी की सहवर्ती साध्वियाँ अच्छा कार्य करती रहें। इन तीनों साध्वियों के प्रति हमारी मध्यस्थ भावना।

मुख्य मुनिप्रवर एवं साध्वीप्रमुखाश्रीजी, साध्वी मोक्षप्रभाजी, मुनि ध्रुवकुमारजी, साध्वी जिनप्रभाजी ने भी अपनी श्रद्धासिक्त भावना तीनों साध्वियों के प्रति व्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमने तीन साध्वियों की स्मृति सभा आयोजित की। साध्वी मोहनांजी की सहवर्ती साध्वियाँ खूब चित्त समाधि में रहें। साध्वी रामकुमारीजी भी खूब चित्त समाधि में रहें। साध्वी कल्याणमित्राजी का साध्वी कलाश्री जी के साथ रहना विशेष बात थी। तीनों साध्वियों की आत्माएँ उन्नति की ओर प्रगति करें।

आज ही के दिन मैंने मुख्य मुनि पद पर मुनि महावीर को स्थापित किया था। साध्वीवर्या का पद दो दिन पहले स्थापित किया था। दोनों ही खूब अच्छा विकास करें। खूब अच्छी सेवा करें, स्वस्थ्य रहें, चित्त समाधि में रहें।

सिवजी से रतनलाल जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर की अभिवंदना में रामलाल रांका ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने कालचक्र के बारे में समझाया।

✦ *दीर्घ जीवन पाने की कामना से पूर्व यह संकल्प करो कि मैं परोपकारयुक्त जीवन जीऊँगा।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाश्री मनोनयन पर विशेष

पावरफुल व्यक्तित्व का सफर

❐ डॉ. साध्वी सरलयशा ❐

साढ़े पाँच सौ साध्वियों बीच स्वयं को साध्वीप्रमुखा के ओहदे पर काबिज करना पावरफुल व्यक्तित्व पहचान है। भैक्षव शासन में एक गुरु-एक विधान (अनुशासन) की स्वस्थ परंपरा है। इत्तफाक से इस गरिमापूर्ण पद की पंक्ति में अर्हतापूर्वक स्वयं को खड़ा करना हर एक साध्वी के लिए खुला अवकाश है। अवकाश और योग्यता में घनिष्ट संबंध है। जिनके ऊँचे सपने, प्रखर भाग्य और भोग्य पुरुषार्थ होता है वो ही पद पर सुशोभित होते हैं। इस त्रिपदी की अधिष्ठातृ नवनिर्वाचित, साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी को अनंतसह हार्दिक शुभकामनाएँ। मंगल बधाई।

प्रबुद्ध शैषव–

लाडनूं की लाडली का बचपन बड़ा ही सुखद और मनहारी रहा। क्यों न हो? सौभाग्य की संपदा साथ जो लाई। मोदीकुल में विरासत विरासत के बतौर मिले सद्संस्कार बालिका के विकास में योगभूत बने। परिवार के छोटे-बड़े सभी सदस्यों की बालिका सरोज चहेती और आकर्षण का केंद्र बनी। खेल-कूद की उम्र में ही विनम्रता, जागरूकता, अप्रमत्तता और अनुशासनप्रियता की झलक देखी गई।

फौलादी संकल्प–

अनेक जन्मों के पुण्योदय से मानव जीवन को सार्थक बनाने का फौलादी संकल्प प्राणवान बना। आत्मा के शाश्वत स्वरूप के दर्शन की प्यास तीव्र बनी। उसी खोज में किशोरावस्था में ही सरोज ने जैन संन्यास के पथ का चयन किया। समुचित प्रेरणा पाथेय पाकर साधना की प्रथम प्रयोग स्थली पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश किया। मुमुक्षु सविता के रूप में पा०शि० संस्था में लगभग छः वर्षों तक शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त किया। मुमुक्षु अवस्था में सुदूर प्रांतों की यात्राएँ कीं।

समण श्रेणी में चरन्यास–

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी के क्रांतिकारी अवदानों की एक मिशाल है–समण श्रेणी। इस साहसी शुरुआत की अग्रिम पंक्ति में मुमुक्षु सविता ने अपने को समर्पित किया। छः समणियों में मुमुक्षु सविता समणी स्मितप्रज्ञा बनीं।

प्रारंभ से ही आपकी सोच और कार्यशैली पॉजिटिव और पावरफुल रही। गुरुकृपा से समण श्रेणी की प्रथम समणी नियोजिका बनें। यह भी कम सौभाग्य की बात नहीं कि हमउम्र सदस्यों में आपको श्रेणीप्रमुख बनाया गया। शक्ति जागरण का समुचित परिवेश आपके लिए वरदान सिद्ध हुआ। देश-विदेश की अनेक यात्राएँ कर जिनशासन की प्रभावना की। जहाँ भी गए गुरु का नाम रोशन किया।

श्रेणी आरोहण सह वरदान–

भविष्यद्रष्टा आचार्यश्री तुलसी ने आपके भीतर छिपी संभावनाओं को विराट् रूप दिया। समणी स्मितप्रज्ञा को साध्वी विश्रुतविभा बनाया। सौभाग्यवश गुरुकृपा से नाम में ही प्रसिद्धि का वरदान गुम्फित हो गया।

कसौटी पर खरी उतरी–

पूज्यवरों के वात्सल्यपूर्ण नेतृत्व की छाँह तले फलने-फूलने का अवसर मिला। कर्तृत्व का करिश्मा कसौटियों में निखरता गया। गुलाब के खिलने से पूर्व दसों बाँटें चुनौती बन जाते हैं। निःसंदेह खिलने वाले गुलाब के फूल का प्रबल पराक्रम और फौलादी संकल्प होता है। वो सभी काँटों के बीच मनमोहक सुगंध लिए खिल उठता है। संभव है कुछ ऐसी ही कसौटियों से गुजरने का अनुभव मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी को भी हुआ होगा। कुछ भी हो आपके बुलंद हौंसले से कवि की ये पंक्तियाँ सार्थक हुई–

मंजिल उन्हीं को मिलती है,
जिनके सपनों में जान होती है।
परों से कुछ नहीं होता,
हौंसलों से उड़ान होती है।।

पुण्योदय से गुरुकृपा का सुरक्षा कवच आपकी राहों को निष्कंटक बनाता गया। जन्मपत्री के मुताबिक गुरुकृपा का प्रबल योग बना रहेगा। व्यवहार के धरातल पर भी इसे आँका जा सकता है। गुरु तुलसी की कृपादृष्टि से संयम रत्न मिला। प्रज्ञासुमेरु आचार्य महाप्रज्ञ जी की शुभदृष्टि से आध्यात्मिक विकास के नए क्षितिज उद्घाटित हुए। इत्तफाक से युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की कसौटी पर भी आप खरी उतरी।

साध्वीप्रमुखा पद पर सुशोभित–

महातपस्वी पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने गुरुद्वय से संपोषित मुख्य नियोजिकाजी साध्वी विश्रुतविभाजी की क्षमताओं का अंकन किया। पूज्यप्रवर के शब्दों में–मुझे तो आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा तैयार की हुई साध्वीप्रमुखा विरासत में मिल गई। विरासत का मूल्यांकन करना गुरुदेवश्री की दिव्यदृष्टि और अद्म्य साहस का द्योतक है। पूज्यप्रवर के हर निर्णय में प्रौढ़ता के दर्शन होते हैं।

साध्वीप्रमुखा चयन की अनुशंसा और प्रशंसा में लाखों लोग मुखरित हो उठे। चतुर्विध धर्मसंघ में प्रसन्नता की लहर व्याप गई। पूज्यप्रवर के इस चयन को सभी ने पलकों में बिठाया है। आशा है शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की सभी विशेषताओं का अनुगमन करते हुए नवनिर्वाचित साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी अपनी विशिष्ट पहचान बनाएँगे।

सादर समर्पित है चतुर्विध धर्मसंघ सह आत्मीय शुभकामनाएँ–

दिली ख्वाबों से दुआ करते हैं आज
हे सतिशेखरे! हर दिल पर करो आप राज।।

श्रावक सम्मेलन का आयोजन

साहूकारपेट, चेन्नई।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में ऐतिहासिक चातुर्मास नहीं, जीवन को बनाएँ विषय पर श्रावक सम्मेलन का आयोजन हुआ।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि हमें जीवन को भार नहीं, अपितु उपहार बनाना चाहिए, उत्सव के रूप में हमें जीवन जीना चाहिए। जीवन में बाधाएँ, विपदाएँ, समस्याएँ आएँगी, लेकिन हम डिगें नहीं, सम्मानपूर्वक उसका सामना करते हुए, आगे निकल जाएँ। शिकायतों की अपेक्षा सहयोग को अपनाएँ, रिश्तों में मिठास को घोलें।

मासखमण अभिनंदन समारोह का आयोजन

चेन्नई।

मुनि सुधाकर कुमार जी, मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में कन्या बाई भंसाली के मासखमण अभिनंदन समारोह का आयोजन रखा गया। मुनिश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। आगंतुकों का स्वागत प्रवीण बाबेल ने किया। कन्या बाई भंसाली का परिचय मनोज गादिया ने दिया।

मुनि सुधाकरजी ने कहा कि तप सिर्फ दो अक्षरों का नाम है पर कर्म निर्जरा का सबसे बड़ा माध्यम है, तन को तपाकर विरले ही ऐसे काम कर सकते हैं, चातुर्मास से पहले ही कन्या बाई भंसाली ने मासखमण की भेंट दी है, तप का कलस धर्मसंघ पर चढ़ाया है।

मुनिश्रीजी ने कन्या बाई भंसाली के मासखमण अभिनंदन करते हुए शुभकामनाएँ प्रेषित की। मुनि नरेश कुमार जी ने कहा कि जिनका मजबूत मनोबल हो वो ही तप के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। कन्या बाई भंसाली इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है, जिन्होंने इतनी गर्मी और इस उम्र में मासखमण करके संघ पर कलश चढ़ाया है। मुनिश्री ने तप का अभिनंदन गीतिका के माध्यम से किया।

संघीय संस्थाओं से तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, तेयुप के उपाध्यक्ष विकास कोठारी, महिला मंडल की मंत्री रीमा सिंघवी, विनोद डांगरा, पदमा दुगड़ सभी ने वक्तव्य एवं नीरज गोगड़, अशोक लुणावत, दमयंती बाफना और सुरेखा दुगड़ ने गीतिका के माध्यम से तपस्वी बहन का अभिनंदन करते हुए शुभकामनाएँ संप्रेषित की।

कार्यक्रम में अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में केएलपी परिवार का सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन शांति दुधोड़िया ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रदीप दुगड़ ने किया।

धम्म जागरण की गूँज

दक्षिण मुंबई।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का १३वाँ महाप्रयाण दिवस धम्म जागरण के रूप में मनाया गया। स्वागत वक्तव्य स्थानीय तेयुप के अध्यक्ष पूरण चपलोत ने दिया। धम्म जागरण के लिए आमंत्रित भिक्षु भक्ति मंडल, सांताक्रुज ने प्रारंभ में दो संगीत बिना वाद्य यंत्रों के पेश किए।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' की सहवर्तिनी साध्वी प्रियंवदा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ एक महान यशस्वी, महामनस्वी प्रज्ञापुंज के धनी थे।

साध्वी प्रेरणाश्री जी एवं साध्वी मृदुयशाजी ने गीत के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की। सांताक्रुज भिक्षु भक्त मंडल के सदस्य राजेश चौधरी, मुकेश मादरेचा, कनकराज सिंघवी, किरण परमार, पियूष चौधरी, मनीष परमार ने गीतों का संगान कर उपस्थित जनता को भाव-विभोर कर दिया।

कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री रौनक धाकड़ ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप के उपाध्यक्ष एवं मीडिया प्रभारी नितेश धाकड़ ने किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल, अणुव्रत क्षेत्रीय, कन्या मंडल, किशोर मंडल, दक्षिण मुंबई के सभी कार्यकर्ताओं का श्रम रहा।

अपने दायित्व को कैसे समझें कार्यशाला

टी-दासरहल्ली।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में 'अपने दायित्व को कैसे समझें' कार्यशाला का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। साध्वीश्री जी ने दायित्व के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि युवकों को जागरूकता से अपने दायित्व निभाते हुए धर्मसंघ में अपनी सेवाएँ प्रदान करनी चाहिए। हर मनुष्य को अपनी जिम्मेदारी को निर्वाहन करते हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

सहवर्ती साध्वी अमितरेखाजी ने गीतिका के माध्यम से दायित्व का महत्त्व बताया। कार्यशाला में तेयुप अध्यक्ष कुशल बाबेल ने सभी का स्वागत किया। संचालन पूर्व अध्यक्ष राकेश दक ने किया। तेरापंथ ट्रस्ट से उपाध्यक्ष लोकेश बोहरा, मंत्री कन्हैयालाल गांधी, कोषाध्यक्ष सुरेंद्र मेहर, तेयुप परामर्शक भगवतीलाल मांडोत, तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष मुकेश चावत एवं तेयुप सदस्यों, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री दिलीप पोखरना ने किया।

अणुव्रत समिति : राहत सामग्री वितरण

नगाँव।

अणुव्रत समिति, नगाँव द्वारा बाढ़ की विभीषिका झेल रहे ग्राम्य अंचल के लोगों के बीच राहत सामग्री का वितरण किया गया। नगाँव के विधायक रूपक शर्मा ने अणुव्रत समिति के अध्यक्ष छतर सिंह जैन से बाढ़ से जूझ रहे लोगों की सहायता की अपील की। उनकी इस अपील पर अणुव्रत समिति ने नगाँव जिले के पश्चिम जला, रंगथली आदर्श गाँव, जलाह बेबेजिया गाँव, पाखिमोरिया गाँव, रंथोली राजाभेटी गाँव में २५० परिवार के बीच राहत सामग्री का वितरण किया गया। अणुव्रत समिति के सभी सदस्यों ने इस कार्य के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

कार्यक्रम में अध्यक्ष छतर सिंह जैन, मोहनलाल नाहटा, सरदार देवेंद्र सिंह सहमी, लक्ष्मीपत चोरड़िया, इंदर बोथरा सहित अनेक सदस्यगण उपस्थित थे। समिति के सचिव संजय बोथरा ने कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग दिया। इस अवसर पर जितुमोनी बोरा, जिला पंचायत प्रेसिडेंट मृदुल फूलन बोरा, निपुल शर्मा, रिआजुल हक ने सहयोग दिया।

✦ *हम अहिंसा की साधना करते हुए कषाय को प्रतनु करने का प्रयास करें।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

श्रीउत्सव का आयोजन

भुवनेश्वर।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा तेरापंथ भवन में श्रीउत्सव आयोजन किया गया। मुनि जिनेश कुमार जी से मंगलपाठ सुनने के पश्चात नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ भुवनेश्वर मध्य विधायक अनंत नारायण जैना भुवनेश्वर, बीएमसी के विभिन्न वार्ड के कॉरपोरेटर, महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, अभातेममं के प्रतिनिधि इंदिरा लुनिया, कटक महिला मंडल अध्यक्षा हीरा बैद, बंगाल ज्ञानशाला प्रभारी प्रेमलता चोरड़िया, तेयुप अध्यक्ष विवेक बेताला, भुवनेश्वर समाज के विभिन्न पदाधिकारी द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन एवं शुरुआत की गई।

कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार के हस्तकला, साड़ी, बेडशीट, लेडीज वेयर, खान-पान आदि के स्टॉल लगाए गए। कार्यक्रम में महिला मंडल के उपक्रम स्वस्थ समाज के अंतर्गत फ्री हेल्थ चेकअप एंड डेंटल चेकअप कैंप लगाए गए। अध्यक्ष मधु गीड़िया तथा सभा अध्यक्ष बच्छराज बेताला ने वक्तव्य दिया। भवन समिति अध्यक्ष सुभाष भूरा ने सुझाव दिए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अनंत नारायण जेना ने कार्यक्रम की प्रशंसा की। कार्यक्रम के संचालन में महिला मंडल के साथ तेरापंथ समाज के सभी घटकों का पूरा योगदान रहा। कार्यक्रम में महिला मंडल ने संपूर्ण मारवाड़ी समाज, गुजराती समाज के साथ में स्थानीय समाज को भी जोड़ने का प्रयास किया। कार्यक्रम का संचालन ललिता सुराणा ने किया।

तेममं और प्रेक्षावाहिनी की संयुक्त कार्यशाला

हैदराबाद।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में प्रेक्षावाहिनी और अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में ध्यान कार्यशाला का संयुक्त आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र और मंगलभावना से हुई। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेक्षाध्यान गीतिका का संगान से किया।

इस अवसर पर साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि हम विश्व के कोने-कोने की खबर रखते हैं, किंतु अपने स्वयं के भीतर हम नहीं देखते। अपने आपको जानने के लिए ध्यान का प्रयोग आवश्यक है। साध्वी कल्पयशाजी ने कहा कि योग ३६५ दिन ही करना चाहिए। यह तीन प्रकार के होते हैं–शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक। आज समाज योग ध्यान साधना में काफी जागरूक हुआ है।

साध्वी कल्पयशाजी ने शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनाव से मुक्त कैसे हो सकते हैं, इसके छोटे-छोटे प्रयोग बताए।

महिला मंडल की अध्यक्ष अनिता गिड़िया ने सभी का स्वागत किया। प्रेक्षावाहिनी की संवाहक रीता सुराणा ने शुभकामनाएँ दी व प्रेक्षावाहिनी से भाई-बहनों को ज्यादा-से-ज्यादा जुड़ने को कहा।

नवघोषित नव साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी को महिला मंडल की ओर से ढेर सारी बधाइयाँ दी और आध्यात्मिक मंगलकामना की। मंत्री श्वेता सेठिया ने सभी का आभार ज्ञापन किया। इस अवसर पर प्रवक्ता सरोज सुराणा, चेतना बोथरा, सरोज भंडारी, चंदा जैन, सरिता चिंडालिया, रंजू बैद आदि बहनें उपस्थित थीं।

पंच उत्सव कार्यक्रम का आयोजन

वाशी।

शासनश्री साध्वी कैलाशवती जी की सहवर्तिनी साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी के जीवन पर पंच उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साध्वीश्रीजी ने कहा कि बचपन से ही सत्यप्रिय रहे आपका चिंतन सागर तरह गहरा, अम्बर की तरह ऊँचा रहा है। गंगा की तरह निर्मल रहा है। आप स्थितप्रज्ञ, प्रज्ञाधारी प्रतिज्ञाधारी श्रम के पुजारी हैं। अहिंसा के उत्तंग शिखर गुरु महाश्रमण को वंदन करती हुई इस अवसर पर जन्मोत्सव, पटोत्सव, युगप्रधान का वर्धापन करती हूँ, आपका समग्र जीवन पंचाचार का महासागर है।

साध्वी सम्यक्त्वयशाजी ने महाश्रमण अष्टकम के साथ कार्यक्रम का मंगलाचरण किया और गीतिका प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में वाशी के सेक्टर १४ नगरसेवक प्रकाश मोरे ने अपने विचार रखे। उपासक रतन सिंयाल सुधांशु चंडालिया, सुशील मेड़तवाल एवं निर्मला चंडालिया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

वाशी सभा अध्यक्ष सुरेश बाफना ने अपने विचार रखे। पूर्व सभा अध्यक्ष संपत बागरेचा, सभा कोषाध्यक्ष राजेश बम्ब, तेयुप अध्यक्ष नितेश बाफना, मंत्री तरुण डागलिया, राजू कावड़िया, प्रवीण चोरड़िया, महावीर सोनी एवं सभा परिषद के सदस्यों का सहयोग रहा।

वाशी ज्ञानशाला की बहनों ने गीतिका प्रस्तुत की एवं कन्या मंडल प्रभारी रेखा कोठारी एवं संयोजिका इतांशी बम्ब सह-संयोजिका धृति खाटेड़, चिकित्सा चंडालिया, जिया बाफना, धृति चपलोत, वित्ति डागलिया,इशिता सुराणा ने स्वप्न प्रतियोगिता रोचक एक्ट प्रस्तुत किया। महिला मंडल ने गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी सारदाप्रभाजी ने संयोजन किया।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

ईरोड।

साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी ने मंगलभावना के अवसर पर कहा कि अध्यात्म का मूर्त रूप हैं–साधु-साध्वी। साधु-साध्वियों का जहाँ विचरण होता है, वहाँ अध्यात्म की प्रेरणा देते हैं। क्योंकि व्यक्ति-व्यक्ति में अनेक संभावनाएँ हैं, साधु-साध्वियों के प्रवास से अध्यात्म का वातावरण बनता है।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि अध्यात्म के ऊर्ध्वारोहण में सुनना और जागरूक रहना, ये दोनों ही अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। साध्वी प्रबोधयशाजी ने कहा कि अगर व्यक्ति निरंतर प्रयास करता है तो सफलता को प्राप्त कर लेता है। साध्वी सन्मतिप्रभाजी ने कहा कि साधु-साध्वियों की सन्निधि, अनेक-अनेक समस्याओं को समागत कर देती है।

कार्यक्रम का प्रारंभ भारती डागा के सुमधुर गीत के साथ हुआ। सभा अध्यक्ष हीरालाल चौपड़ा, महिला मंडल की अध्यक्षा सुनीता भंडारी, युवक परिषद अध्यक्ष सुभाष बैद, सुरेंद्र भंडारी, विजयसिंह पारख, वीणा भूतोड़िया, बबिता पटावरी, दीपिका फुलफगर, हार्दिक, ऋषभ पटावरी, सेलम से केवलचंद बोहरा, महिला मंडल की सामुहिक गीतिका आदि द्वारा अपने मनोगत प्रकट करते हुए साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

कार्यक्रम का संचालन मंजु बोथरा ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के १३वें पट्टोत्सव का आयोजन

भुवनेश्वर, उड़ीसा।

डॉ० मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी व मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा द्वारा कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर डॉ० मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि आठ मणि संपदा से संपन्न होते हैं वे ही आचार्य होते हैं। तेरापंथ में एक आचार्य की परंपरा है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में महाश्रमण मुनि मुदित कुमार का चयन किया। आज वे आचार्यश्री महाश्रमण के रूप में अपनी जिम्मेदारी का बखूबी निर्वाह कर रहे हैं। उनके १३वें पट्टोत्सव पर उनके स्वस्थ दीर्घायु जीवन की मंगलकामना करते हैं।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जैसे एक दीपक सौ दीपकों को प्रदीप्त कर देता है वैसे ही एक आचार्य सैकड़ों-हजारों लोगों की चेतना को प्रकाशित कर देते हैं।

इस अवसर पर डॉ० मुनि विमलेश कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी का दृष्टिकोण दूरदर्शी व विशाल है। आचार्यश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी दोनों का एक रूप है–आचार्यश्री महाश्रमणजी। इस अवसर पर मुनि पदम कुमार जी ने कहा कि अनेक विशेषताओं के समवाय हैं–आचार्यश्री महाश्रमण। मुनि कुणाल कुमार जी व मुनिवृंद ने समुह गीत का संगान किया। आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बच्छराज बेताला ने व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का ४९वाँ दीक्षा दिवस

भुवनेश्वर।

तेयुप द्वारा डॉ० मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी एवं मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया उपस्थित थे।

इस अवसर पर डॉ० मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि जीवन वही काम्य है जो संयममय हो, असंयमी जीवन बंधन की ओर ले जाता है और संयमी जीवन मुक्ति की ओर।

मुनि जिनेश कुमार जी ने इस अवसर पर कहा कि तीन प्रकार की आँखें होती हैं–चमड़े की, बुद्धि की व हृदय की। जब चमड़े की आँख खुली है तब उठना कहते हैं, जब बुद्धि की आँख खुलती है तब समझना कहते हैं और हृदय की आँख खुलती हैं तब जगना कहते हैं। जगने का नाम है–दीक्षा। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मात्र १२ वर्ष की उम्र में दीक्षा स्वीकार की। आचार्यश्री महाश्रमण भारतीय ऋषि परंपरा के जीते जागते उदाहरण हैं।

मुनि कुणाल कुमार जी ने महाश्रमण अष्टकम् का संगान किया। मुनि कुणाल कुमार जी ने अपने विचार एवं मंगलभावना प्रकट की।

ज्ञानशाला के बच्चों ने लघु नाटिका प्रस्तुत की। स्वागत वक्तव्य तेयुप अध्यक्ष विवेक बेताला ने दिया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा अध्यक्ष बच्छराज बेताला, तेममं अध्यक्ष मधु गीड़िया, ललिता सुराणा आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन संयोजक जितेंद्र ने किया।

कार्यशाला का आयोजन

बारडोली।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कोर्स अंतर्गत कार्यशाला का आयोजन गतिमान है। जिसके अंतर्गत राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता की गृह परिषद, बारडोली में कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कोर्स के राष्ट्रीय सहप्रभारी कुलदीप कोठारी का स्वागत किया गया।

उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि सीपीएस अंतर्गत आप वक्तृत्व कला में निपुण बनकर नई दिशा और दशा प्राप्त कर सकते हैं। सीपीएस हमारे जीवन के लिए बहुमूल्य है।

ट्रेनर विनीत सिंघी, मुंबई द्वारा उत्कृष्ट एवं श्रेष्ठ प्रशिक्षण दिया गया एवं तेयुप, बारडोली के अध्यक्ष साहिल बाफना, मंत्री रोनक सरणोत द्वारा मोमेंटो से विनीत सिंघवी का सम्मान किया गया।

श्रावक सम्मेलन का आयोजन

वाशी।

शासनश्री साध्वी कैलाशवती जी, सहवर्तीनी साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में एक शाम महाप्रज्ञ के नाम एवं श्रावक सम्मेलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। मंगलाचरण तेमम द्वारा किया गया। स्वागत वक्तव्य तेयुप अध्यक्ष नितेश बाफना ने किया। गायिका दिव्या बोलिया तथा नवीन गोखरू खारघर द्वारा संगीतमय प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में तेरापंथ महासभा प्रभारी दिनेश सुतरिया, तेरापंथ सभा, मुंबई, वरिष्ठ उपाध्यक्ष कमलेश बोहरा, तेममं, मुंबई अध्यक्ष रचना हिरण, तेरापंथ सभा, मुंबई कार्यकारिणी सदस्य पंकज चंडालिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी सम्यक्त्वयशाजी, जैनम ग्रुप एवं तेयुप कोपरखैरने द्वारा गीत की प्रस्तुति दी। कविता पदम कावड़िया ने प्रस्तुति दी। साध्वी पंकजश्री जी ने कहा कि नवी मुंबई से विशेष संघ के रूप में ज्यादा-से-ज्यादा संख्या में गुरुदेव के दर्शन करके वाशी में मर्यादा महोत्सव के लिए निवेदन किया जाना चाहिए।

साध्वी शारदाप्रभाजी ने चातुर्मास को कैसे सफल बनाया जाए पर अपना उद्बोधन दिया। कार्यक्रम के मुख्य प्रायोजक महेंद्र कुमार अशोक कुमार बड़ौला एवं वर्दीचंद विनोद कुमार राकेश कुमार नीरज कुमार बम्ब, गायक दिव्या बोलिया, गायक नवीन गोखरू का तेरापंथ समाज, वाशी द्वारा स्वागत किया गया। कार्यक्रम में पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे। लगभग ३५० श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

आभार ज्ञापन सभा, वाशी मंत्री अशोक बड़ोला ने किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप पूर्व अध्यक्ष रंजीत खाटेड़ ने किया।

शिशु संस्कार बोध कार्यक्रम संपन्न

भुवनेश्वर।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला, भुवनेश्वर का शिशु संस्कार बोध कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथी सभा द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। इस अवसर पर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, पंचमंडल सदस्य भंवरलाल बैद, पारमार्थिक शिक्षण संस्था के कोषाध्यक्ष जसराज बुरड़ आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि व्यक्ति की पहचान धन, दौलत, वैभव, वस्त्र से नहीं होती, व्यक्ति की पहचान संस्कार से होती है। संस्कार हमारे जीवन का धन है, सुरक्षा कवच है, जीवन की धरोहर है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि बालक समाज की कृति है। आज का बच्चा कल का बादशाह है। बच्चों को संस्कारी बनाना, माता-पिता व अभिभावकों का नैतिक कर्तव्य है।

तेरापंथ सभा, ज्ञानशाला प्रभारी, प्रशिक्षक लोग अपने नैतिक दायित्व का अच्छी तरह से निर्वहन करते रहे हैं। महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने कहा कि संस्कार निर्माण के लिए ज्ञानशाला से सुंदर कोई प्रकल्प हो नहीं सकता। महासभा ज्ञानशाला के विकास के लिए सदैव तत्पर है। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। ज्ञानशाला के बच्चों ने ज्ञानशाला गीत व शब्द चित्र कार्यक्रम प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष बच्छराज बेताला, ज्ञानशाला संयोजिका नयनतारा सुखाणी ने अपने विचार व्यक्त किए आभार ज्ञापन ज्ञानशाला प्रभारी जितेंद्र बैद व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। शिशु संस्कार बोध पाठ्यक्रम परीक्षाओं के परिणाम नयनतारा सुखाणी ने घोषित किए। सभा द्वारा बच्चों व प्रशिक्षकों का सम्मान किया गया।

तप अभिनंदन कार्यक्रम

सेलम।

तेरापंथी सभा द्वारा वर्षीतप की तपस्या के आराधक उच्चब नाहर, सुशीला डूंगरवाल, पुष्पा बाफना, शर्मिला आंचलिया व संदीप संचेती का अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ युवक परिषद द्वारा मंगलाचरण से हुआ। सभा उपाध्यक्ष मनोज सिंघवी ने सभी का स्वागत किया। महिला मंडल अध्यक्ष सुनीता बोहरा ने सभी तपस्वियों के तप की गीतिका व वक्तव्य द्वारा अनुमोदना की। ट्रस्ट चेयरमैन वीरेंद्र सेठिया एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने तपस्वियों का अभिनंदन किया।

महिला मंडल, तेयुप द्वारा गीतिका, कविता आदि की प्रस्तुति दी गई। सभा प्रचार-प्रसार मंत्री नितेश फुलफगर, विनय भूतोड़िया सहित अनेक सदस्यों ने मंगलकामना प्रेषित की। अभातेममं राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया, सभा, ट्रस्ट, महिला मंडल एवं तेयुप के वरिष्ठ पदाधिकारियों द्वारा तपस्वियों का सम्मान किया गया। सभा के उपमंत्री प्रशांत लुंकड़ ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

दिल्ली।

विजय कुमार प्रवीण गोलछा के नूतन कार्यालय का शुभारंभ संस्कारक प्रवीण गोलछा ने मंगल मंत्रोच्चार व विधिवत रूप से जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित करवाया।

नमस्कार महामंत्र व भगवान महावीर स्वामी की स्तुति के साथ कार्यक्रम का आगाज किया गया।

नूतन गृह प्रवेश

दिल्ली।

पारसमल तातेड़ आडसर निवासी, दिल्ली प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुभाष दुगड़, संजय संचेती ने संपूर्ण विधि-विधान से संपन्न करवाया।

दिल्ली तेयुप की तरफ से तातेड़ परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन गृह प्रवेश

दिल्ली।

राजगढ़ निवासी, दिल्ली प्रवासी श्रेयांस बेगवानी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक सौरभ आंचलिया, विकास सुराणा ने सानंद संपन्न करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से आभार किया गया। इस अवसर पर साध्वी डॉ० शुभप्रभाजी का सान्निध्य बेगवानी परिवार को मिला।

नूतन गृह प्रवेश

सूरत।

रामसिंह का गुड़ा निवासी, सूरत प्रवासी गौतमचंद गादिया के सुपुत्र नितेश कुमार गादिया का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू, मीठालाल भोगर ने संपन्न करवाया।

गौतम, कमलेश व उनके सभी परिजनों ने जैन संस्कार विधि का प्रशंसा करते हुए सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत से उपाध्यक्ष अमित सेठिया, निशांत बैद व नमन मेड़तवाल ने आभार मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

सूरत।

शिवपुर निवासी, सूरत प्रवासी रमेश कुमार श्रीमाल के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू व हिम्मत बम्ब ने संपन्न करवाया।

कार्यक्रम के संपादन में तेजु भाई मांडोत की विशेष प्रेरणा रही। रमेश कुमार व उनके परिवार ने संस्कारकों व सभी पारिवारिकजनों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नामकरण संस्कार

जयपुर।

सुरभि-अरिहंत कोठारी के जुड़वा सुपुत्रों का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक राजेंद्र बांठिया एवं संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने विधि-विधानपूर्वक कार्यक्रम संपन्न करवाया।

तेयुप के संगठन मंत्री प्रवीण जैन, कार्यसमिति सदस्य एवं नवमनोनीत संस्कारक सौरभ जैन व तरुण बोथरा सहित समाज के अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे। तेयुप की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

पाणिग्रहण संस्कार

साउथ-कोलकाता।

गंगाशहर निवासी, कोलकाता प्रवासी विनोद-कविता सुराणा के सुपुत्र श्रेयांस एवं लाडनूं निवासी, दुर्गापुर प्रवासी कांतिचंद-कुसुमलता बोरड़ की सुपुत्री सौभाग्यवती चंद्रकांता का विवाह जैन संस्कार विधि से हुआ। जैन संस्कार विधि के प्रशिक्षक, उपासक एवं अभातेयुप संस्कारक डालिमचंद नौलखा सहित ११ और संस्कारक सम्मिलित हुए।

तेयुप के मंत्री रोहित दुगड़ द्वारा परिवारजनों का आभार ज्ञापन किया। भीखमचंद पुगलिया ने परिवारजनों की ओर से सभी संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया।

विवाह संस्कार

सरदारपुरा।

जेठमल बुरड़ के पुत्र के अवसान के पश्चात पुत्रवधु खुशबू का विवाह हीराचंद बागरेचा के पुत्र संदीप बागरेचा के साथ अजित कॉलोनी स्थित कुंथुनाथ जैन मंदिर में संपन्न कराया गया।

मुख्य संस्कारक मर्यादा कुमार जोठारी ने सहयोगी संस्कारक जितेंद्र गोगड़, निर्मल छल्लानी के साथ मिलकर जैन मंत्रोच्चार के द्वारा विवाह संस्कार संपन्न करवाया। तेयुप अध्यक्ष महावीर चौधरी ने अपने विचार व्यक्त किए। जैन संस्कार विधि के निवर्तमान राष्ट्रीय प्रभारी एवं अभातेयुप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी ने जैन संस्कार विधि के महत्त्व को बताया। मर्यादा कुमार कोठारी ने दोनों परिवारों के प्रति आभार जताया।

✦ *पत्नी, पुत्र और पैसे की प्राप्ति तो एक पापी को भी हो सकती है, किंतु सत्संग और धर्मकथा-श्रवण का अवसर दुर्लभ होता है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के अवसर पर काव्यांजलियाँ

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी जन्मभूमि सरदारशहर में अपने जीवन के ६ दशक संपन्न कर सातवें दशक में प्रवेश कर रहे हैं। इस अवसर पर चतुर्विध धर्मसंघ द्वारा पूज्यप्रवर को युगप्रधान अलंकरण प्रदान किया जा रहा है। तेरापंथ धर्मसंघ सौभाग्यशाली है कि इसे निरंतर तीन युगप्रधान आचार्यों की प्रगतिशील अनुशासना प्राप्त हुई, हो रही है। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की षष्टिपूर्ति के अवसर को लक्ष्य बनाकर शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने प्रेरणा प्रदान की थी कि साधु-साध्वियों की ओर से एक काव्यांजलि उपहृत की जानी चाहिए। उनकी इस प्रेरणा को सम्मुख रखकर अनेक साधु-साध्वियों ने काव्य रचना की। सरदारशहर में उपस्थित चारित्रात्माओं के कविताओं-गीतों का संकलन हस्तलिखित पत्रिका 'काव्यांजलि' में किया गया है।

● शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ●

मनोनयन दिन आज तुम्हारा, गीत वधाई के हम गाएं।
उजले-उजले भाव हृदय के बन्दनवार सजाकर लाएं।।

तुलसी-महाप्रज्ञ का तुम में बोल रहा विश्वास प्रबल है,
शुभ सौगात समर्पण की लो आस्था का अनुबंध अटल है।
पौरुष की ले नाव नापना अब असीम सागर का तल है,
करो कठिनतम कार्य आर्य! अक्षत अविकल अविचल भुजबल है।
प्रबल प्रेरणा भरती जाए नई पुरानी सब रचनाएं।।

उषाकाल-सी लिए ताजगी कदम-कदम तुम बढ़ते जाओ,
चरणों में नवस्फूर्ति लिए अब हिमगिरि पर तुम-चढ़ते जाओ।
झेल चुनौति साहस से इतिहास सदा तुम गढ़ते जाओ,
आत्मा की पोथी यह अभिनव जीवनभर तुम पढ़ते जाओ।
मंगल गाती आज तुम्हारे नभ की ये उन्मुक्त दिशाएं।।

खिलो फूल बनकर तुम ऐसे नहीं कभी जो फिर मुरझाए,
जलो दीप बनकर तुम ऐसे नहीं कभी जो बुझने पाए।
मुस्काओ मधुमास खास बन नहीं कभी आकर जो जाए,
बरसो बनकर मेघ धरा पर पुनः कभी जो ना तरसाए।
आस-पास नित बहे तुम्हारे आर्य! सफलता की सरिताएं।।

● साध्वी जिनप्रभा ●

युग की नब्ज पकड़कर जिसने युगधारा को पहचाना।
जन सेवा में अर्पित सांसें युगाधार तुमको माना।।

वज्रमयी संकल्प लिए तुम पहुंचे ढ़ाणी गांव नगर
श्रम के धाराधर से सिंचित ऋणी बना धरती अंबर
नए बीज बो रहे निरंतर कण-कण में अंजलि भर-भर
नूतन फसलों की सौरभ लेने मंडराते हैं मधुकर
देख रहा जग विस्मित होकर बंजर भू का सरसाना।।

शांतिदूत तुम किंतु शांति में छिपी क्रांति की चिनगारी
मुस्कानों के नाजुक धागों से बंधती दुनिया सारी
जोड़ रहे आगम सुक्तों से दिल से दिल की इकतारी
करुणा का संसार बसाने आए बनकर अवतारी
युगप्रधान युग पुरुष तुम्हारा जगत बना है दीवाना।।

समय प्रबंधन की स्याही से जीवन का हर पृष्ठ भरा
जागृत वर विवेक से रहता अधरों पर सच का पहरा
आत्म दीप जल रहा निरंतर मानो रवि का रथ उतरा
कुदरत खुद ही चकित तुम्हारा नूर सलौना जो संवरा
महाप्राण जग की आस्था ने भगवत् रूप तुम्हें ही जाना।।

● मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ●

युगद्रष्टा युगस्रष्टा प्रभुवर संघ चतुष्टय आज बधाएं।
युगप्रधान अभिषेक पर्व पर अर्पित है शुभ भाव ऋचाएं।।

शांत सौम्य मनहर मुखमुद्रा शरणागत की पीड़ा हरती
करुणा से आप्लावित वाणी जन-जन को आकर्षित करती
परहित पर-उपकार निरत इस तेजपुंज को शीष झुकाएं।।

जैन जगत के शारद शशधर आगम अमृतपान कराते
ज्ञानसिंधु में हो अवगाहन पुण्य प्रेरणा दीप जलाते
नव- उन्मेषी प्रवचन शैली उलझी हर गुत्थि सुलझाए।।

अष्ट सम्पदा के स्वामी हो वचन संपदा अति बलवान
परिवर्धन परिवर्तन हित नव राह दिखाते हो मतिमान
शक्तिसुमेरु! दो आशीर्वर अपनी सोई शक्ति जगाएं।।

षष्टिपूर्ति का अवसर पावन शतकपूर्ति हो मंगलभाव
मोक्षमार्ग को सुगम बनाने गण - गणपति है सक्षम नाव
युग-युग तक पाए पथदर्शन खुले प्रगति की नई दिशाएं।।

● साध्वी कल्पलता ●

गण आंगन में आज दिवाली।
युगप्रधान उत्सव मनभावन,
हर मन में नूतन खुशहाली।।
युगप्रधान सम्मान सुपावन
शासन माता का अरमान
स्वर्ण जयंती के अवसर पर
पाया प्रभु से यह वरदान।
युगों-युगों तक रहे गूंजती
गण-गौरव की यश गाथाएं
आत्मजयी विजयी युगनायक
सभी दिशाएं आज बधाएं
कदम-कदम पर दीप जलाकर
शम सम श्रम से सदी उजाली।।

नयन युगल से प्रभो अनाविल,
वत्सलता का झरना बहता।
कोमल-कर ये कल्पवृक्ष हैं,
इप्सित वर रीता मन भरता।
ज्योतिर्मय बन इन चरणों ने,
अनगिन नैय्या पार उतारी।
बरगद सा आशीर्वर देकर,
उजड़ी उखड़ी सांस संवारी।
गण धरती को रहो पिलाते,
संस्कारों की अमृत प्याली।।

● साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा ●

युगों युगों तक राज करो हे महाश्रमण! महावरदानी।
युगप्रधान युग के वरदानी तेरा शासन है अवदानी।।

सफल अहिंसा यात्रा है यह हृदय-हृदय में गूंजे नारा।
मानव मन के अमन चैन में बोल रहा कर्तृत्व तुम्हारा।
मानव मंगल को अर्पित था साधिक सात वर्ष का हर दिन।
पदचिन्हों को पूज रहे हैं पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण।
तीन देश बीस राज्यों में सजी प्रतिज्ञात्रयी सुहानी।।

गुरुद्वय जन्मसदी अवसर पर आस्थासिक्त अर्घ्य का अर्पण।
सौ दीक्षा वाङ्मय सम्पादन अभिनव आयामों का वर्षण।
अपने अमृत महोत्सव पर निष्ठा पंचामृत पान कराया।
साध्वीप्रमुखा अमृत महोत्सव शासनमाता को विरुदाया।
उत्सवमय है तेरा शासन गण विकास की खिली जवानी।।

जैन आगमों का सम्पादन चले अनवरत महायज्ञ है।
प्रज्ञामय नेतृत्व करे अब महाश्रमण ही महाप्रज है।
जिनशासन के प्रबल प्रभावक आशाओं का भव्य महल है।
संवत्सरी एकता की यह अनुपम अनुकरणीय पहल है।
सम्मुख 'जैनम जयतु शासनम्' शुभ भविष्य की नई निशानी।।

सजता है दरबार स्वतः जब आते परिषद्त्रय दरबारी।
दिखलाती है भव्य नजारा सायं सामायिक शनिवारी।
इह भव पर भव मंगल करती सुखद सुमंगल गहन साधना।
भावी बहुश्रुत निर्मित करती महाप्रज्ञ वर श्रुताराधना।
अनगिन हैं अवदान तुम्हारे कैसे कहो कहूं कहानी।।

● साध्वी निर्मलयशा ●

हे महामनस्वी! महायशस्वी! महातेजस्वी!
महिमामंडित! महावर्चस्वी! महाओजस्वी!
हे शांतिदूत! हे तपःपूत! हे महातपस्वी!
हे नेमानंदन! शत शत वंदन
युगप्रधान करते अभिनंदन।।
झूमरकुल का राजदुलारा
लाखों नयनों का ध्रुवतारा
असहायों का सबल सहारा
झंकृत प्राणों के नव स्पंदन
युगप्रधान! करते अभिनंदन।।
वाणी में करुणा रस झरता
जन-जन की पीड़ा को हरता
शरणागत भव सागर तरता
चेतन बन जाता है कुंदन
युगप्रधान! करते अभिनंदन।।
दिव्य दिवाकर पुण्य प्रभाकर
गुण रत्नाकर ज्ञान सुधाकर
धन्य बने तव करुणा पाकर
कण-कण में छाए नव पुलकन
युगप्रधान! करते अभिनंदन।।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के अवसर पर काव्यांजलियाँ

● मुख्यमुनि मुनि महावीर कुमार ●

सदा जय हो, सर्वदा विजय हो।
जयतु युगद्रष्टा प्रभु, जयतु युगस्रष्टा।।

शान्तिदूत तपः पुत शुभ तेरी साधना।
नेमासपूत शुद्ध संयम आराधना।
संकट-भय की स्थितियों में भी रहते निर्भय हो।।

ज्ञानवान क्षमावान करुणा निधान हो।
मेरे भगवान जैन शासन की शान हो।
शिष्य तुम्हारी गरिमा महिमा गाएं लयमय हो।।

जन्म, दीक्षा, पदारोहण पर्व सुखदाई।
मानों वैशाख साख तुमने बढ़ाई।
षष्टिपूर्ति जन्मधरा पर ध्याएं तन्मय हो।।
युगप्रधान को जन्मधरा पर ध्याएं तन्मय हो।।

लय - तुम्हें वन्दना---

● मुनि वर्धमान ●

जिनशासन को सरसाया रे, युगप्रधान गुरुदेव,
अंतर का दीप जलाया रे, ज्योतिर्मय गुरुदेव,
गण को शिखर चढ़ाया रे, महाश्रमण गुरुदेव।

नेमा का लाल दुलारा,
लाखों लोगों को तारा,
सरदारशहर चमकाया रे,
युगप्रधान गुरुदेव।।

योगी जैसी है सूरत
निश्छल बालक-सी मूरत
निर्मल गंगा-सी काया रे
युगप्रधान गुरुदेव।।

अगणित गुण गरिमाधारी,
हो वीतराग अवतारी,
जन-जन ने शीश नमाया रे,
युगप्रधान गुरुदेव।।

जीने की कला निराली,
चिहुं दिशि रहती खुशहाली,
उपशम की शीतल छाया रे,
युगप्रधान गुरुदेव।।

जनकल्याणी यात्रा कर,
उपकार किया दुनिया पर,
नित करुणा रस बस्साया रे,
युगप्रधान गुरुदेव।।

तुम हर क्षण मेरे अंदर,
आस्था के महासमंदर,
समता का स्रोत बहाया रे,
युगप्रधान गुरुदेव।।

लय : दीपा वाले नंद---

● मुनि दिनेश कुमार ●
● मुनि योगेश कुमार ●

महामहिम श्री महाश्रमण की मूरत मंगलदायी है।
योगीश्वर श्री ज्योतिचरण की चरण-शरण सुखदायी है।।

तेजस्वी संन्यास देव का सदा विजय वरते प्रभुवर,
ओजस्वी वाणी कल्याणी दुख-दुविधा हरते विभुवर,
वर्चस्वी प्रभु महाप्रतापी कृपादृष्टि करते सब पर,
महायशस्वी जिनशासन, भैक्षवशासन-शेखर गुरुवर,
षष्टिपूर्ति जन्म-धरती पर जन्म जयन्ती आई है।

विश्व-विश्वमैत्री-संगायक विघ्न विनायक महाश्रमण,
युगप्रधान गुरु भाग्य विधायक शांतिप्रदायक महाश्रमण,
आगम अनुसंधायक, व्याख्यापक सुखदायक महाश्रमण,
हे युगनायक युग निर्मायक जग-उन्नायक महाश्रमण,
ज्योतिपुंज श्री संत शिरोमणि सद्गुरु त्रिभुवन त्रायी है।।

'जय जय नन्दा जय जय भद्दा' मंगलध्वनि से वर्धापन,
विश्व बन्धु हो, कृपा सिन्धु हो गुरु चरणों अर्पित जीवन,
मानवता के महामसीहा धरती का मेटो क्रन्दन,
यूक्रेन रूस सभी देशों को अमन चैन का दो चिंतन,
सतत साधना से बन पाए वाणी कर वरदायी है।

● मुनि नमन ●

युगप्रधान तेरी स्तवना में, किन भावों का साज सजाऊं।
पास न मेरे शब्दकोष है, किन शब्दों से तुम्हें बधाऊं।।

मैं अबोध बालक प्रभु तेरा, तुम मेरे जीवन के प्राण,
मेरी हर हलचल में तेरी, करुणादृष्टि ही बनती त्राण।
तेरे अनगिन उपकारों को, सीमित क्षण में कैसे गाऊं।।

पास न मेरे कुंकुम केसर, नहीं रत्न से मंडितपाल,
नहीं दीप की बाती सुन्दर, नहीं फूल से सज्जित थाल।
भक्ति पूरित उपकारों में, निज सासों का अर्घ्य चढ़ाऊं।।

भाग्य विधाता प्रभु तेरी ही शरण सदा हरती बाधाएं,
इच्छित मंजिल को पाने का देती साहस और ऋचाएं।
शरण बनी जो आश्रय मेरी मैं उसमें ही रमता जाऊं।।

● मुनि पार्श्व ●

गणपति श्री महाश्रमण जय हो
युग के नायक युगपुरुष जय हो
तुझको ध्याएं हम - ध्याएं हम - ध्याएं हम हे महाश्रमण।।

गुण के तुम सागर कितने गुण गाऊं
गुनगुनाते गुण गणी के भव से तर जाऊं।।

क्या प्रभु मांगू तू ही जग सारा
धन्य हूं पाकर तुम्हें प्रभु धन्य जग सारा।।

धूप आए तो छांह बन जाना
मुश्किलों की हर घड़ी में राह दिखलाना।।

करुणा निर्झर तुम करुणा बरसाओ
कर में लेकर कर हमारा शिखर पहुंचाओ।।

● मुनि अक्षयप्रकाश ●

हे युगद्रष्टा! युगप्रधान तव चरणों में रम जाऊं।
वत्सलता पूरित नयनों से शुभाशीष मैं पाऊं।।

गणसेवक गादी का चाकर बना रहूं मैं संघ पुजारी,
गुरु इंगित आराधन करके खिले सदा जीवन फुलवारी,
चएज्ज देहं न हु धम्मसासणं पल-पल में मैं ध्याऊं।।

संयम सौरभ से सुरभित यह मिला भिक्षु गण उपवन,
महाश्रमण की सुखद शासना मृदु अनुशासित शासन,
अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो रोम- रोम से गाऊं।।

ध्यान योगी स्वाध्यायी प्रभु पापभीरू वैरागी,
महातपस्वी मितभाषी है आध्यात्मिक अनुरागी
समयं गोयम! मा पमायए जीवन मंत्र बनाऊं।।

● मुनि रजनीश ●

गुरुवर को आज बधाएं।
युगप्रधान षष्टिपूर्ति का मंगल तिलक लगाएं।

जन्मभूमि सरदारशहर में संयम अपनाया
गुरु तुलसी की कृपा दृष्टि से महाश्रमण पद पाया
महाप्रज्ञ के पटधर बनकर, जन-जन मन को भाए।।

तीन देश की अहिंसा यात्रा, नव इतिहास रचाया
नशामुक्ति, सद्भाव, नैतिकता का संकल्प दिराया
शहर-नगर और गांव सभी में जय महाश्रमण यश गाएं।।

मनमोहक मुख मुद्रा तेरी सब के मन को लुभाती
तेज सूर्य सा आभामण्डल, नई रोशनी लाती
शशि सम उज्ज्वल मुख है तेरा शीतलता बरसाएं।।

तेरी अमृतवाणी द्वारा जन जीवन बदलेगा
तेरी कृपा पाकर, गिरता मानव संभलेगा
तेरे पावन चरणों में हम उन्नति करते जाएं।।

अंतरंग व्यक्तित्व अगम्य है कैसे हम बतलाएं
कर्तृत्व कुशलता से मानवता में नव उन्मेष जगाएं
आकर्षक नेतृत्व प्रभु का गणवन को विकसाए।।

लय : संयममय जीवन हो

● मुनि जितेन्द्र ●

युगप्रणेता, युगप्रचेता, युगप्रवर्तक, युगप्रधान,
पारखी इस कर्मयुग के, सारथी जिनपथ महान।।
युगबोध जो तुमने दिया, वह दे रहा जग को निदान
जगत्गुरु जगदीश जग के, जगत की थामों कमान।।

अर्हतों के परम प्रतिनिधि, तेरापंथ महामना
श्री सुधर्म स्वामी का आसन सुशोभित शतगुणा
वीर भिक्षु तुलसी व महाप्रज्ञ पट वर्धापना
युगों-युगों अनुशासना दो, करें हम सब प्रार्थना।।

✦ *किसी भी जाति, वर्ग, संप्रदाय का व्यक्ति हो, यहाँ तक कि नास्तिक भी क्यों न हो, अणुव्रत का द्वार सबके लिए खुला है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के अवसर पर काव्यांजलियाँ

● मुनि आकाश ●

जन्मभूमि से गौरव पाते
लोग अनेकों देखे जाते
जन्मभूमि को पुजा सकें
वे विरले ही होते हैं।।

नन्हे से जो कदम धरे थे
प्रतिस्रोत के पथ पर तुमने
देखो बनकर उभरे हैं वो
दिव्य तेजोमय ज्योतिचरण।।

'मोहन' से मोहित है दुनिया
मुदित वदन 'मुदित' को देख
प्रेम से अभिभूत 'श्रमण' से
महानतम 'महाश्रमण' विशेष।।

अनुपमेय आदर्श तुम्हारा
पावनता की शुभ मूरत हो
देव शिल्पी आश्चर्यचकित है
बोलो! किस कलाकार कृत हो।।

नयन नयनाभिराम हैं लगते
मोहकता मुस्कानों से
नयना निरख-निरख है हर्षित
उपकृत जग अवदानों से।।

इक झलक को तरसे लाखों
जैकारा से तृप्त अनेकों
चरण नमन से कार्य सिद्ध है
एक बार तो करके देखो।।

उपमाएं उपमित है तुमसे
विभूतियां विभूषित हो गई
पद से कद बड़ा है तेरा
अभिषेक स्वयं अभिषिक्त हो गया।।

ओ! युगप्रधान गुरुदेव तुम्हारी
कैसे अर्चा हम कर पाएं
हम जुगनू तुम महासूर्य हो
कोटि कोटि निज भाग्य सराएं ।।

● मुनि पुनीत ●

गाएं गाएं हम गाएं, युगनायक गाथा गाएं।
युगद्रष्टा गुरूवर पाकर, हम अपने भाग्य सराएं।।

नफरत फैली दिलों में, हिंसा का घोर अन्धेरा।
जन-जन का व्याकुल मन था, तुम लाए नया सवेरा।
की सुखद अहिंसा यात्रा, लाखों-लाखों हर्षाएं।।

श्रममय जीवन विभुवर का, क्षण-क्षण को सफल बनाते
समता, आर्जव, मार्दव से, प्रभु पुण्य पुरुष कहलाते।
पावन पदचिन्ह तुम्हारे, हम भी उन पर चल पाएं।।

गुरुवर क्या जादूगर हो, या कोई दिव्य फरिश्ता
जो भी चरणों में आता, गहरा हो जाता रिश्ता।
युग-युग हम युगप्रधान के, अनुशासन में सुख पाएं।।

लय - ए मेरे वतन---

● मुनि नम्र ●

युग के व्याप्त तिमिर को हरने
महाश्रमण धरती पर आया।।

जब-जब होता ह्रास धर्म का,
इस भारत की पुण्य धरा पर,
तब-तब कोई महापुरुष भी,
उतरा है इस वसुंधरा पर,
शांति का संदेश शुभंकर,
पद यात्रा कर उसे सुनाया।
महाश्रमण इस धरती पर आया।।

हरने मानव मन की पीड़ा
महावीर तुम बनकर आए,
जन-जन के दुर्गुण विष पीकर
शिव शंकर भी तुम कहलाए,
लाखों का संताप मिटाते
कल्पवृक्ष सी तेरी छाया
महाश्रमण धरती पर आया।।

कोरोना के दुष्प्रभाव ने
जन-जन को आक्रान्त किया
शांतिदूत ने शांतिमंत्र दे
भयाक्रान्त को शांत किया
आध्यात्मिक संपोषण पाकर
मुरझा दिल फिर से मुस्काया।।
महाश्रमण इस धरती पर आया।।

● मुनि अनुशासन ●

युगप्रधान की महिमा गूंजे, देखो सकल जहान।
हर्षित प्रमुदित दसों दिशाएं, गाएं मंगल गान।
अनुपमेय तेरी गाथाएं, धरती पर भगवान।।
जय जय ज्योतिचरण, तुम्हीं तारण तरण।
है भव-भव तेरी शरण, महाश्रमण।।

पथरीली राहों में, गिरि कंदराओं में, थामें न तुमने ये चरण।
गरजती घटाओं में, झुलसती हवाओं में, मुख पर है समता का वरण।
स्वर्णाक्षर अंकित यात्राओं का इतिहास महान।
विस्मित हो सब शीश नमाएं, आस्था के आस्थान।।

दिव्य तेरा रूप है, जिनवर स्वरूप है,भरता नहीं ये मन कभी।
स्नेह का प्रपात है, मिले दिन-रात है, बाधाएं आती ना कभी।
मंगलपाठ तुम्हारा गुरुवर, ज्यों अमृत का पान।
दोनों हाथों से जीकारा, सर्व सुखों की खान।।

गुरुद्वय साकार हो, नवयुग आकार हो, तुमसे जुड़ी हर आस है।
शासना में हम बढ़ें, संघ शिखरों चढ़े, गण को समर्पित श्वास है।
मर्यादा का रूप निराला, अनुशासन पहचान।
है आचार अनुत्तर विभुवर, जिनशासन की शान।

लय : अल्लाह वारिमा---

● मुनि गौतम ●

तुम आदि व अंत के, अंत से अनंत के पारगामी
निर्लिप्त, निर्विकार, निस्पृह वीतराग पथ के अनुगामी
हे ज्योतिचरण! प्रभो मुझ मंदिर के हो स्वामी
हे युगप्रधान! तुझ अर्चा कैसे करूं प्रभु अंतर्यामी।।

तेरे चरणों में जो भी आता, जीवन को विकसाता
जिसे ढूंढता जन्मों से, उस मंजिल को है पाता
तुम ही जीवन निर्माता और तुम ही भाग्यविधाता
तेरी कृपा के साये की, क्या गाएं गौरव गाथा।।

● मुनि केशी ●

युगप्रधान के चरण युगल में, नमन करे जग सारा।
कलयुग में भी देख रहे है, सतयुग का नजारा।।

युगप्रधान
हिंसा के आतप में प्रभु ने, अनुकम्पा छतरी तानी
डगर-नगर में गूंज रही है, नहीं कोई इसकी शानी
मानव में जागे मानवता, पा करके सिंचन तुम्हारा।।

सद्भावों के संस्कारों का, घर-घर दीप जलाया है
नैतिक नीवें गहरी करके, जीवन को चमकाया है
धन्य हुए तुमको पाकर हम, तेरा सबल सहारा।।

षष्टिपूर्ति
किन शब्दों से विभुवर तुमको, तेरा नन्य शिष्य बधाए
कहो, किस लय में प्रभुवर, गुण तुम्हारे गुनगुनाएं
नभ में तारे अनगिन जैसे, अनगिन है वैशिष्ट्य तुम्हारा।।

युगप्रधान व षष्टिपूर्ति का, अनमोला यह अवसर आया
तिथि, वार, नक्षत्र, सभी शुभ, जन्मतिथि में हमने पाया
तेरी सन्निधि में हे स्वामी! तव जन्मसदी का हो उजियारा।।

● मुनि अनेकांत ●

ज्योतिर्धर की आभा जिनवर सम उणिहारी रे
युगप्रधान गुरुराज अनुकम्पा अवतारी रे।।

भावितात्म अणगार जैसे संयम पर्यव उजले,
अनासक्त निर्लिप्त अकिंचन ज्योतिचरण विरले,
मस्त फकीरी में रमते योगी अविकारी रे।।

विरत बाहरी चकाचौंध से आत्मलीन अणगार,
जीव मात्र के प्रति बहे भीतर करुणा की धार,
आनंदो में वर्षति वर्षति से इकतारी रे।।

चरणों में जो सुकून मिलता वीतराग प्रतिमान,
जन-अन का आकर्षण है वो सौम्य वदन मुस्कान,
नैना बरसे अमृत वो तो तारणहारी रे।।

लय : विरतिधर नो देश प्यारो---

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के अवसर पर काव्यांजलियाँ

● साध्वी जिनयशा ●

महितल में सुरभित है पुलकन,
युगप्रधान का है अभिनंदन।।
स्वर्णिम भोर समुज्ज्वल किरणें,
प्रक्षालन करती पुण्य चरण।
मिटा रहे हो तुम तिमिर सघन,
युगप्रधान का है अभिनंदन।।

प्रभु वाणी रसपान कराते,
नए नए इतिहास रचाते।
जन-मानस के संताप हरण,
युगप्रधान का है अभिनंदन।

कोमल किसलय सा ये जीवन,
देता मन को नव संजीवन।
फौलादी साहस मनभावन,
युगप्रधान का है अभिनंदन।।

सहज सरल आकर्षण पावन,
शासन माता का अभिवादन।
पुलकित है शासन का कण-कण,
युगप्रधान का है अभिनवन।।

● साध्वी विद्यावती (प्रथम) ●

युगप्रधान प्रभो! तुम्हें बधाएं।
मानो भगवान धरा पर आए।।

मुस्काता मनहारा चेहरा
सजगता का पल-पल पहरा,
आगम वाङ्मय ज्ञान गहरा।
करुणा की नित बहती लहरा,
जन-जन मुख-मुख मंगल गाए।।

विद्या तर्क का अद्भुत संगम
हर स्थिति में समता हरदम
मन वाणी वपु का संयम उत्तम
निशदिन चलता कठिन परिश्रम
महातपस्वी तुम कहलाए।।

अपने आपमें रहते मस्त
सत्कार्यों में हरपल व्यस्त
करते सबका मार्ग प्रशस्त
परिषहों से ना होते त्रस्त
पंचामृत का घूंट पिलाए।।

हे गणनायक धर्म धुरंधर
उन्नति पथ पर बढ़ूं निरंतर
दे दो मुझको शुभ आशीर्वर
बन जाऊं मैं अजर-अमर
गूंजे जय नारे दशों दिशाएं।।

● साध्वी ख्यातयशा ●

युगप्रधान तुम युगों-युगों तक युग को नूतन राह दिखाओ
सकल संघ है सम्मुख विभुवर आध्यात्मिक उन्मेष जगाओ।।

अधरों पर मुस्कान अनवरत, नयन युगल करुणा का निर्झर
पीर पराई सुनने खातिर, कर्ण युगल रहते हैं तत्पर
युवा शक्ति चरणों में नत है, उसको अभिनव गुर सिखलाओ।।

इन्द्रिय संयम विरल अनुत्तर, सिद्ध सभी संकल्प तुम्हारे
धन्य धन्य त्रियोग साधना, तुम जैसे पाकर रखवारे
करे सतत निर्बाध साधना, अन्तर में उत्साह जगाओ।।

सर्दी गर्मी में सम रहते अनुप्रतिकूल परीषह सहते
कहीं कभी किंचित प्रमाद हो मधुर-मधुर वचनों में कहते
सुविधावादी नहीं बनें हम वह सात्विक सदुपाय बताओ।।

भ्रम का तिमिर मिटाने खातिर, भ्रमण करे भूमि पर भास्कर
भव सागर से पार कराओ, आलम्बन तेरे सक्षम कर
श्रद्धा और समर्पण दृढ़ हो, ऐसा शक्तिपात कराओ।।

● साध्वी शारदाश्री ●

युग की रग को जो पकड़ सके,
युग पुरुष वही बन पाता है।।
युग उलझन को जो सुलझाए,
वह युग का निर्माता है।।
जिनके इंगित को जग माने,
वह युग प्रधान कहलाता है।।

श्रम बूंदों से जन-मन सींचें,
महाश्रमण वह बन पाता है।।
तप-तप करके संताप हरे,
वह महातपस्वी बन जाता है।।
करुणा छलके जिसके घट में,
करुणावतार कहलाता है।।

महायात्रा के महायायावर,
सद्भावों का उपवन महाकाया है।।
व्यसनमुक्ति का बिगुल बजाकर,
नैतिकता का मान बढ़ाया है।।
अवदान त्रयी आलोक बांटता,
युगद्रष्टा वह कहलाता है।।

● साध्वी मौलिकयशा ●

नैतिकता की अलख जगाने चरण तुम्हारे हैं गतिमान
सफल अहिंसा यात्रा तेरी देख हुआ है चकित जहान।।

संयम दाता, शक्ति पुंज प्रभु, मेरे जीवन के आधार
वत्सलता की शीतल छाया, पाकर मन उपवन गुलजार
विश्व विभूति मम अनुभूति, तुम हो जग की शक्ति महान।।

सम शम श्रम की उच्च साधना से तुम महाश्रमण कहलाए
'उवसम सारं खलु सामण्णं' मूर्त रूप तुम जन-जन मन भाए
तव उन्नत चरित्र छत्र हर तृप्त हृदय को देता त्राण।।

आकर्षक प्रवचन की शैली अन्तस् का अंधियार मिटाए
किन भावों और किन शब्दों से विभुवर तेरी महिमा गाएं
सहस्र जिह्वा बृहस्पति की, नहीं कर सकती गुरु का गुणगान।।

● साध्वी आर्षप्रभा ●

किन शब्दों में आज बधाऊं?
आर्यप्रवर के गीत गाऊं?
ज्योतिचरण आभामंडल में
ज्योतिर्मय स्वयं बन जाऊं।

जिनका जीवन है श्रमपूरित,
जिनकी वाणी है महिमामण्डित।
आकर्षित मुखमण्डल हर्षित,
उन चरणों में अर्घ्य चढ़ाऊं।।

झूमरमल नेमा के नंदन,
युगप्रधान झेलो शत् वंदन।
अभिनंदन श्रद्धामय स्पंदन,
युगपुरुष को शीष नमाऊं।।

गुरु सन्निधि पावन सुखकर,
क्षेमंकर विभु शिवकर शुभकर।
चरण कमल की धूलि बनकर,
संयम जीवन सुफल बनाऊं।।

● साध्वी सुषमाकुमारी ●

गंगा यमुना सब मुस्काए मुस्काता सारा संसार,
सागर बाहों में भरकर के करता तुमको प्यार दुलार।
अमल धवल इस कान्तमणि के विजयोत्सव पर,
प्रकृति का पल्लव-पल्लव मिल बजा रहा मधुरी झंकार।।

मानवता के इस महासिंधु का अभिनंदन करते हैं,
विश्व के जियावर कन्दील का अभिनंदन करते हैं।
सबके दिलों को दिलफरोज करने वाले ए बेनजीर,
नभ खुर्शिद और अब्र भी तुम्हारा अर्चन करते हैं।।

इन निगाहों के आइने में एक तेरी ही तस्वीर है,
झूठी महफिल में गुमशुदा जहां की तू ही तकदीर है।
तूफां में डोलती मचलती अथाह तरंगों में
इस किश्ती को थाम ले वह तूं ही नजीर है।

● साध्वी मृदुप्रभा ●

हे युगप्रधान युगनायक युग की धड़कन को पहचाना।
मानवता के महामसीहा भगवान तुम्ही को सबने माना।।

गण को सहज मिला यह अनुपम शासन माता का उपहार।
युगप्रधान संबोधन सुखकर, हर मन छाया हर्ष अपार।
विश्वक्षितिज में गूंज रहा है, महाश्रमण का दिव्य तराना।।

ज्योतिर्मय तव जीवनशैली, करती है आलोक प्रदान।
श्रम की गाथा सुन-सुन तेरी, नतमस्तक है सकल जहान।
दिग्विजयी यात्रा का जादू, रहा न कोई नर अनजाना।।

युगों-युगों तक युग को तेरी मिले सदा ही सन्निधि पावन।
भक्तिलीन सुन्दर सुमनों से सुरभित मेरा मन का आंगन।
चाह यही है एक हृदय की प्रतिपल कृपादृष्टि रखाना।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
6 - 12 जून, 2022

✦ *हमारे जीवन में आत्मबल और मनोबल का बहुत महत्त्व है। जिस व्यक्ति में आत्मबल और मनोबल नहीं होता, उसके लिए थोड़ा-सा कठिन कार्य करना भी मुश्किल हो जाता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के अवसर पर काव्यांजलियाँ

● साध्वी पुण्यप्रभा ●

उत्सव के पल आए उजले, चिंहुदिशि में खुशहाली छाई।
युगप्रधान गुरुवर लो वंदन गूंज रही मंगल शहनाई।।

तुलसी की नजरों ने परखा हीरा यह कोहिनूर,
महाप्रज्ञ आभा को पाकर चमक रहा है जग में नूर,
ऐसे गणमाली को पाकर जागी हम सबकी पुण्याई।।

राजहंस भिक्षुशासन के महिमा तेरी क्या बतलाएं,
देश-विदेशों की यात्रा कर लिख दी अनगिन नई ऋचाएं,
श्रम की धार बहा इस गण को तुमने दी अनुपम ऊंचाई।।

अत्राणों के त्राण आर्य तुम, तुम ही युग की हो तकदीर,
तुमसे पाती जनता सारी समाधान का सुंदर तीर,
कीर्तिशिखर की यशगाथाएं देती सुनाई समंदर पार।।

● साध्वी चित्रलेखा ●

करुणा का अक्षय घट थामे जन-मन को सहलाए।
अनुशासन की पुण्य ऋचाएं मधुरिम सुर में गाएं।।

तेरे नयनों में पलता है नव्य सृजन का सपना
बहे निरन्तर कलकल करता वत्सलता का झरना
मनमोहक मुस्कान अजब अपनापन खूब लुटाए।।

चंदा निशि का रवि वासर का हरते हैं अंधियारा
तेरा आभामंडल बांटे आठ पहर उजियारा
सिद्धांतों से समझौते की बात न मन को भाए।।

देश-विदेशों की धरती पर अभिनव रंग लगाया
यात्राओं का कीर्तिमान गढ़ नव इतिहास रचाया
त्रिसूत्री आयाम शुभंकर स्वस्थ समाज बनाए।।

तुलसी महाप्रज्ञ से पाया अनुभव भरा खजाना
भैक्षव गण की ऊंचाई को शिखरों तुम्हें चढ़ाना
रहो निरामय बनो चिरायु दिल अरमान सुनाएं।।

● साध्वी हिमांशुप्रभा ●

युगप्रधान अभिषेक दिवस पर प्रज्ञा दीप जलाएं।
अभिनंदन करते हम सारे प्रमुदित मन हरषाएं।।

अमृत का दरिया लहराता प्रभु के नयन युगल में,
पौरुष की गुंजित गाथाएं तेरे हस्तयुगल में,
अमृत रहे अनुशासन मंगल नंदन वन सरसाए।।

भक्ति से स्पन्दित प्राणों का कतरा-कतरा महके,
ज्ञान नेत्र का उन्मीलन हो चरण चेतना चहके,
भावों में मैत्री प्रमोद की फसलें सदा उगाएं।।

श्रेयस्कर अभिनव पथ पर प्रभु सौ-सौ सूर्य उगाएं
प्रायोगिक हो जीवन सारा स्वस्तिक नव्य ऋचाएं
नवयुग का निर्माण करें हम नचिकेता बन जाएं।

● साध्वी अखिलयशा ●

युग का अभिनंदन स्वीकारो, युगप्रधान हे महाश्रमण।
चिहुं दिशि में गूंजे जयनारा, जय-जय-जय हे ज्योतिचरण।।

युगनायक युगप्रहरी युगनेता, तुम हो युग के चिंतक,
शाश्वत सत्यों के व्याख्याता, युग के तुम हो उन्नायक,
जहां जहां ये चरण टिके, वह माटी महके बन चंदन।।

त्रिआयामी शुभपरिणामी, यात्रा के उद्देश्य महान,
नैतिकता अरू नशामुक्ति, मोहक उद्यान सद्भावों का,
करुणा का निर्झर नयनों में, मिटा रहा जन-जन क्रन्दन।।

तुलसी महाप्रज्ञ से निखरा, जादूई व्यक्तित्त्व निराला,
कलयुग में भी सतयुग सा, नित बांट रहे है दिव्य उजाला,
गतिमान अनवरत रहता है, महाश्रमिक के श्रम का स्पन्दन।।

दुगड़ कुल के गौरव गण में, गौरवमय इतिहास रचाते,
शासनमाता के आभारी, अभिनव उत्सव आज मनाते,
शुभ भावों का अर्घ्य समर्पित, युग-युग जीओ नेमानंदन।।

● साध्वी मुदितयशा ●

युग चिन्तन के दीवट पर जो अभिनव दीप जलाता है।
युग की पीड़ा सहलाता वह युगप्रधान कहलाता है।।

पांव-पांव चलकर पहुंचे तुम हर ढ़ाणी, हर गांव शहर
वह नर पहुंच गया शिखरों पर जिस पर तेरी हुई महर
बदली तुमने प्रभुवर! कितनों के जीवन की दशा दिशा
तेरे दिव्य तेज से बन जाती है उजली भोर निशा
हर उलझी गुत्थी सुलझाकर जो जीना सिखलाता है।।

श्रम का स्वेद बहाकर भी जो जन-जन की दुविधा हरते
इच्छापूरण बनकर भक्तों की इच्छा पूरी करते
स्व-पर की संकीर्ण सोच से जो रहता उन्मुक्त सदा।
जिसके प्रबल पुण्य से मानों टल जाती है हर विपदा
सब कुछ सहकर विष पीकर भी सबको सुधा पिलाता है।।

शास्त्रसिंधु का दोहन करके बांट रहे हो तुम नवनीत
तेरे अधरों पर गुंजित है आत्मजागरण के संगीत
पवित्रता के पुण्य धाम हो संयम से है गहरी प्रीत
सबकी नैया पार लगाए ज्योतिचरण ये परम पुनीत
जो भविष्य की आहट को सुन सही राह दिखलाता है।

● साध्वी सुमतिप्रभा ●

जन्मभूमि में युगप्रधान का उत्सव लाया नई बहार।
षष्टिपूर्ति पर करें कामना प्रभुवर! जीओ वर्ष हजार।।

युग की जटिल समस्याओं ने, समाधान तुमसे पाया,
हर संतप्त मनुज को शीतल, सिंचन देकर सरसाया।
जन-जीवन बगिया महकाई, खोले नव्य सिद्धि के द्वार।।

अनगिन कीर्तिमान रचने वाले से क्या कोई अनजान,
हर संतप्त मनुज को शीतल, सिंच चरण रहें गतिमान।
वसुधा नतमस्तक चरणों में, उसे मिला अनुपम उपहार।।

धरती के भगवान मानकर जब लोगों ने पीर सुनाई,
शांतिदूत बन करके प्रभु ने शांत सुधारस धार बहाई।
तेरी सन्निधि में मन इप्सित स्वप्न हो रहे सब साकार।।

● साध्वी शुभ्रयशा ●

गाएं दिव्य ऋचाएं दिव्य प्रकाश की
भक्ति में रम जाएं गुरु के नाम की
गण के राम की जय, श्रद्धा धाम की जय
गुरु के नाम की जय, नव आयाम की जय।

भव्य भाल का तेज अनूठा मुखमंडल रूपाला
करुणासागर गुणरत्नाकर प्रवचन अमृतपयाला
परमप्रतापी त्रिभुवनव्यापी, पथदर्शन है निराला
तुलसी महाप्रज्ञ ने निज हाथों से तुम्हें संवारा
मिलकर करके जय बोलो युगप्रधान की।

अवदानों की अकथ कहानी शासन शिखर चढ़ाया
यात्रा अहिंसा सफल प्रयोजन देशाटन मन भाया
गुरु अलबेला हर दिन मेला जन जीवन महकाया
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण श्रम का स्रोत बहाया।

सभी प्रणम्य है युगप्रधान वे स्मृतियों में हम लाएं
तुम हो ज्ञानी श्रुतसंधानी महाश्रमण कहलाए
सृजन तुम्हारा सबसे न्यारा संपादन गहराए
दिव्य शक्तियां रहे तुम्हारे हर पल दाएं-बाएं।

जन्मधरा में देव विराजे तीर्थंकर सम गाजै
शासनमाता के साकार सपने घोष विजय के बाजै
तकदीर जागी, चरणों के रागी, हम अनुरागी, बने वीतरागी
आशीष दो गुरुराजै, कदम-कदम पर साथ रहेंगे दिल की ये आवाजें।

● साध्वी श्रुतयशा ●

उगाओ गणिवर! स्वर्ण विहान।
धरती को तुम पर अभिमान।।

कसो प्रभुवर वीणा के तार,
उठे मंगलमय फिर झंकार,
पुनः हो प्राणों का संचार,
छंटे मूर्च्छा का सघन वितान।।

सिसकियों पर छाए सित हास,
कसक पर विजय वरे उल्लास,
खिले पतझड़ में नव मधुमास,
करो पुरवैया को आह्वान।।

आर्य के सक्षम कर्मठ हाथ,
दसों आचार्यों का बल साथ,
हुआ है तुमसे संघ सनाथ,
सफल सार्थक हो हर अभियान।।

गगन में जब तक सूरज चांद,
चिरायु अरुज हो नेमानंद,
बरसता रहे सदा आनंद,
दिशाएं करती जय-जय गान।।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के अवसर पर काव्यांजलियाँ

● साध्वी मीमांसाप्रभा ●

हे युगप्रधान! हे युगद्रष्टा! तव चरणों में शत्-शत् वंदन।
हे महातपस्वी महाश्रमण! वंदन अभिवंदन अभिनंदन।।

अनंतशक्ति के महास्रोत सबमें ऊर्जा संचार करो अब
तन से मन से और वचन से दुर्बल को बलवान करो अब
पौरुष की आस ले हाथों में तोड़े कर्मों के सब बंधन।।

हिमगिरि दृढ़ संकल्पशक्ति के मजबूती का पढ़ा दो।
कायरता से क्लीव बने मानव को ऊर्जावान बना दो
दर्शन ज्ञान चरण संयम से मिट जाए जन-जन का क्रंदन।।

समता के महासागर प्रभुवर समरसता का पान करा दो।
चंचल विचलित अंतःस्थल में स्थिरता का आशीर्वर दे दो
धर्मध्यान से सरोबार बन करूं मुक्ति से ही अनुबंधन।।

जन्मभूमि में आप पधारे धरती का कण-कण है पुलकित
जय-जय महाश्रमण नारों से गुंजित दशों दिशाएं स्पन्दित
सत्यं शिवं सुंदर भैक्षवशासन जिनशासन का स्पन्दन।।

● साध्वी काम्यप्रभा ●

हे पुण्यवान, करुणानिधान, तुम युगप्रधान बनकर छाए
ये दशों दिशाएं हर्षित हो, तव कीर्ति कौमुदी फैलाए।।
कुदरत का हर कोना-कोना, अभिनंदन करने उत्साही,
नंदनवन ऐसे माली को पाकर, लेता नव अंगड़ाई,
अभिनव पुलकन अनहद खुशियां, उत्सव के उजले पल आए।

अनुकंपा का अविरल प्रपात, बहता रहता बाहर भीतर,
बंजर धरती उर्वर बनती, जहां गिरता प्रभु का श्रम सीकर,
अविचल संकल्पी मनोबली, नतमस्तक होती विपदाएं।।

तुम जैसे आज्ञाकारी सुत विरले ही मातृभक्त होते,
आठों प्रवचनमाताओं की गोदी में नित सुख से सोते,
तुम जैसे परमपिता पाकर, हम सब संताने इठलाएं।।

मैं बनी विरागी दुनिया से, पर इन चरणों की अनुरागी,
अभयंकर सुखमय शरण मिली, जन्मों की पुनवानी जागी,
सब कुछ चरणों में अर्पित है, फिर क्या हम भेंट चढ़ा पाएं।।

● साध्वी चैत्यप्रभा ●

ज्योतिचरण की ज्योति रश्मियां ज्योतित करती भाग्य सितारा।
भू नभ में गूंजेगा अविरल जय जय महाश्रमण यह नारा।।

भोले बालक सी निश्छलता जन-जन को आह्लादित करती
गणिवर की गरिमामय गुरुता पल-पल पुण्य प्रेरणा भरती
महातपस्वी महाश्रमिक की विभुता का है भव्य नजारा।।

वीतरागता के वैभव से भूमंडल के बने कुबेर हो
मानवता के महामसीहा! करुणा के तुम उत्तुंग सुमेर हो
मनमोहक वरदाई मुद्रा तोड़े आग्रह-विग्रह कारा।।

विनयशीलता की नजीर हो वत्सलता के पारावार
नयनों के अमृत वर्षण से होती अहंकार की हार
युगप्रधान के अभिनंदन में प्रमुदित है नंदनवन सारा।।

● साध्वी सौम्यप्रभा ●

अक्षत कुंकुम थाल सजाएं, भगवन! तुमको आज बधाएं।
अमृतमय उत्सव अनुपम यह शुभ भावों की भेंट चढ़ाएं।।

युगद्रष्टा युगसृष्टा तुम हो युग के भाग्यविधाता
सुलझाते हो सकल समस्या जन-जन के संबोध प्रदाता
जीवन का आदर्श अलौकिक पल-पल पुण्य प्रेरणा पाएं।।

मुस्कान भरी मोहक मुखमुद्रा, सबके मन को भाती है
धरती के भगवान तुम्हीं, हर दिल की धड़कन गाती है
प्रेम के परम पुजारी प्रभुवर! बिना रुके नित चलते जाए।।

चरण टिके जहां भी तेरे, माटी चन्दन बन जाती है
बंजर भूमि बने उर्वरा, रयामल फसलें लहराती हैं
प्रभु की प्रवर अहिंसा यात्रा, कितने कीर्तिमान रचाएं।।

तेरी पावन चरण सन्निधि, बदले जन-जन की तकदीर
हिन्दु मुस्लिम सिक्ख ईसाई, हर मानव में तेरी तस्वीर
युगों-युगों तक युगप्रधान की दुनिया गौरव गाथा गाएं।।

● साध्वी प्रशमरति ●

महाश्रमण से गणमाली पा जाग उठी तकदीर हमारी।
पाकर सुखमय छांव तुम्हारी खिल गई मन की क्यारी।।

शुभ कर्मों का योग मिला है भैक्षवशासन संघ मिला है।
मर्यादा की सौरभ पाकर जीवन उपवन खिला-खिला है।
संघ सारथी महाश्रमण पा मिट गई मन की दुविधा सारी।।

मां नेमा का नयन सितारा मोहन लगता प्यारा-प्यारा।
मृदुवाणी मुस्कान मनोहर पथदर्शक लगता मनहारा।
सहनशीलता बड़ी विलक्षण पथ की हर बाधाएं हारी।

गुरु तुलसी का वरदहस्त पा मुनि सुमेर से पाई दीक्षा।
महाप्रज्ञ तुलसी से पाई समय-समय अनगिन शिक्षा।
मुदित बने ना सुविधावादी दी शिक्षा प्रभु ने मनहारी।।

महाप्रज्ञ के सक्षम पटधर महाश्रमण गण के हैं विभुवर
तेरी सुखद सन्निधि में प्रभु पाते हैं हम छांव शुभंकर
संघ सुमेरु की सान्निधि में जीवन बगिया सुखकारी।।

षष्टिपूर्ति का अवसर पावन समवसरण रचना मनभावन
भैक्षवगण में उमड़-घूमड़ कर बरस रहा खुशियों का सावन
जय-जय ज्योतिचरण की गूंजें चिहुंदिशि यशगाथा जयकारी।

● साध्वी कुशलविभा ●

जिस युग में जन्में उस युग को नमन करे हर बार।
युगप्रधान यशोमूर्ति अभिनन्दन लो बार हजार।।

उज्ज्वल आभामण्डल से आध्यात्मिक ऊर्जा बरसाते
अनुकम्पा की धवल चान्दनी से हर मानव को सरसाते
पाप ताप संताप निवारक! गूंजे जग में जय-जयकार।।

तुमने पंथ, ग्रंथ, संत की हर धारा को जोड़ा है
रुढ़ परम्परा से ग्रंथित हर मानव मन को मोड़ा है
देश-विदेश विचरण कर लाये तप-त्याग की मलय बहार।।

मेरे गीतों के दर्पण में छवि तुम्हारी ही पाऊंगी
बढ़ती जाऊं मंजिल पाऊं आशीष नित मैं चाहूंगी
दिग्विजयी अंहिसा यात्रा, करते जन-जन का उपकार।।

● साध्वी ऋद्धिप्रभा ●

सम
आकर्षित जिनसे आसन हैं, जिनकी सन्निधि प्रतिपल पाए।
महाश्रमण विभु चरण शरण में, सद्गुण भी निज भाग्य सराए।।
रवि आतप को सहकर तुमने मेरा सम्मान बढ़ाया है,
आंधी तूफां हो या ठण्डी मुझ सहवास सुहाया है।
संघर्षों की राहें चलते मेरा साथ सदा अपनाए,
महाश्रमण विभु चरण शरण में, **समता** गुण निज भाग्य सराए।।

शम
शांति थिरकती सदा वदन पर, आत्मसाधना से आप्लावित,
उपशम युत संयत है वाणी, सत्य भावना से है भावित।।
मुस्काती मुद्रा के सम्मुख, कहो कषाय कैसे टिक पाए,
महाश्रमण विभु चरण शरण में, **उपशम** गुण निज भाग्य सराए।।

श्रम
पौरुष मंदिर, पौरुष पूजा, वही भक्ति है वही भगवान,
समयं गोयम मा पमायए, बना वीर वचन वरदान।।
अनुत्तर श्रमदान तुम्हारा, महातपस्वी अभिधा पाए,
महाश्रमण विभु चरण शरण में, **श्रम** गुण निज भाग्य सराए।।

श्रामण्य
करुणा का बहता निर्झर हो, सत्यवादिता है अलबेली,
प्रामाणिकता ब्रह्मचारिता, अनासक्त है जीवनशैली।
महिमामंडित आत्मगुणों से, वर युगप्रधान पद पाए
महाश्रमण विभु चरण शरण में, **श्रामण्य** निज भाग्य सराए।।

● साध्वी अनुशासनाश्री ●

भिक्षु चदरिया ओढ़ वदन पर, शासन ध्वज नभ में फहराया।
तुलसी महाप्रज्ञ पटधर का गौरव जग ने गाया।।

जन्मधरा पर महाश्रमणी ने मृदु स्वर में उचराया था
आहिस्ते से उठो आर्यवर यह कह तुम्हें बुलाया था
सक्षम हाथों में गण डोर थमाया।।

दीवसमा आचारज होते गण को दीपित करते हैं
उवसम सारं सामण्णं की ऊर्जा सबमें भरते हैं
उवणय निउणं का सुंदर सार बताया।

शरण प्रतिष्ठा गति है गुरुवर अत्राणों के त्राण हैं
निष्प्राणों को स्पंदित करके भरते उनमें प्राण हैं
गूंगे को वाणी दे पंगू को शिखर चढ़ाया।।

युग की नब्ज पकड़ कर गण को अनुरूप चलाया है
नानाविध अवदानों से गण गगनांगण में छाया है
युगप्रधान पद को शोभाया, शासन माता ने विरुदाया।।

लय : झिलमिल सितारों का---

✦ *व्यक्तियों के समूह से समाज का निर्माण होता है, इसलिए समाज व्यक्ति से बड़ा होता है। एक व्यक्ति के चिंतन की तुलना में समाज अथवा संगठन का चिंतन महत्त्वपूर्ण होता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ *इंद्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के अवसर पर काव्यांजलियाँ

● साध्वी अमितयशा ●

भैक्षव गण का भाग्य विधाता महाश्रमण है पालनहारा
मुख पर मृदु मुस्कान विराजित महाश्रमण सबका मनहारा

श्री सरदारराहर धरती पर दूगड़ कुल में जन्म तुम्हारा।
नेमा झूमर लाल लाडला मोहन सबका प्राण पियारा
मुनि सुमेर से पाया वैभव तुमने है सुखकारा।।

महातपस्वी महाश्रमण तुम श्रम का सबको पाठ पढ़ाते
संयम निर्मल रहे हमेशा सन्मार्ग पंथ पर सदा बढ़ाते
करुणायोगी महाश्रमण तुम भैक्षव गण निर्मल जलधारा।।

है विराट व्यक्तित्व तुम्हारा है विराट कर्तृत्व तुम्हारा
सदा निरामय रहो पूज्यवर सन्निधि में है चौथा आरा
इंगित आराधन में बाजे मेरी सांसो का इकतारा।।

● साध्वी अर्हतप्रभा ●

तेरापंथ शासन में छाई खुशियां अपरम्पार है।
युगप्रधान जय महाश्रमण की शासना गुलजार है।।
वंदे ज्योतिचरण, वंदे महाश्रमण।।

दीपित आभामंडल तेरा, बोल रही शुभ साधना
सत्यं शिवं सुन्दरं पद्य की होती है आराधना
रहो निरामय तपो धरा पर बद्धांजलि शुभकामना
युगप्रधान के अलंकरण की मंगलमय वर्धापना
नेमानंदन, शत-शत वंदन, आई स्वर्ग बहार है।

पावन पटोत्सव प्रभुवर का दो ऐसा वरदान हो
जन - उन्नायक, भाग्य-विधायक भक्तों के भगवान हो
गौरव गाथा क्या गाएं नत-मस्तक सकल जहान हो
श्रद्धा का दरिया लहराए अर्पित करते प्राण हो
जिनशासन का गुलशन महके, सौरभ खुशबुदार है।

तर्ज : आओ बच्चों तुम्हे...

● साध्वी पावनप्रभा ●

ज्योतिचरण! हे महाश्रमण! श्रीचरणों में हम शीश नमाएं।
युगप्रधान उत्सव मनभावन जनता सारी हरसाएं।।

मात-तात सम गुरूवर तुम हो तुम ही तारणहारे हो
भीर-वीर गंभीर तुम्ही हो हम सबके रखवारे हो
तुलसी जैसी चाल-हाल है क्या-क्या महिमा हम गाएं।

तेरे द्वारे जो भी आता वह पावन बन जाता है
तेरी मुस्कानों को पाकर संताप मुक्त हो जाता है
सतयुग सी सुखमय तव सन्निधि शांत सुधारस बरसाए।

पदयात्री बन करके अहिंसा यात्रा बिगुल बजाया है
कन्याकुमारी सागर तट पर नव इतिहास रचाया है
डगर-डगर और नगर-नगर में ज्योतिचरण बढ़ते जाए।

लक्ष्य तुम्हारा बहे हृदय में सद्भावों की निर्मल धारा
अनुकंपा की जगे -चेतना व्यसन मुक्त हो जग यह सारा
युगों-युगों तक गुरुवर तेरी दुनिया गौरव गाथा गाए।

● साध्वी भव्ययशा ●

सागर को गागर में भरने का करती सविनय आयास।
विस्तृत नभतल को बाहों में थामूं मन में नव उल्लास।।

मरु की बंजर माटी में भी अनमोला यह रत्न मिला है
आशापूरण करने वाला मनहर कल्पवृक्ष खिला है
चरण सन्निधि पतझड़ में भी लाती है अभिनव मधुमास।।

पल-पल कल-कल बहती भीतर शान्तिसुधा की पावन धारा
वत्सलता की शुभ्र चांदनी भरती अन्तस् में उजियारा
आभामण्डल में होता है स्वर्ग सुखों का नितअहसास।।

पुण्य प्रेरणा के सिंचन से पुष्पित है उन्नति का तरूवर
प्यासे मन की प्यास बुझाता विभुवर तेरा करुणा सरवर
आकर्षित करता है सबको निर्मल तेजस्वी संन्यास।।

क्या छोडूं क्या-क्या बतलाऊं तुम अक्षय सद्गुण भंडार
शब्दों के पंखों से कैसे भाव गगन का पाऊं पार
भक्त्यान्वित हो भगवन् फिर भी करती कुछ अक्षर विन्यास।।

जनहित खातिर तनहित छोड़ा हे निष्काम! तुम्हें प्रणाम
जिनभक्ति को निजभक्ति माना हे अगम्य! तुम्हें सलाम
पादम्बुज की रजकण बनकर, वर दो पाऊं गुरुकुलवास।।

● साध्वी गुप्तिप्रभा ●

आदर्श साधक ज्ञान आराधक जीवन तेरा है अभिराम
उपशम उपासक सौम्य साधक संयम तेरा बड़ा ललाम
खूबियों का खजाना जीवन किससे है अनजाना
हे युगप्रधान! हम करें कामना पग-पग विजय वरो हर याम।।

प्रभु महाश्रमण इस संघ में तुम अलौकिक चिराग हो
तेरी उत्कृष्टतम साधना देख हमारे में भी विराग हो
विराग का अनूठा ठाठ बोना मनुज क्या बतलाए?
तेरी शिक्षाओं को अपना सके ऐसा सबमें अनुराग हो।।

धैर्यबल धरती जैसा, संकल्पों में हिमगिरि ऊंचाई
मनोबल मंजुल प्रभुवर का तपोबल से जागृत पुण्याई
ओज अजब है पोज गजब है तेरा नव्य निराला
अहिंसा यात्रा की रची दिव्य कहानी वरदाई।।

विनय, समर्पण उच्च कोटि का सकल संघ में भरे प्रेरणा
समय प्रबंधन, कौशल अनुपम जागृत है हर सुप्त चेतना
अल्पभाषिता, गोपनीयता नापी मानों सागर गहराई
युगप्रधान का उत्सव अभिनव स्वीकारो भावों की स्पंदना।।

● साध्वी बसंतप्रभा ●

हे युगप्रधान! श्रम गाथा, महातपस्वी जगत्राता,
हे जीवन के निर्माता, प्रभु मेरे भाग्य विधाता,
श्रद्धा का महकता चंदन है, चरणों में करें वन्दन है।।

मनमोहक मूरत मनहारी, वीतराग अवतारी,
नयनों से अमृत रस बरसे, शांत सौम्य सुखकारी,
जादू भरी तेरी वाणी, फैली है यश सहनाणी,
तेरे संदेशों को सुनकर, बन गई दुनिया ये दिवानी ।।१।।

नन्हें इन दो कदमों से, दुनिया मापी सारी,
गगन धरा संगीत सुनाएं, महाश्रमण जयकारी,
तुफानों से नहीं घबराएं, कष्टों में भी मुस्काएं,
तेरे पदचिन्हों पर चल, जीवन बगिया महकाएं।।२।।

अमिताभ आभावलय को पा, खिल गए है भाग्य हमारे,
युगप्रधान महाश्रमण सुगुरु, मिल गए हैं पालनहारे,
तुम से अद्भुत महायोगी, निस्पृह साधक महात्यागी,
तेरी रहमत को पाकर, बन गए हम सौभागी।।३।।

लय : सूरज कब दूर गगन से---

● साध्वी मंगलप्रभा ●

युग को बोध कराने प्रभुवर!
धरती पर अवतार किया है।
इसीलिए शासन माता ने
युगप्रधान सम्मान दिया है।।

युग अनुरूप तुम्हारा चिंतन,
देता सबको नव संजीवन।
युग की जटिल समस्याओं को,
हल करने नित करते मंथन।।
निज मेधा से शाश्वत सत्यों का अनुसंधान किया है।।

युग की वल्गा थाम निरंतर,
युग धारा को मोड़ दिया है।
मैत्री करुणा के धागों से,
टूटे दिल को जोड़ दिया है।
दिग् विजयी यात्रा वरदायी युग को वर आलोक दिया है।

चरण युगल में अर्पित सबकुछ,
तुम ही जीवन के निर्माता।
मंगल गाएं तुम्हें बधाएं
तुम हो मेरे भाग्य विधाता।
तेरी पावन सन्निधि में प्रभो! प्रतिपल अमृतपान किया है।।

स्वागत त्याग का होता है, भोग का नहीं

रामपुर पटनागढ़।

मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि आप सभी ने संतों का स्वागत किया। संत आते हैं तो सहज ही सभी के मन में खुशी होती है। ऐसा लगता है कि संत आए हैं तो बसंत आया है। आध्यात्मिक वातावरण बनता है, उत्साह बनता है। संतों का स्वागत करना हमारी संस्कृति भारत की परंपरा रही है। स्वागत त्याग का होता है, भोग का नहीं। त्याग का महत्त्व हमेशा रहा है। त्याग हमेशा से आदरणीय, सम्माननीय रहा है।

रामपुर गाँव के नाम के साथ राम का नाम जुड़ा है, तो अपने भीतर के राम को जगाएँ, जिससे हमारी आध्यात्मिक शक्ति जागृत होगी। तनवी जैन ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी ने प्रस्तुति दी। सिवानी जैन एवं बिंदिया अग्रवाल ने गीत प्रस्तुत किया। सभा के मंत्री गोविंद जैन ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संचालन कुणाल जैन ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के अवसर पर काव्यांजलियाँ

● साध्वी कारुण्यप्रभा ●

झूमर नेमानन्दन प्यारा
महाश्रमण को नमन हमारा

अनुपमेय व्यक्तित्व तुम्हारा किस उपमा से तुझे सजाऊं
कार्य कुशलता दिल को भाए शब्दों से कैसे बतलाऊं
महाश्रमण है नाम तुम्हारा भैक्षवगण का पालनहारा।

बचपन में ही संयम लेने की मन में अभिलाषा जागी
भौतिकता से बने विरागी संयम जीवन के अनुरागी
गुरु चरणों में हुए समर्पित चमक उठा यह संघ सितारा।

षष्टिपूर्ति अवसर मन भावन युगप्रधान आचारज पावन
खुशियो का घन उमड़-उमड़ कर बरस रहा है मानो सावन
तेरापंथ गण का रखवारा महाश्रमण सबका मनहारा।

● साध्वी रचनाश्री ●

मेधा के उत्तुंग शिखर, श्री महाश्रमण का अभिनंदन।
युगप्रधान शुभ मंगल वेला, श्रद्धा का सुरभित-चंदन।।

अष्ट मांगलिक लिए हाथ में, अष्ट सिद्धियां करती वंदन,
नव निधियां और शासन सेवी, देव-देवियां करते अर्चन,
महाप्रभावक आचारज तुम, भरो संघ में नूतन स्पंदन।।

शिखर पुरुष अध्यात्म जगत के, तुम हो नवयुग निर्माता,
महायशस्वी हे गणनायक, श्रमण संस्कृति के उद्गाता,
अतिशय धारी, महिमा प्यारी, प्रबल प्रतापी नेमानंदन।।

प्रतिभा और पराक्रम से तुम, सरज रहे हो नव-नव चिंतन,
बढ़े संघ में ओज-तेज इसलिए, निरंतर अमृत सिंचन,
आध्यात्मिक आभा से अभिनव, है व्यक्तित्व सरस मनभावन।।

मन मधुवन में पुलकन नूतन, पाया हमने तेरा शासन,
तव इंगित पर बढ़े संघ में, निजपर-शासन फिर अनुशासन,
हंसता-खिलता और महकता, रहे सदा यह गण नन्दनवन।।

● साध्वी प्रसन्नयशा ●

भले न देखा हमने 'जिन' को, 'जिन' के दर्शन जिनमें होते।
महाश्रमण गुरुवर चरणों में, सुखशय्या में हम नित सोते।।

तीर्थंकर के तुम प्रतिनिधि हो, भिक्षु के पटधर प्रख्यात
तुलसी महाप्रज्ञ शिष्यवर, हम सबके गुरुवर विख्यात
तव सन्निधि में शरण प्राप्त कर, आत्मतटी में खाते गोते।।

सुर जैसा तव तनुरत्न है, संकल्प सुमेरु सा दृढ़तर
विनम्रता के उच्च शिखर हो, निर्मलता के पावन निर्झर
आर्षवचन उद्घोषण करके, जन-मन के सब कल्मष धोते।।

षष्टीपूर्ति का भव्य महोत्सव, चिरजीवी हो करें कामना
युगद्रष्टा हो युगप्रधान हो, युग-युग पाएं दिव्य शासना
आकर्षक आभामण्डल में, शुभ लेश्याओं को संजोते।।

● साध्वी सिद्धप्रभा ●

जन्मोत्सव की शुभबेला में नाच उठा मन मयूर हमारा।
रोम-रोम संगीत सुनाए युगप्रधान उत्सव मनहारा।।

उदित हुआ है महासूर्य यह दुगड़ परिकर के आंगन में
मुदित हुआ है जन-जन का मन कल्पवृक्ष लख प्रांगण में,
मिटा अंधेरा अंतर्मन का फैला चिहुंदिशि नव उजियारा।।

सेवा में है अष्ट मंगल, अष्ट सिद्धियां साथ तुम्हारे,
अष्ट संपदा वर्धमान हैं नव निधियां नित द्वार तुम्हारे,
प्रतिपल चमक रहा है प्रभु की पुण्याई का दिव्य सितारा।।

पांव-पांव चलकर के तुमने जन-जन का उद्धार किया है
दृढ़ संकल्प समुन्नत तेरा हर सपना साकार किया है
धरती नभ में गूंज रहा है महाश्रमण जय नारा।।

शासन माता के श्रीमुख से युगप्रधान सम्मान मिला है,
वर्धापन की पावन बेला तीर्थ चतुष्टय खिला-खिला है,
युग-युग जीओ हे युगनायक! युगों-युगों तक मिले सहारा।।

● साध्वी सम्पूर्णयशा ●

जन-जन की आस्था के धाम, महाश्रमण को करें प्रणाम।
तुम रहीम हो तुम ही राम, तेरापंथ के तिलक ललाम।।
महाश्रमण को करें प्रणाम।।

मन्द-मन्द मुस्कान वदन की, जन-मन की पीड़ा हर लेती
कल्पवृक्ष सम सन्निधि सुखमय, मन वांछित पूरा कर देती
अनिमेष निहारे प्रभुवर तेरी पावन मुख मुद्रा अभिराम
महाअमण को करें प्रणाम।।

गति प्रतिष्ठा त्राण शरण तुम, असहायों के सबल सहारे
करुणा के निर्मल निर्झर तुम, लाखों लोगों के रखवारे
निश्छल, निस्पृह, निर्मोही हो निपुण निरूपम अरु निष्काम
महाश्रमण को करें प्रणाम।।

युगप्रधान उत्सव अलबेला, गणमन्दिर में आज दिवाली
जन्मधरा का भाग्य समुन्नत, उदित हुई है भोर रूपाली
युगों-युगों तक अमर रहेगा गुरुवर महाश्रमण का नाम
महाश्रमण को करें प्रणाम।।

● साध्वी वीरप्रभा ●

गण अधिनायक जन उन्नायक, करे अर्चना सर्व कलाएं।
युग प्रधान अभिषेक पर्व पर, अर्पित है सब भाव ऋचाएं।।

अभीक्ष्ण तप, योग अनुत्तर, अभीक्ष्ण यतना है सहचर
है सुरक्षा कवच निस्पृहता, प्रतिसंलीनता भी सतत अनुचर
'पुढ़वी समो मुणी हवेज्जा', आगम सूक्त प्रभो! वरधाएं।।

समर्पण के उन्नत शिखर हो, विनय वरदाई अनुत्तर
स्रोत करुणा के सुपावन, वीतरागता है विकस्वर
'गुरुप्पसायाभिमुहो रमेज्जा', आगम सूक्त प्रभो! वरधाएं।।

है अपराजित संघनायक! जिनशासन का फहराया परचम
हे अनुपमेय शासननायक! असीम है विस्तृत गगन
'एवं गणी सोहइ भिक्खूमज्झे', आगम सूक्त प्रभो! वरधाएं।।

आर्हत् प्रवचन जीवन दर्शन, मूढ़ जगत को राह दिखाए
श्रुतधर की पौरूष मशाल, क्षितिज पर्यंत दीप जलाए
'समयं गोयम मा पमायए' आगम सूक्त प्रभो! वरधाएं।।

● साध्वी पुष्यप्रभा ●

युग आस्था के दिव्य धाम युग करता शत्-शत् वंदन।
युगद्रष्टा युगनायक है युगप्रधान करते अभिनंदन।।

गांव- गांव में नगर-नगर में नैतिकता की अलख जगाई,
पांव-पांव चलकर जन-जन तक संयम सुरसरिता पहुंचाई,
कैसे हो उद्धार मनुज का टूटे भवसागर के बंधन।।

विपदाओं के सघन तिमिर में पौरुष की लौ जली प्रकाम,
संघर्षों की घोर घटा में संकल्पों का तेज ललाम,
श्रद्धामय उन्मुक्त गगन में गणवन महका जैसे चंदन।।

समता के उत्तुंग शिखर पर चरण तुम्हारे है गतिमान,
जीवनशैली बने संतुलित चले प्रगति के नव अभियान,
मिट जाए अज्ञान अंधेरा अंजो नयनों में श्रुत अन्जन।।

आर्यप्रवर के उपकारों से उपकृत है सारा संसार,
ज्योतिचरण प्रभु महाश्रमण की चिंहुदिशि हो रही जय-जयकार,
सांस-सांस पर नाम तुम्हारा प्राणों में भर दो नव स्पंदन।।

● साध्वी कमनीयप्रभा ●

तुलसी महाप्रज्ञ के पटधर, गण को शिखर-चढ़ाए।
गण गगनांगण के गणेश की विरुदावलियां गाएं।।

आभारी है शासनमाता का गण सारा
युगप्रधान सम्मान का यह सीन प्यारा
दिव्य लोक से आओ निरखो दिव्य नजारा
अवनि-अम्बर गूंज रहा जय यश का नारा
कीर्तिधर की कीर्तिपताका चिहुंदीशी में फहराएं।।

हे युगप्रधान! अभिनव युग का निर्माण करो तुम
समता के सम्पोषण का संचार करो तुम
मैत्री-करुणा का घर-घर विस्तार करो तुम
संघ भक्ति, गुरु भक्ति का संस्कार भरो तुम
भाग्यविधाता, शिवसुखदाता सुरनर महिमा गाएं।।

हरता है संताप ताप अभिधान तुम्हारा
शीतल सुरतरु की छाया सानिध्य तुम्हारा
चंचल मन को शांत बनाए वचन तुम्हारा
भाग्य लता लहराएं पा आशीष तुम्हारा
ज्योतिपुंज से आलोकित हो ज्योतिर्मय बन जाएं।।

● साध्वी संवेगश्री ●

युगनायक युगशास्ता की हो रही जय-जयकार।
पोर-पोर में खुशियां छाई लो श्रद्धा उपहार।।

मंत्री मुनि की पुण्य धरा पर
जन्म लिया है ज्योतिर्धर
ज्योतिपुंज श्रुतधर को पाकर के गण गुलजार।।

उपशम के अनुचिंतन से नेमांजी ने पाला
सारे ही जग का बन गया उजाला
प्रभु की गौरव गाथाएं गाते है सुर नर-नार।।

शासनमाता से अलंकरण पाया
जिनशासन का भाग्य सवाया
रचना अरिहन्तों-सी सचमुच में है साकार।।

सरदारशहर में लागी रंगरलियां
कल्पतरु साये में महके मन कलियां
तेरापंथ शासन में बरसे अमृत रस धार।।

लय : सावन का ...

✦ *अभय की साधना करने वाला सुखी बन सकता है। भय और तनाव दुःख पैदा करता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के अवसर पर काव्यांजलियाँ

● साध्वी जगवत्सला ●

प्रभो! सांसों का इकतारा तू, तिमिर में उजियारा तू
भक्तों का सबल सहारा तू, तेरापंथ सितारा तू
एकादशमेश श्री गणेश के चरणों में करते वंदन हैं।।

श्रद्धासिक्त समर्पण है, जन्मों की आस्था अर्पण है।
खिलता-खिलता मधुवन है, अतिमनभावन जीवन है।
गुरुवर महाश्रमण का नाम सबके लिए संजीवन है।।

जगवत्सल! विश्वास तुम्हीं, भक्तों के आश्वास तुम्हीं।
उन्नति के आकाश तुम्हीं, जन-जन मन की आश तुम्हीं।
तेरे पदचिन्हों पर चलकर, टूटेंगे अध- बंधन है।।

देव! हृद-तंत्री के तार तुम्हीं, आस्था के आधार तुम्हीं।
करुणा के अवतार तुम्हीं, मधुरिम जीवन धार तुम्हीं।
वर्धापन के शुभ अवसर पर भाव प्रवण अभिनंदन है।।

भैक्षवगण की जान तुम्हीं, प्राणों के महाप्राण तुम्हीं।
संतों की प्रभो! शान तुम्हीं भक्तों के भगवान तुम्हीं।
देव! दृष्टि को अंजाम देने नित्य चले संघ स्यंदन है।।

● साध्वी माधुर्यप्रभा ●

इस धरती के हो भगवान
अहो अलौकिक रूप तुम्हारा इस धरती के हो भगवान।
ऋजुता मृदुता वर विनम्रता, करुणा समता के प्रतिमान।।

पल पल श्रम की पूजा करके महाश्रमिक कहलाए हो,
महातपस्वी महाश्रमण बन, जन-जन मन को भाए हो।
जो भी आता दर पर तेरे, मन-चाहा मिलता वरदान।।

रखकर मूल सुरक्षित विभुवर नव इतिहास रचाते हैं,
हृदय मक्खन सा कोमल, करुणा धार बहाते हैं।
आकर्षक व्यक्तित्व तुम्हारा, मानवता के हो अभिमान।।

तीर्थंकर के सक्षम प्रतिनिधि तेरापंथ के हो सरताज,
युग को तुमने जाना परखा, तुम ही हो युग की आवाज।
इसलिए शासनमाता ने दिया युगप्रधान सम्मान।।

● साध्वी सविताश्री ●

तुम युगप्रधान क्यों कहलाएं।
हमको भी कुछ बतलाएं।।

राम को दिल में अधिवास दिया,
श्रम हस्ताक्षर सहवास किया।
नित समता सागर में न्हाएं,
तुम युगप्रधान यों कहलाएं।।

करुणा में सबसे आगे हो,
हर दिल जोड़े वो धागे हो।
स्व-पर प्रकाश को अपनाए,
तुम युगप्रधान यों कहलाएं।।

व्यवहार समन्वय सहयायी,
सबके विकास हित वरदायी।
जन मंगलपथ को अपनाए,
तुम युगप्रधान यों कहलाएं।।

● साध्वी प्रवीणप्रभा ●

ओ मेरे भगवन्!
पुण्य पुंज की दिव्य छटा से मन हरसाए रे,
गणी की गरिमा गाए रे।।

तेरी चोंच चुगा भी तेरा, ये पंछी भी तेरा रे।
तेरापंथ सरताज चरण में, मोद मनाए रे।।

कोरे कागद-सा जीवन है, जो चाहो लिख देना रे।
कलाकार के सक्षमकर ही, भाग्य सजाए रे।।

क्यों पूजूं अनदेखे प्रभु को, तुझ आनन ही सुहाए रे।
ध्यान लगाऊं जब भी तेरा, चित्त रम जाए रे।।

निर्मल निर्झर प्रभु का जीवन, पावनता मन भाए रे।
नेमासुत स्वर्णिम युग नित इतिहास रचाए रे।।

षष्टिपूर्ति का शुभ अवसर, जन-मन को सरसाए रे।
'युगप्रधान' युग विजय वरो, जय घोष लुभाए रे।।

तर्ज : पनजी! मूंढ़े बोल ...

● साध्वी आरोग्यश्री ●

सन्तता की शान हो तुम
सत्य की पहचान हो तुम
शांति आभा में विलक्षण
हृद-तंत्री की तान हो तुम।।

इन्द्रिय-प्रतिसंलीन हो तुम
सहजानंद तल्लीन हो तुम
मुस्कानों से बहते निर्झर
अपने में ही लीन हो तुम।।

ज्ञान के अक्षय कोष हो तुम
निर्विकल्प परितोष हो तुम
प्रपन्चना के पंचम युग में
समता के जयघोष हो तुम।।

कर्मयोग के रूप हो तुम
ध्यान योग स्वरूप हो तुम
महाप्रज्ञ के सक्षम पटधर
महावीर के दूत हो तुम।।

● साध्वी रम्यप्रभा ●

तेजस्वी तेरा मुखमंडल सम शम श्रम का संगम है।
आगमवाणी सहचर तेरी जीवन का व्रत उपशम है।।

युगप्रधान का अलंकरण यह शासन माता का उपहार।
मानवता के मंगल हो, तुम तेरापंथ शासन-श्रृंगार।।

ओ मेरे भगवान! तुम्हारा अंतर्मन से ध्यान धरूं।
श्रद्धा भक्ति भरे भावों से नित उठ मैं गुणगान करूं।।

दशों दिशाओं में गुंजित महाश्रमण शुभ नाम।
बद्धांजलि हो दुनिया करती सविनय कोटि-कोटि प्रणाम।।

● साध्वी मेघप्रभा ●

युगपुरुष तुम्हें प्रणाम, युगप्रधान तुम्हे प्रणाम
अनुकंपा की चेतना से मानवता का मान बढ़ा,
प्रोन्नत साधुत्व से संस्कृति का सम्मान बढ़ा,
प्रलंब पादविहार से संघ-गौरव शिखर चढ़ा
सर्वाधिक दीक्षोत्सव से तुमने नव इतिहास गढ़ा।।

आर्हत वाणी से शाश्वत-संबोध दिया,
नैतिक मूल्यों से चारित्रिक प्रतिबोध दिया
सद्भावना संप्रसार से मैत्री का सिंहनाद दिया,
भारत मां के तिलक ललाम, युगप्रधान।।

ठोस रचनात्मक कार्यों से बने युग निर्माता,
नशामुक्ति अभियान से बने भाग्य विधाता,
गूढ़ रहस्यों को पहचानकर बने अनुसंधाता,
भारतीय संस्कृति साहित्य के हो तुम व्याख्याता।।
तव गौरवगाथा गूंजे अविराम।।

● साध्वी कल्पमाला ●

क्या उपमा दे पाऊं तुमको, तुम अथाह करुणा के सागर।
युगप्रधान युगनायक गुरुवर, हम सौभागी तुमको पाकर।।

धीर वीर तुम इन्द्रिय जेता, भैक्षवगण के सक्षम नेता।
प्यासे मन की प्यास बुझाते, शरण तुम्हारी जो भी लेता।
उदितोदित तप तेज निराला, तुम हो भारत भू के भास्कर।।

युगप्रधान का उत्सव पावन, जन-जन में है खुशियां छाई।
गुरु सन्निधि का योग शुभंकर, मानस की कलियां विकसाई।
यादों में नित अमिट रहेगा, ऐसा दुर्लभ स्वर्णिम अवसर।।

महाश्रमण में सदा निहारे, तुलसी महाप्रज्ञ का दीदार।
हर मन भक्त बना चरणों का, भैक्षव शासन का श्रृंगार।
तेरी गुण गाथा गाने को उत्सुक रहती हूं निशि वासर।।

पदाभिषेक अखिलेश तुम्हारा, खुले हाथ बांटो वरदान।
भावों की ले कल्पमाला, करने आई तव गुणगान।
रहो चिरायु करूं कामना, ओ मेरे प्राणों के पॉवर।।

● साध्वी आस्थाप्रभा ●

युगप्रधान अभिषेक दिवस पर श्रद्धा सुमन सजाएं।
ज्योतिचरण श्री महाश्रमणजी विजय ध्वजा फहराए।।

युगद्रष्टा युगस्रष्टा गुरुवर युग नब्ज पहचानी।
जन जीवन परिवर्तन खातिर अहिंसा यात्रा ठानी।
त्रिआयामी संकल्पों से घर-घर अलख जगाएं।।

तुम ही मंदिर तुम ही मस्जिद तुम ही प्रभुवर गिरजाघर।
वीर बुद्ध तुम पैगम्बर हो तुम घट-घट के हो शिवशंकर।
अध्यात्म जगत को राह दिखाकर, युगप्रधान कहलाए।।

शासनमाता के श्रीमुख से, युगप्रधान पद पाया है।
सरदारशहर में उत्सव का यह स्वर्णिम अवसर आया है।
रहो निरामय! बनो चिरायु! यही भावना भाते हैं।।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के अवसर पर काव्यांजलियाँ

● साध्वी प्रशांतयशा ●

परम यशस्वी अरु तेजस्वी, गणनायक है शासन के।
परम भक्त प्रभु महावीर के, प्रज्ञा पट्टधर महाप्रज्ञ के।
देश-विदेशों की यात्रा कर आए मायड़ भूमि में।
अभिषेक दिवस के शुभ अवसर पर, आज बिठाएं पलकों में।।

उपशमधारी, श्रमसहकारी, जन-जन का उद्वेग हरे।
वरदहस्त शिष्यों पर धरते, स्नेह से अभिसिक्त करे।
उपकृत है यह सृष्टि सारी, सुकृत सत् संदेश वरे।
युगप्रधान महाश्रमण मनस्वी, तव चरणों में शीश धरे।।

इस धरा से उस गगन तक, तेरी कहानी गीत गाएं।
शासना तेरी युगों तक रोशनी अलौकिक जगाएं।
छू रहा आकाश भू यह ज्योति के गुणगान गाएं।
ज्योति के गुणगान गाकर, पद्म चरणों में चढ़ाएं।।

षष्ठिपूर्ति का पावन अवसर, भू पर अब सुरतरु लहराएं।
जन्मोत्सव की अप्रतिम घड़िया, तीर्थ चतुष्टय मोद मनाएं।
पट्टोत्सव की अविरल बेला, सुरगण मिल सब तुम्हें बधाएं।
अनुपम आभा निरख-निरख कर सुधी जन अपने भाग्य सराएं।।

● साध्वी शरदयशा ●

युगप्रधान उस पुण्यात्मा के श्रीचरणों में नमन हमारा।।

जिसकी दिव्य दृष्टि से मिलती हिमगिरि की उज्जवल ऊंचाई।
गरल पानकर जिसने शान्तिसुधा की शिव सरिता सरसाई।
ऋतुराज स्वयं जिसके जीवन से पाता पल-पल हरियाली।
जिसकी मृदु मुस्कानों से छा जाती है जग में खुशहाली।
दीनबन्धु जो कृपासिन्धु जो दुखियों का सबल सहारा।
युगप्रधान उस पुण्यात्मा के श्रीचरणों में नमन हमारा।।

जन-जन की कल्याण कामना से रहता गतिमान सदा जो।
उठे हए दोनों हाथों से देता है वरदान सदा जो।
पहनाता जो युगचिंतन को शाश्वत-मूल्यों का आभूषण।
चुन-चुनकर मानव जीवन के दूर कर रहा है जो दूषण।
मानव मन की हर उलझन को सुलझाकर बांटे उजियारा।
युगप्रधान उस पुण्यात्मा के श्रीचरणों में नमन हमारा।।

● साध्वी जयविभा ●

अभिनन्दन लो युगनायक
हे महाश्रमण महातपस्वी त्यागमूर्ति निर्मल निश्छल हो
उर में तेरे वात्सल्य भरा, भावों से अतिशय उज्ज्वल हो
अमर शान्ति के तुम पूजारी जन मानस के हो उन्नायक।।

मिटे ताप संताप मिले जब करुणामय शीतल छाया
तेरी चरण-शरण में आकर सबने मनवांछित फल पाया
श्रमण संस्कृति के गौरव हो बना विश्व तव गुण संगायक।।

सुधा सम वाणी कल्याणी, सुन शतदल ज्यों मन खिल जाता
छवि अंकित हो जाती नयनों में पदरज से नित नव ऊर्जा पाता
रहते भीतर जीते बाहर आत्म तत्त्व के तुम अनुसंधायक।।

● साध्वी स्वस्तिकप्रभा ●

दशों दिशाएं रचे ऋचाएं तव अभिनंदन में।
जय-जय ज्योतिचरण स्वर गूंजे हर धड़कन में।।

तेजस्वी आचार्यों से गण कालजयी
महातपस्वी महाश्रमण प्रभु आत्मजयी
शासन माता की शैली थी मनहारी
गणप्रधान से युगप्रधान की तैयारी।
शान्तिदूत, नेमासपूत, विश्रुत जिनशासन में।। जय-जय... ।।

युगप्रधान की जो सोचें हम परिभाषा
महाश्रमण जीवन उसकी सुन्दर भाषा
आंधी से तूफानों से तुम नहीं डरे
अन्धेरी राहों में नव आलोक भरे।
धरती, अम्बर, तरुवर, सखर ज्यों हित साधन में।।

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई जो आए
महाश्रमण में प्रभु की सूरत वो पाए
मुस्काती नजरों से वर पीयूष झरे
ना जाने कितने जन्मों की पीर हरे।

● साध्वी चारुलता ●

प्रभुवर! तेरी जीवन गाथा ज्यों गंगा का निर्मल पानी।
कौन बता पाएगा बोलो अतिशय श्रम की अकथ कहानी।।

एकनिष्ठ हो निशदिन करते अर्हतवाणी का आराधन,
सदा सामने रखकर उसको होता हर गतिविधि का संचालन,
शिव सुख वरणी आपद हरणी वाणी है यह जग कल्याणी।।

मितभाषी हो मृदुसंभाषी वचनसिद्धि वरदायी है,
सत्य साधना से आप्लावित रवि सम प्रकटी पुण्याई है,
अनाग्रही चिंतन की गरिमा कहीं न कोई खींचातानी है।।

भरा हुआ सद्गुण रत्नों से जीवन पारावार विशाल,
तुम जैसे गणमाली पाकर सचमुच हम तो हुए निहाल,
महाप्राण जय-विजय पताका धरती नभ में है फहरानी।

● साध्वी दर्शनप्रभा ●

गण में छाई है खुशहाली,
युगप्रधान-अभिवंदन करके हर्षित है हर रुं-रुंवाली।।

सरदारशहर में जन्में दीक्षा भी सरदारहाहर में पाई,
तिलक भूमि बनने का स्वर्णिम मौका मिला इसे वरदाई,
सचमुच ही सरदारशहर की धरती है यह किस्मतवाली।।

देश- विदशों की यात्रा कर नैतिकता का बिगुल बजाया,
मानवता के महामसीहा बनकर जग की पीड़ा को सहलाया,
युगों-युगों तक युग गाएगा गाथा तेरी गौरवशाली।।

साधिक दो युगों का शासन, रची संघ में नई ऋचाएं,
आभारी शासनमाता के, युगप्रधान आचारज पाएं,
तेरी कुशलशासना में हम मंजिल प्राप्त करें मनहारी,
दो ऐसा आशीर्वर हमको बन जाए अविचल अविकारी।।

● साध्वी भावितयशा ●

भैक्षवशासन नन्दन उपवन सकल विश्व में सबसे न्यारा
महाश्रमण अनुपम अनुशास्ता नेमानन्दन नयन सितारा।।

महासूर्य आलोक रश्मियां अखिल विश्व में बांट रहा है
पावन प्रवचन संजीवन सा आधि-व्याधि मिटा रहा है
चरण युगल में सविनय नत है अवनि अम्बर का कण-कण
देश विदेशों की धरती पर गूंजे महाश्रमण जयकारा।।

श्रम बूंदो से सिंचन देकर गण बगिया को सरसाया
उपशान्त कषाय की प्रखर साधना जीवन को सरसब्ज बनाया
सागर सम गंभीर धीर प्रभो! समता रस का पान कराते
दिव्य शक्तियां करे अर्चना तुम ही जग का सबल सहारा।।

हे युगप्रधान तव अवदानों से भिक्षु गण भण्डार भरा है
शासन माता, मुख्यमुनि अरु साध्वीवर्या पद निखरा है
दर्शन ज्ञान चरण ज्योति से पग-पग जीवन में उजियारा
षष्ठीपूर्ति अवसर पर गूंजे जय-जय ज्योतिचरण का नारा।।

● साध्वी मयंकयशा ●

संघ सुमेरु के चरणों में संघ चतुष्टय मोद मनाएं।
युगप्रधान अभिषेक दिवस पर, वर्धापन कर हर्ष मनाएं।।

निर्मल आभा सुधा सन्निधि, सहज बनें शिव सुख दातार,
करुणा से आप्लावित वाणी, जनहित में बहती रसधार,
नव उन्मेषों से आप्लावित, संस्कारों के दीप जलाएं।।

पांव-पांव चलकर प्रभुवर ने, कितने प्रांतों को परसा है,
नैतिकता का पाठ पढ़ाकर, कितनों का मानस बदला है,
जग को तुमसे है आशाएं, अमित शांति-संदेश सुनाएं।।

धन्य धरा सरदारशहर की, अवसर आया सुंदरतम,
शासनमाता भी हर्षित है, देख नजारा भू पर अनुपम,
यशभेरी चिंहुदिशि में गुंजित, सृष्टि का कण-कण सरसाए।।

संघ प्रभाकर! गुण रत्नाकर! तव पदचिन्हों पर चल पाएं,
हर इंगित आराधन करने, मन वीणा नव गान सुनाएं,
तुम आराध्य तुम्हीं आराधन, तेरा वर्तन हम कर पाएं।।

बोधिप्रदाता शरणप्रदाता, तुम ही हो जीवन आधार,
आश्वासित जीवन का हरपल, पाना है अब भव का पार,
वरदहस्त पा महाश्रमण का, प्रतिपल अपना भाग्य सराएं।।

● साध्वी गीतार्थप्रभा ●

आंधी तूफा न डिगा सका तुमको
धरती भी डोल गयी देखकर तेरे प्रण को
झुक गए नभ में देव-विमान
वंदन स्वीकार करो हे युगप्रधान! ।।

युग का ताप-संताप मिटा कर
अहिंसा में जन-मानस का विश्वास जगाकर
जग को सिखाया करना अहिंसा का सम्मान
वंदन स्वीकार करो हे युगप्रधान! ।।

✦ *अज्ञान ऐसा अभिशाप है जो क्रोध, लोभ आदि से भी ज्यादा खतरनाक है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के अवसर पर काव्यांजलियाँ

● साध्वी प्रबुद्धयशा ●

कीर्तिमान पर कीर्तिमान रच नव इतिहास बनाए
तुम युगप्रधान कहलाए

जैनागम संपादन बहुविध साहित्यिक रचनाएं,
नाना भाषाओं में अनूदित जन-जन के मन भाएं,
शिक्षा, शोध सृजन की सरिता में नित संघ नहाएं।।

चले अनवरत धर्मसंघ में सम्यक् ज्ञानाराधन
निष्ठापंचक से अविरल पोषित हो सम्यक् दर्शन
नई योजना 'महाप्रज्ञ श्रुत आराधन' की लाए।।

दीक्षाओं के कीर्तिमान को तुमने शिखर चढ़ाया
'सुमंगल साधना' का पथ श्रमणोपासक को दिखलाया
वार शनिश्चर सामायिक अभियान नया रंग लाए।।

'सर्वधर्म सद्भाव' दिशा में बोल रहा तव श्रम है,
जैन एकता के प्रसार में पहला उठा कदम है,
जन-जन के मुख महाश्रमण कीरत चर्चाएं।।

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण जिनशासन उजियारे,
देशाटन की नई कहानी लिख दी तारणहारे,
धरती अम्बर में गूंजेगी सदियों यश गाथाएं।।

● साध्वी चेतनप्रभा ●

प्रश्न उठा है भीतर में इक, क्यों कहलाए तुम युगप्रधान।
देखा प्रभु का जीवन दर्शन, मिल गया सुन्दर समाधान।।

महाप्रज्ञ के सक्षम पटधर, अनुकम्पा अवतार महान।
अभयप्रदाता शिवसुखदाता, मैत्री करुणा रत्न निधान।
प्रभुवाणी की अलख जगाते, सिखलाते जीने का ज्ञान।
इसीलिए हे महामसीहा! कहलाए तुम युगप्रधान।।

शासन नायक युग को तुमने दिए अनूठे है अवदान।
कल्याण बहुश्रुत और समीक्षा परिषद का पाया वरदान।
सुमंगल साधना, सामायिक का चला संघ में नव अभियान।
इसीलिए हे महामसीहा! कहलाए तुम युगप्रधान।।

मंगलमयी अहिंसा यात्रा आश्वस्त हुआ सकल जहान।
त्रि-आयामी सूत्र तुम्हारे जनता करती गंगा स्नान।
विष पीकर अमृत बांट रहे हैं, करते हैं सबका सम्मान।
इसीलिए हे महामसीहा! कहलाए तुम युगप्रधान।।

चंचल चित्त को कर प्रशांत हम दूर करें सारे व्यवधान।
मन उपवन को हरियल करती, शांतिदूत की मृदु मुस्कान।
पलकों में रूप सजे तेरा, धड़कन में तेरा अभिधान।
इसीलिए हे महामसीहा! कहलाए तुम युगप्रधान।।

✦ *उपदेश सुनने की भावना भी अच्छी बात है। उपदेश की सौ बातें सुनी जाएँगी तो उसमें से दो-चार बातें जीवन में हृदयंगम भी हो सकती हैं, उतर भी सकती हैं।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

● साध्वी विशालप्रभा ●

जन्मोत्सव की मंगल बेला, गीत सुनाती दशों दिशाएं।
तव चरणों की सन्निधि पाकर, मन की कली-कली विकसाएं।।

दिनकर सम तेजस्वी तुम हो, तपः तेज नित बढ़ता जाए।
नहीं देखते भूख-प्यास तुम, हर स्थिति में रहते सरसाए।
ऐसा राज बताओ गुरुवर! हम भी तुम जैसे बन जाएं।।

हिन्दु मुस्लिम सिक्ख ईसाई चरणों में सब भेंट चढ़ाए।
तीन देश तेईस राज्य तव श्रम की गौरव गाथा गाए।
प्रवर अहिंसा यात्रा अनुपम नित नूतन इतिहास रचाएं।।

आज जरुरत जग को तेरी पुण्य प्रेरणा तुमसे पाएं।
नशामुक्ति नैतिकता सह सद्भाव सुमन पग-पग महकाएं।
राम बुद्ध महावीर तुम्हीं हो, पाकर तुमको हम हरसाएं।।

शासनमाता स्वर्गलोक से देख दृश्य यह मोद मनाए।
पंचामृत उत्सव वरदायी पाकर जन्मभूमि विरुदाए।
युगों-युगों तक मिले शासना, युगप्रधान युग तुम्हें बधाए।।

युगप्रधान युगबोध प्रदाता शान्तिदूत बन भू पर आए।
कोरोना आतंक भयावह अभय शांति का मंत्र सुनाए।
सकल समस्याओं का भगवन् समाधान जग तुमसे पाएं।।

● साध्वी अक्षयप्रभा ●

प्राणवान योगी आपको करते सहस्रों बार प्रणाम है।
स्थितप्रज्ञ! हे तारणहार! लो श्रद्धामय अभिवंदन ललाम है।।

अध्यात्म जगत के महासूर्य तुम प्रज्ञापुरुष है महाभाग।
करुणामय तव सन्निधि पाकर हमने जगाये अपने भाग।।

हे युगनायक युगपुरुष आपने युग को अभिनव मोड़ दिया है।
मैत्री के सक्षम धागों से जन-जन मन को जोड़ दिया है।।

सत्यशोध में विमलस्रोत हो जग के महाप्रेरणास्रोत।
आत्मगुणों से ओत-प्रोत तुम भवसागर तरने हित पोत।।

शाश्वत का संगीत सुनाते धर्मध्वजा के तुम हो धारक।
आत्मसिद्धि का पथ दिखलाते प्राणीमात्र के तुम उद्धारक।।

स्वयंभूरमण समुद्र का आर नहीं है पार नहीं है।
वीतराग सम आभामण्डल कोई कहीं विकार नहीं है।।

संवर्तक धन ज्यों वर्षों तक धरती को सरसब्ज बनाता।
गंभीर देशना सुनकर वैसे सोया हर मानस जग जाता।।

भावशुद्धि हो भवशुद्धि हो एक यही अंतर अभिलाष।
कहो तथास्तु भगवन् मेरे मिट जाए भव-भव की प्यास।।

● साध्वी रोहितयशा ●

खुशियों की शुभ बेला आई, प्रभु को पा अवनि मुस्काई।
गूंज उठी शहनाई, सृष्टि गीत सुनाए, उतरा दिव्य सितारा।।

देवदुन्दुभि बज रही, पुष्पों की बौछार है
दशों दिशाएं झूम उठी, गगन धरा खुशहाल है
नेमा नंदन, झूमर-चंदन, गाता जग ये सारा।।

महासागर की लहरें ये गाएं तव पुण्याई
धीर, वीर, गंभीर तुम, हिमगिरि सी ऊंचाई
प्रभु की भक्ति,जागे शक्ति, तुम हो तारणहारा।।

हम हैं कितने सौभागी, महाश्रमण गणमाली
नयनों से करुणा बरसे, पीएं अमृत प्याली
श्रम के पुजारी, जुड़ी इकतारी, पाएं भव से किनारा।।

रहो सलामत युगपुरुष! जन-जन की आवाज है
जग तुझे निहार रहा, आशाएं बेअंदाज है
जुग-जुग जीओ, युग उन्नायक, सांसों का इकतारा।।

● साध्वी प्रशस्तप्रभा ●

जन-मानस की पीड़ा हरने, इस धरती पर प्रभु तुम आए।
हे युगप्रधान! हे युगनायक! गुरुवर जन-जन तुमको आज बधाएं।।

श्री तुलसी महाप्रज्ञ शुभ दृष्टि, आरोहण के अवसर पाएं।
गुरु चरणों में सब कुछ अर्पण, खुली प्रगति की नई दिशाएं।
मोहन, मुदित से महाश्रमण बन, महातपस्वी तुम कहलाए।।

तुलसी जन्म-शताब्दी अनुपम, शत दीक्षा संकल्प साकार।
देशाटन से गण की महिमा, फैली सात समंदर पार।
पग-पग जय-जय विजय वरो वर, जहां-जहां प्रभु चरण टिकाएं।।

महावीर के प्रतिनिधि में हम, महावीर का रूप निहारे।
कामधेनु, सुरतरू, चिंतामणि, सफल करो अरमां हमारे।
कर दो ऐसा अनुग्रह हम पर, आत्मोन्नति पर कदम बढाएं।।

● साध्वी संभवश्री ●

युग-युग तक इतिहास रचो तुम,
तुम ही हो इस युग के नायक।।
मैत्री, करुणा प्रेम से झंकृत,
युग वीणा के तुम संगायक।।

कीर्तिमानों की नव्य श्रृंखला रुकी न अब तक रुक पायेगी,
परम पराक्रम की यह यात्रा नहीं कभी भी रुक पायेगी,
तुम ही हो हे दिव्य पुरुष! इस युग के अभिनव अधिनायक।।

कैसा निर्मल मन है तेरा करुणा का दरिया छलकाता,
जो भी तेरे द्वार पे आया कभी नहीं खाली लौटाया,
जो भी मांगा दिया प्रभु ने तुम ही हो वरदान प्रदायक।।

जिनशासन के दिव्य दिवाकर गण के तुम रखवाले विभुवर,
चेहरा पुलकित रहता हरपल सबके मन को जीता ऋषिवर,
मृदु अनुशासन शैली तेरी तुम ही हो हे गणमाली!
इस भैक्षवगण के वर संगाायक।।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के अवसर पर काव्यांजलियाँ

● साध्वी प्रफुल्लप्रभा ●

गण उपवन की कोमल कली मैं
कैसे बरगद को विरूदाऊं
शब्द नहीं वह शब्दकोश में
जिससे प्रभु को आज रिझाऊं।।

गणनभ का हूं छोटा तारा
महासूर्य से पाऊं ज्योति
गुरु सन्निधि शुभ सीप मिली है
बन जाऊं मैं उजला मोती।।

गण मन्दिर का नन्हा प्रस्तर
कर पाऊं कैसे आराधन
पास हमारे भगवन केवल
अतिशय भाव भक्ति का साधन।।

विस्तृत गण सागर की बूंद हूं
सागरमय खुद मैं बन पाऊं
गण गणपति ही सब कुछ मेरा
प्रतिपल उनका मान बढ़ाऊं।।

वर्धापन का उत्सव अभिनव
युगप्रधान को आज बधाऊं
A से Z पसंद जो तुमको
स्वीकारो सब भेंट चढाऊं ।।

● साध्वी संगीतप्रभा ●

युग की धारा को मोड़ सके वह युगप्रधान कहलाता है।
आग्रह की कारा तोड़ सके वह युगप्रधान कटलाता है।।

संयम का बिगुल बजाता है
तप की सौरभ फैलाता है
असंयम का घट फोड़ सके,
वह युग प्रधान कहलाता है।।

मत, सम्प्रदाय का मोह नहीं
अपनेपन का व्यामोह नहीं
जो भ्रान्त धारणा तोड़ सके
वह युगप्रधान कहलाता है।।

पतितों को पार लगाता है
वात्सल्य सुधा बरसाता है
जो टूटे दिल को जोड़ सके
वह युगप्रधान कहलाता है।।

प्रभु पथ पर प्राण बिछाता है
पर हित श्रम धार बहाता है
जन हित-तन हित को छोड़ सके
वह युगप्रधान कहलाता है।।

युग-युग तेरा युग आभारी
मौलिकता की रक्षा भारी
जो सारभूत निचोड़ सके
वह युगप्रधान कहलाता है।।

● साध्वी सूर्ययशा ●

युगप्रधान हे युगपुरुष युग धारा को तुमने मोड़ा।
सद्भावों के दिव्य सूत्र से जन-जन को तुमने है जोड़ा।।

सहज शान्त खिलता गुलाब सा चेहरा लगता सबको प्यारा
जय-जय ज्योतिचरण का गूंजे धरती अम्बर में जयकारा
महाशक्ति के महास्रोत तुम, दर्शन से मिलती नव ऊर्जा
आस्था के अनुपम आलय हो, भक्ति से करते सब अर्चा
साम्यवाद के सद् चिन्तन से, सम्प्रदाय का घेरा तोड़ा।।

युग नायक तुम युग चिन्तक हो, श्रमण संघ के श्रेष्ठ सारथी
वीतराग सी अमल साधना गौरव गाए सकल भारती
प्रलम्ब अंहिसा यात्रा का गुरुवर ने नव इतिहास बनाया
जो भी आया चरण-शरण में उसका बेड़ा पार लगाया
मन मोहिनी मूरत के दर्शन पाने आता मानव दौड़ा।।

करुणा का लहराता दरिया शान्त कषाय की प्रखर साधना
वचन सम्पदा अद्भुत प्रभु की वत्सलतामय कुशल शासना
तेजस्वी आभामण्डल से होती निःसृत निर्मल ज्योति
पाकर प्रभु की पावन सन्निधि बने सीप भी उज्ज्वल मोती
युग-युग जीओ सकल संघ के करे कामना हे शिरमोड़।।

● साध्वी समताप्रभा ●

युगधारा के संवाहक तुम आर्यचरण तुम युगप्रधान।
(है) सत्यं शिवं सुन्दरं संगम प्रभु महाश्रमण संस्थान।।

निर्बंध छन्द निर्ग्रन्थ सन्त, तुम निष्प्रकंप महिमाधारी,
तेरी निश्छल निर्लिप्त चेतना, मोहक मुद्रा है मनहारी।
है भक्त हृदय में वास तुम्हारा, युग आस्था के हो आस्थान।।

तुम महाश्रमिक यायावर हो, तुम महासूर्य, तुम ज्योतिपुंज,
तुम शांति निकेतन, करुणाकेतन, निर्मलता के भव्य कुंज।
तुम बिन्दु एक पर सिन्धु तुम्हीं हो, भक्त तुम्हीं तुम ही भगवान।।

गंभीर चाल, गंभीर भाल, गंभीर तेरा चिंतन विशाल,
तूफानों में तुम बढ़ें चले कर कमल थाम पौरुष मशाल।
संकल्पों के तुम महाधाम, आत्मोपासक के महाप्राण।।

तेरापंथ के उत्तुंग शिखर मंगलमय तेरा आरोहण,
हो तनुरत्न आरोग्यप्रवर, हो पग-पग विजय ध्वजारोहण,
मंगल गायें चिरजीवी हो, तव शुभ शासन हो वर्धमान।
वन्दन वर्धापन गणनायक तुम रचो नये नित कीर्तिमान।।

● साध्वी संवरयशा ●

युगप्रधान महाश्रमण को वंदन शत-शत बार
नेमानन्दन का अभिनन्दन करते बारम्बार

ओ युगनायक! शक्ति प्रदायक! उजली तेरी जीवन चद्दर,
बांट रहे नैतिकता का अमृत, भरते जो रीती गागर।
अहिंसा का घोष मंगल, बज रही वीणा की झंकार।।

शासन के श्रृंगार, मुझे भी दो ऐसा वरदान,
बढ़ती-चढ़ती रहूं निशदिन, कर पाऊं अपनी पहचान।
अभ्यर्थना में है समर्पित, भक्तिमय उद्गार।।

श्रद्धा और समर्पण का नित चढ़े मजीठी रंग,
श्रम बूंदों से अभिसिंचित बजे साधना चंग।
पौरुष की तस्वीर तुम्हीं हो, कर दो मेरी नैय्या पार।।

● साध्वी कीर्तिप्रभा ●

हे शासन शेखर! शुभ श्रेयस्कर तव जीवन मनभाया।
युगप्रधान अलंकरण उत्सव उत्साह उमंग लहराया।।

भैक्षव शासन के गणमाली तुमसे उजली भोर
शशधर की सुषमा देती है अभिनव दौर
तीर्थंकर सम गुरुवर को पाकर नाच रहा मन मोर
हे दिव्य दिवाकर! दिव्य पुरुष दर्शन से जन-जन हरसाया।।

युगद्रष्टा समदर्शी गुरुवर अनुपम अतिशयधारी
युगचेता संस्कृति संगायक मूरत है मनहारी
जन जीवन के पुण्य पयोधर जुड़ी तुमसे इकतारी
हे ज्योतिर्धर! अनुपम ज्योति से मम जीवन महकाया।।

तेरे पदचिन्हो बढ़ने का संकल्प हम लेते
श्रद्धा का शतदल हम भेंट तुम्हें देते
हे सर्वज्ञ! प्रज्ञ अन्तःप्रज्ञा तुम्हीं जगाते
हे गणनायक! तेरी छत्र छांव में संयम मेरा सरसाया।।

● साध्वी तेजस्वीप्रभा ●

युगप्रधान अवसर आया गण में नया
पांच तत्त्वों से, पांच समवाय से, पांच ज्ञान से करते वर्धापना
पृथ्वी सम तुम हो धृतिमान, पानी सम तुम हो गुणवान
वायु सम हो गतिमान, अग्नि सम तुम हो ऊर्जावान
अंबर-सा विस्तार, चिंतन है उदार, सतियों के ये विचार।।

नियति ने ली अंगड़ाई, पौरूष की हो पुरवाई,
पुण्ययोग की परछाई, नब्ज काल की छू पाई,
दर्पण-सा स्वभाव, पदार्थों से अलगाव, समवाय के हैं भाव।।

अतिविशिष्ट तुममें मतिज्ञान, अध्ययन अध्यापन श्रुतज्ञान,
पाट विराजे अवधिज्ञान, मन को पढ़ते चौथ ज्ञान,
केवलज्ञान मिले, अंतर्ध्यान खिले, तव अरमान फले।।

युगों-युगों तक राज करें, संघ संपदा खूब भरें,
नए-नए इतिहास गढ़ें, योगक्षेम सतियों का करें,
गुरुवर का उपकार, भावों का इजहार, सेना है तैयार।।

● साध्वी संकल्पश्री ●

सूर्य की अभिनव किरणों से, करती हूं तेरा अभिनन्दन।
हे युगप्रधान! तव चरण युगल में, अर्पित है श्रद्धा का चन्दन।।

आकर्षक व्यक्तित्व तुम्हारा, कार्य कुशलता बड़ी विलक्षण
बहे विलक्षण करुणा धारा और विलक्षण है अनुशासन
सौम्य शांत दीदार विलक्षण, आकर्षित है जन-जन का मन
हे युगप्रधान! तव चरणों में, अर्पित श्रद्धा चन्दन।।

फौलादी संकल्पों के आगे, हर परिस्थिति अनुकूल बनी है
तव पुण्याई से शूलें भी, सुरभित सुन्दर फूल बनी है
हे महायायावर! तव यात्रा से खिला भिक्षु गण का यह गुलशन
हे युगप्रधान! तव चरणों में, अर्पित श्रद्धा चन्दन।।

हे युगपुरुष! युग की नब्ज को तुमने समुचित है पहचाना
दुःखित हर मानव की पीड़ा को तुमने अपना ही माना
हे युगप्रधान! युग करता है भाव भरा अभिवन्दन
हे युगप्रधान! तव चरणों में, अर्पित श्रद्धा चन्दन।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
6 - 12 जून, 2022

✦ *मानव जीवन दुर्लभ होता है। जीवन जीना सामान्य बात है, विशेषतासंपन्न जीवन जीना विशेष बात है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के आयोजन

आचार्यश्री महाश्रमण जी का व्यक्तित्व विशिष्ट है

बगुमुंडा।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का षष्टीपूर्ति एवं युगप्रधान समारोह मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी का व्यक्तित्व अपने आप में एक विशिष्ट व्यक्तित्व है। उनके जीवन में कितने-कितने गुणों का समावेश हुआ है। कोई भी व्यक्ति गुणों के आधार पर आगे बढ़ता है। आचार्यश्री महाश्रमण जी जीवन के प्रारंभ में ही गुणों का विकास करते रहे।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि अनेक जन्मों से जीव संसार में परिभ्रमण करता आ रहा है। जन्म कहाँ लेना व्यक्ति के हाथ में नहीं, परंतु जीवन कैसे जीना व्यक्ति पर निर्भर करता है। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने जीवन का सार निकाला। सहज, सरल, सौम्य मधुरभाषी साधक पुरुष का नाम है–आचार्यश्री महाश्रमण।

कार्यक्रम का शुभारंभ नीलम जैन के मंगलाचरण से हुआ। सभा अध्यक्ष जयप्रकाश जैन, महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला जैन, कन्या मंडल कांटाभाजी, रिद्धि जैन, छत्रपाल जैन, ज्ञानशाला कांटाभाजी, ज्ञानशाला बगुमुंडा, उज्ज्वल जैन, महिला मंडल बगुमुंडा, संजय जैन ने गीत परिसंवाद एवं वक्तव्य द्वारा प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संयोजन केशव नारायण जैन ने किया।

एकादशम सम्राट का जीवन विराट है

साउथ कोलकाता।

साध्वी स्वर्णरेखाजी के सान्निध्य में तथा साउथ कोलकाता सभा की आयोजना में तेरापंथ भवन में पूज्य गुरुदेव की षष्टीपूर्ति एवं युगप्रधान अलंकरण समारोह का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि तेरापंथ के एकादशम सम्राट का जीवन विराट है, जिनके आभावलय का प्रकाश कोटि-कोटि रत्नों के प्रकाश से भी मूल्यवान है। समर्पण एवं संकल्प से जिन्होंने जीवन के हर पर्व को रसमय बना लिया है। मानव मन की अनमोल धरोहर बनकर सिद्धांतों के प्रति सजग करने वाले आत्मबोधि प्रदाता आचार्य हैं। युग की समस्या का समाधान करने वाले युगप्रधान आचार्य हैं।

युगप्रधान अलंकरण समारोह में साध्वी स्वस्तिकाश्री जी एवं साध्वी सुधांशुप्रभाजी के संयोजकत्व में कवि सम्मेलन का अनूठा रंग जमा इसमें सात कवियों–प्रमोद पटावरी, निर्मल कुमार बैद, इंद्ररचंद छाजेड़, प्रदीप कुंडलिया, अशोक खटेड़, बालकवि मनन बागरेचा तथा कवियत्री साध्वी गौतमयशाजी ने काव्यधारा के प्रवाह में सबको बहा लिया।

कोलकाता सभा के मंत्री अजय भंसाली, दक्षिण हावड़ा सभा के अध्यक्ष सुशील गीड़िया, सॉल्टलेक सभा के मंत्री विनोद संचेती, उपासक प्रवक्ता महावीर प्रताप दुगड़, जुगराज बैद, तरुण सेठिया, डॉ० पुखराज सेठिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति गीत, कविता, वक्तव्य आदि द्वारा की। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीवृंद संग साठ श्रावक-श्राकविकाओं ने युगप्रधान अभिवंदना गीत का संगान करके वातावरण को महाश्रमणमय बना दिया। कार्यक्रम का संचालन साउथ सभा के सहमंत्री कमल कोचर ने किया।

षष्टीपूर्ति समारोह का आयोजन

कांदिवली।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का षष्टीपूर्ति दिवस साध्वी निर्वाणश्री जी एवं सहवर्ती साध्वीवृंद के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी का व्यक्तित्व विलक्षण एवं बहुआयामी है। १२ वर्ष की उम्र में मुनि बने और अपनी विशिष्ट प्रतिभा एवं प्रबल पुरुषार्थ से विकास के सोपान चढ़ते रहे। प्रबुद्ध साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभाजी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी अनेक विशेषताओं के पुरुष हैं। वे अनुकंपा के क्षीरसमंदर एवं मानवता के महामंदर हैं। उनकी नयनों से बहती करुणा हर दुःखी मानस की पीर हर लेती है।

साध्वी कुंदनयशाजी ने कविता के माध्यम से अपने भाव समर्पित किए। साध्वी लावण्यप्रभाजी ने अपने वक्तव्य द्वारा उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। साध्वी मधुरप्रभाजी ने सुमधुर गीत से सबका मन मोह लिया।

महिला मंडल संयोजिका नीतू नाहटा ने अपने वक्तव्य एवं अशोक हिरण ने गीतिका द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति अपनी भक्ति समर्पित की। तेयुप अध्यक्ष मनीष रांका ने आचार्यश्री महाश्रमण जी को संकल्पों की भेंट देने एवं अभातेयुप की तपसेना आयाम से जुड़ने का निवेदन किया। संचालन महिला मंडल की सह-संयोजिका अलका पटावरी द्वारा किया गया।

आचार्य तुलसी का अवदान - अणुव्रत

सिलीगुड़ी।

तेरापंथ भवन में साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि अणुव्रत ऐसा लाइफ इंश्योरेंस है जो हमारी आत्मा की संपत्ति को सुरक्षित रख सकता है, अणुव्रत एक ऐसा फिल्टर है जो दुर्गुणों को निकालकर पवित्रता को भर देता है, अणुव्रत सुखी जीवन की संपत्ति को बढ़ा सकता है, भटके हुए को मार्ग दिखा सकता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में गणमान्य व्यक्ति हिंदी बालिका विद्यालय के अध्यक्ष नार्थ बंगाल मर्चेंट एसोसिएशन के आईएमपी अग्रवाल समाज हिंदी भाषी समाज के प्रेसिडेंट संजय टीबडेवाल उपस्थित थे। उन्होंने अपने स्कूल में अणुव्रत गीतिका का संगान करने का आश्वास दिया।

कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत गीतिका के माध्यम से मदन मालू, आईपी तोलाराम सेठिया, अजय नौलखा, मेघराज सेठिया व टीम के द्वारा की गई तत्पश्चात स्वागत भाषण अणुव्रत समिति, सिलीगुड़ी की अध्यक्षा पुष्पा चंडालिया ने दिया।

अणुव्रत नाट्य प्रस्तुति कोषाध्यक्ष मंजु लुणावत, मंत्री जूली सिरोहिया, कार्यकारिणी बहनें उमा नौलखा, भारती मालू ने की। सभी संस्थाओं के पदाधिकारी भाई-बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन भारती मालू ने किया।

षष्टीपूर्ति पर कार्यक्रम

रायपुर।

तेयुप, रायपुर द्वारा संचालित अभातेयुप का महनीय उपक्रम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के उपलक्ष्य में स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया। जिसके सहयोगी गौतम, उत्तम, अश्लेश, चंद्र प्रकाश गोलछा परिवार, रायपुर रहे।

आयोजन का लाभ सीबीसी हेतु २४ व थायराइड प्रोफाइल हेतु ३० जनों द्वारा लिया गया। आयोजन के क्रियान्वयन में एटीडीसी में कार्यरत सहयोगियों का भरपूर सहयाग प्राप्त हुआ।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के अवसर पर काव्यांजलियाँ

● **मुनि विनम्र** ●

श्रद्धा के आस्थान! तेरी सन्निधि में जो रहते हैं
दरिया तू उपशम रस का भवजल से वो तरते हैं
अंतर मन की वीणा के सुर तुमसे ही सजते हैं
सप्त सुरों के नव रसों से, प्राणों में पुलकन भरते हैं।।

संघर्षों की तप्त तपिश में, समता की शीतल बहार हो
सम शम श्रम की शुभ त्रिवेणी मम जीवन आधार हो
मस्त सदा अपनेपन में तुम जिनशासन शृंगार हो
हर भक्त हृदय में वास तुम्हारा तुम्हीं खेवणहार हो।।

● **मुनि मृदु** ●

साधना के ओ सुमेरु मुझे वर वरदान दो।
साधना तेरी करूं मैं सिद्धि का सोपान दो।।

तुम्हीं मेरे मार्गदर्शक मार्ग भी तुम ही प्रभो।
तुम्हीं गति तुम ही प्रगति हो तुम ही हो मंजिल विभो।
अनुगमन तेरा करूं पदचिन्ह की पहचान दो।।

साध्य मेरे नाथ तुम ही तुम्हीं मेरी साधना।
तुम्हीं हो आराध्य मेरे हो तुम्हीं आराधना।
चल सकूं मैं साथ हरपल वह प्रवर उड़ान दो।।

तुम्हीं मेरी नाव नाविक तुम्हीं तारणहार हो।
तुम्ही हो संसार मेरे मुक्तिपथ दातार हो।
मोक्ष मेरा है यही बस तुम हृदय में स्थान दो।।

नवम साध्वीप्रमुखाश्री के मनोनयन पर उद्गार

अर्हम्

● **साध्वी समीक्षाप्रभा** ●

प्रबल भाग्योदय से तुमने, पाया भैक्षव गण गुलजार।
आज बधाएँ दशों दिशाएँ, खुशियाँ छाई अपरंपार।।

गुरु तुलसी के करकमलों से, तुमको संयम रत्न मिला है।
उस विराट् व्यक्तित्व शरण में, जीवन उपवन खूब खिला है।
प्रभुवर से पाया था तुमने, देखो कैसा स्नेह दुलार।।

महाप्रज्ञ ने अनगढ़ पत्थर पर प्रतिमा का रूप उकेरा।
उन विनम्र जो भी सिखलाया, सीखा आया नया सवेरा।
उस प्रज्ञा की प्रज्ञा से आलोकित है सारा संसार।।

युग प्रधान महाश्रमण प्रवन ने, रचा अनूठा नव इतिहास।
गौरवशाली प्रमुखा पद का, कर सृजन भर दिया विश्वास।
साध्वीगण में लाए प्रभुवर, देखो कैसी नई बहार।।

शासनमाता की सन्निधि, पाई थी तुमने आठों याम।
अमृतमय वात्सल्य मिला था, भूल सके ना कभी तमाम।
शासनमाता के सपनों को, करना तुमको अब साकार।।

नवम साध्वीप्रमुखाश्री के मनोनयन पर उद्गार

अभिनंदन करती हूँ

● साध्वी प्रमिला कुमारी ●

अभिनंदन करती हूँ श्रद्धा के निर्मल नीर का।
अभिनंदन करती हूँ श्रम की तस्वीर का।
नवमी साध्वी प्रमुखाश्री जी को देती हूँ सौ-सौ बधाई।
अभिनंदन करती हूँ संयम की समीर का।।१।।

पुष्करावर्त महामेघ बनकर गुरुवर ने की अमृत बरसात।
मुख्य नियोजिकाजी बन गए पल में साध्वीप्रमुखाजी साक्षात्।
करती हूँ अभिनंदन भावों के गुलदस्ते से।
श्रमणी गण को शिखर चढ़ाओ और उगाओ नया प्रभात।।२।।

पुरुषार्थ की मंदाकिनी का अभिनंदन करती हूँ।
गण बगिया में महकते चंदन का अभिनंदन करती हूँ।
संस्कृति की शान हो श्रमणी गण में पहचान हो।
तहे दिल से नव मनोनीत साध्वी प्रमुखाश्री जी का अभिनंदन करती हूँ।।३।।

कलाकार ने मनहर मूरत का आकार दिया है।
प्राण प्रतिष्ठा की गुरुवर ने सबने शीष चढ़ा लिया है।
बूँद ने किया समर्पण जब प्रशांत महासागर में।
बना कीमती मोती संघ समंदर का सबने सम्मान दिया है।।४।।

नवमी साध्वीप्रमुखाश्री जी नव युग की शुरुआत है।
भाग्य के आकाश में परम पुरुषार्थ का प्रभाव है।
रहो निरामय बनो सुधामय श्रमणी गण सिणगार।
गुरुइंगित से कार्य कराओ और नई बनाओ ख्यात।।५।।

करते है आपका अभिनंदन

● साध्वी महकप्रभा ●

साध्वीप्रमुखा मनभावन, शोभित है नवमासन।
आश्वस्त बना हृदयांगण, पुलिकत सारा श्रमणीगण।।
करते हैं आपका अभिनंदन।
आलोकित नभ धरा गगन।।

गुरुवर तुलसी का दिल जीता, महाप्रज्ञ शुभ साया।
नेमानंदन के इंगित को जीवन-लक्ष्य बनाया।।
शासन माता से पाया, अनुभवों का अकूत खजाना।
श्रम, सेवा और समर्पण से खिला है भाग्य-तराना।।
करते हैं आपका अभिनंदन--

मोह विलय की साधिका वैरागी जीवन सुंदर।
जप-प्रेमी, स्वाध्याय-लीन, तप में भी बढ़े निरंतर।।
व्यक्तित्व आपका निर्मल, अविरल ज्यों बहता झरना।
ऐसी साध्वीप्रमुखा का बतलाओ फिर क्या कहना।।
करते हैं आपका अभिनंदन---

करते हैं करबद्ध निवेदन, हम पर महर कराएँ।
साधना में गति बढ़े, उपक्रम कुछ आप चलाएँ।।
है अभी तो मीलों चलना, आगे से आगे बढ़ना।
तुम सदा निरामय रहना, बस इतना ही है कहना।।
करते हैं अपका अभिनंदन---

लय : सूरज कब दूर---

गौरवशाली संघ हमारा

● साध्वी मृदुला कुमारी ●

गौरवशाली संघ हमारा, गौरवशाली गणिवर।
उमड़ा खुशियों का सागर।
साध्वीप्रमुखा चयन दिवस पर भर गई दिल की गागर।
उमड़ा खुशियों का सागर।
छुपी शक्ति उजागर हो गई ठिकी दृष्टि शशधर की।
मिली रोशनी भामंडल से तेजस्वी भास्कर की
देख दृश्य नयनाभिराम, खिल गए भाग्य सिकंदर।।

बढ़ो चढ़ो शिखरों तक शुभ भावों की भेंट हमारी।
रहो निरामय करो शासना, तुम हो मंगलकारी।
धन्य हुई है चंदेरी और धन्य है मोदी परिकर।।

सहनशील गंभीर धीर और तपमय जीवन तेरा।
प्रखर पुण्य का उदय हुआ है, शोभित सिरपर सेहरा।
अभिवादन साध्वी मृदुला का झेलो शुभ अवसर पर।।

लय : जहाँ डाल-डाल पर---

अर्हम्

● साध्वी लब्धिश्री ●

आज दिशाएँ परम प्रफुल्लित
गीत मस्ती में गाती हैं।
पंचम स्वर में कोयलिया भी मधु संगीत सुनाती है।
साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी वर्धापना।
संघ चतुष्टय सह गणशेखर प्रमुदितमना।।

गुरु तुलसी करकमलों से समण दीक्षा---
संघ प्रभावक देश-विदेश यात्रा
पूरा इक युग बीता, ऊगा संयम सविता
गुरु तुलसी, महाप्रज्ञ का दिल जीता
मुख्य नियोजिका पद पर प्रतिष्ठित हुए---
महाप्रज्ञ चरणों की उपासना मिली
ज्ञान, ध्यान, साधना की त्रिवेणी अमल
समता, जागरूकता से जीवन निर्मल
मुबारक हो चयन दिन सदा के लिए।।

आज स्वर्णिम सूर्योदय की आभा निखरी---
खुशियों के वंदनवार से महफिलसजी
दृष्टि अमियपगी, तकदीर जगी
साध्वी विश्रुतविभाजी पर हुई मरजी---
साध्वीप्रमुखा बने शासन जयवंता है---
वरो पग-पग विजय, दिल के अरमान हैं
झगमगा रही भावों की फूलझड़ियाँ
प्रभो! संघ को कराया अमृतपान है।।

लय : सलामे इश्क---

नव-निधि को करें प्रणाम

● साध्वी मुक्ताप्रभा ●

शुचितापूर्ण जीवन शैली, प्रज्ञा प्रखर विशद तुम्हारी।
समता, ममता, क्षमता की मूरत, गंभीरता है मनहारी।
नव-निधि को करे प्रणाम।।

पुरुषार्थ की मशाल निरंतर जले, काव्य कला निराली।
बात-बात में संबोध देते, पिलाते रहे नित अमृत प्याली।
परम पारदर्शी को करे प्रणाम।।

स्वाध्याय प्रियता, मचुखाणी का संगम देखा।
आत्मस्थ, स्वस्थ, मस्त रहे, बने जीवन का लेखा-जोखा।
पारस प्रज्ञा को करे प्रणाम।।

अमल-धवलकांतिमय प्रमुखाश्री जी शासन प्रांगण में।
सुधाकर सी शुभ्र चाँदनी, प्रसरी है गण नंदनवन में।
ओजस्वी अर्हता को करे प्रणाम।।

शक्ति-भक्ति का दो वरदान, कर दो चेतन उद्योत।
चयन दिवस की मंगल बेला आनंद उमंग का प्रद्योत।
वचन वर्चस्विता को करे प्रणाम।।

हर डगर हर मंजिल करती है तुझे सलाम।
हर सफल हर राहें करती हैं तुझे प्रणाम।
शुभकामना है शुभ भावना है निरामय निरंजन।
पुनीत होकर दिन हर क्षण बरसे अमृत चंदन।।

अर्हम्

● साध्वी चंदनबाला ●

साध्वीप्रमुखा चयन मनोहर दृश्य महामंगलकारी।
दिखलाया है युगप्रधान ने, युग सृष्टा युग अवतारी।।

ज्यों ही आया नाम सामने, गूँज उठा सारा पंडाल,
साध्वीगण को किया प्रभु ने, एक पलक में मालोमाल।
छाई चारों ओर खुशालीऽऽऽ महाश्रमण जय जयकारी।।

विश्रुतविभा हुई विश्रुत तब देश-विदेशों पहुँचा नाम,
मुखरित हुए बधाई के स्वर, जन-जन करने लगे प्रणाम।
साध्वीगण ने शीष चढ़ायाऽऽऽ, गुरुवर हैं महाउपकारी।।

रिक्त स्थान महाश्रमणी का, प्रभु ने किया उसे गुलजार,
सक्षम हाथों में सौंपा है, साध्वीगण का पूरा भार।
आधी दुनिया की पूरीऽऽऽ, प्रभु ने दी है जिम्मेदारी।।

नई भोर हो तुम्हें मुबारक, पग-पग पर जय विजय वरो,
रहो निरामय, बनो सुधामय, क्षण-क्षण गण भंडार भरो।
गुरु इंगित से दीर्घकाल तकऽऽऽ, करो हमारी रखवारी।।

लय : क्या मिलिए---

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
6 - 12 जून, 2022

✦ *समता की साधना जैन-अजैन सबके लिए उपयोगी होती है। समता धर्म है और विषमता पाप है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

नवम साध्वीप्रमुखाश्री के मनोनयन पर उद्गार

अर्हम्

● **शासनश्री साध्वी यशोधरा** ●

श्रुत संपन्नता साध्वीप्रमुखा,
जागी वर पुण्याई।
शासन बगिया मुस्काई।। ध्रु०

विशद भाव से करें आरती,
गाएँ गीत प्रभाती।
रहो निरामय सदा विभामय,
जोत जले बिना बाती।
चंदेरी की शुभ्र चाँदनी।
बाजी यश शहनाई।।

सागर फेन-समुज्ज्वल पावन,
अंतस्तल है तेरा।
प्रेरक और सरस है जीवन,
पोथी का हर पेरा।
दुग्धस्नात संन्यास तुम्हारा,
बड़ा प्रेरणादायी।।

छायानिधि सम गुरु-छाया ने,
ऊर्जस्वल तुम्हें बनाया।
ममता-समता अद्भुत क्षमता,
जन मानस चकराया।
मिली विलक्षण सती शेखरा,
ली युग ने अंगड़ाई।।

लय : जहाँ डाल-डाल---

अर्हम्

● **मौन साधिका साध्वी राजकुमारी 'द्वितीय'** ●

युगप्रधान गुरुदेव की, कृपा हुई महान।
योग्य समझकर आपको किया प्रमुखा पद प्रदान।।

गुरुदृष्टि दूर दर्शिता पूर्ण है, सब भावों के ज्ञाता।
देते शिष्य वर्ग को, दिव्य ज्ञान प्रदाता।।

अहो भाग्य था आपका, साध्वीवृंद को हर्ष।
संभाल करो सबकी सतत, ना रहे कोई विमर्ष।।

समय-समय पर सर्वदा, गुरुवर का रखिए ध्यान।
स्वास्थ्य और गुरु इंगित का, पल-पल करिए ज्ञान।।

पावन चरण सरोज हो, अभिवंदन शत बार।
श्रद्धा सुमनों का करूँ, भक्ति भरा उपहार।।

जागरूक श्रमशीलता, विश्रुत विभा में व्याप्त।
सेवा संघ संघपति की करो, याद रहे परिव्याप्त।।

प्रमुदित नभ प्रमुदित धरा, है व्यक्तित्व अलभ्य।
साध्वीवृंद को नाज है, पा प्रमुखा पद भव्य।।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टीपूर्ति के अवसर पर काव्यांजलियाँ

● **साध्वी ऋजुबाला** ●

हे युगप्रधान करुणानिधान!

वर्धापना के क्षणों में चाहती हूं वर्धापित करना
पर किस उपमा से करूं वर्धापित तुमको
जो तुम पर सटीक उतरे।।

है अनुपमेय व्यक्तित्व के धनी क्या तुम सूर्य हो?
नहीं-नहीं तुम सूर्य नहीं हो क्योंकि
तुम्हारे में सूर्य जैसी तेजस्विता होते हुए भी दूसरों
को शोषण करने के भाव नहीं है।।

हे युगनायक! शांतिदूत क्या तुम चांद हो?
नहीं-नहीं तुम चांद नहीं हो क्योंकि
तुम्हारे में चांद जैसी शीतलता होते हुए
भी कालिमा का धब्बा नहीं है।।

हे युगद्रष्टा! युगस्रष्टा! क्या तुम हिमालय हो?
नहीं-नहीं तुम हिमालय भी नहीं हो क्योंकि
तुम्हारे में हिमालय-सी ऊंचाई होते हुए भी तुम्हारे में
पाषाण जैसा हृदय नहीं है।।

हे आचार कुशल बहुश्रुत मेधावी
फिर तुम क्या हो?
तुम इन सारी उपमाओं से परे हो
क्योंकि तुम एक महामानव धर्म-धुरंधर हो
इस संसार में तुम झुलसते प्राणियों को राह दिखाकर उससे
उबारने वाले हो।
इसलिए तुम केवल तुम हो, महाश्रमण हो।।

● **साध्वी ऋजुप्रभा** ●

महाश्रमण की श्रमनिष्ठा ने तेरापंथ को शिखर चढ़ाया
गुण-अभिमंडित गरिमामय यह युगप्रधान का पद मनभाया।।

सहज-सरल है जीवन शैली, आकर्षित सबको कर देती।
मनमोहक मुस्काती मुद्रा, हर मन की पीड़ा हर लेती।
श्रम की अकथ कहानी सुनकर, जन-जन का मानस चकराया।।

परिमित भाषी, मृदु संभाषी, वाणी में है पूर्ण सजगता।
अनाग्रही चिंतन की स्फुरणा, तार्किक कौशल ज्ञान गहनता।
प्रश्नोत्तर की शैली सुनकर, विद्वत्जन ने शीश नमाया।।

अनुकम्पा के हो तुम आकर, कितनों का उद्धार किया है।
चरणों में जो हुआ समर्पित, करुणामृत का पान किया है।
प्रायोगिक उद्बोधन विभु का, नव पीढ़ी ने भी अपनाया।।

वत्सलतामय अनुशासन से, शिष्यों को सरसब्ज बनाते।
देकर पुण्य प्रेरणा पल-पल, हर प्रमाद से हमें बचाते।
स्वर्णिम अवसर गुरु सन्निधि में, भाग्योदय से मैंने पाया।।

● **साध्वी नवीनप्रभा** ●

हे! मेरे माही मेरे मेहरबा मेरे खुदा।
तेरी रेहमत तेरा जुनुन तेरा साया जीना सिखाता है।
मेरे महाश्रमण तुमको देखकर मेरे मन में प्रश्न खड़ा होता है
कि तेरी तुलना मैं किससे करूं?
क्या सूरज से करूं? वह काम्य हैं?
नहीं, वह सूरज तो शाम ढ़लते ही अस्ताचल की ओर चला जाता है
जबकि तूं हर समय उदितोदित रहते हुए उदयाचल पर आरोहण
कर रहे हो।
क्या चन्द्रमा से करूं, वह उचित है?
नहीं, क्योंकि वह तो पूर्णिमा के दिन ही अपनी १६ कलाओं के
साथ शीतलता प्रदान करता है जबकि तूं अहर्निश अपनी आध्यात्मिक
कलाओं से समस्त जनमेदनी को शीतलता दे रहा है।
क्या बादलों से करूं वह संगत है?
नहीं, क्योंकि बादल तो बारिश के समय ही गरजते हैं बरसते हैं और
तूं हर समय पीयूषवर्षिणी वाणी से वात्सल्य की वर्षा कर रहा है।
क्या तुम्हारे को राम, कृष्ण या घनश्याम से मिलाऊं?
मेरे मन को वो भी ठीक नहीं लग रहा है, वह तो केवल अपने भक्त के
ही भगवान थे। जबकि तू जन-जन का भगवान बन चुका है।
उलझन में हूं तेरी तुलना किससे करूं?
तूं अकिंचन, अनुपम योगी, वीतराग, स्थितप्रज्ञ, स्थितात्मा।
अपनी छोटी सी बुद्धि से सोचा तो पाया-तूं व्यवहार से ऊपर उठकर
निश्चय में
इस मन-मंदिर के महातीर्थ हो, मेरा सम्मान, अभिमान हो।

● **साध्वी विधिप्रभा** ●

मानवता के दिव्य रूप हो, धर्मदूत तुम बनकर आए।
मूर्च्छित मानव संस्कृति के हित, संजीवन लेकर तुम आए।।

पौरुष के हो परम पुजारी, कदम-कदम पर मिली प्रतिष्ठा
समाधान देते जन-जन को, मानव की तुम में है निष्ठा
जगत पढ़ेगा प्रभो! तुम्हारी, लिखी प्रेम की पुण्य ऋचाएं।।

लम्बी-लम्बी पदयात्रा कर, जन सम्पर्क बढ़ाया तुमने
वत्सलता की वर्षा करके, गीत स्नेह का गाया तुमने
देख तुम्हारी दिव्य परख को, बार-बार बलिहारी जाएं।।

संघ संपदा की श्रीवृद्धि, स्पष्ट अहर्निश उर में चिन्तन
संयम सार तत्त्व जीवन का, संयम से सज्जित है तन-मन
तेजस्वी संन्यास तुम्हारा प्रवर प्रेरणा पाते जाए।।

शिवं सुंदरं जीवन तेरा, आलोकित जैसे ध्रुवतारा
संकल्पों की ज्योत जला करते है हम अभिषेक तुम्हारा
अर्पित है सांसों की सरगम, आत्मज्योति मंजिल पाए।।

विशिष्ट सम्मान

लाईफ टाईम एचीवमेंट अवार्ड : डॉ० प्रेमसुख मरोठी

दिनांक ७ अप्रैल, २०२२ को जैन डॉक्टर्स एसोशिएसन द्वारा आयोजित 'मैत्री-२०२२' जैन मेडिकोज मीट में नोखा के डॉ० प्रेमसुख मरोठी को उनकी ५४ वर्ष की दीर्घकालीन चिकित्सा सेवा, सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों के लिए लाईफ टाईम एचिवमेंट्स अवार्ड प्रदान किया गया। उनको यह सम्मान प्रोफेसर डॉ० धनपत कोचर ने प्रदान किया।

गौरतलब है कि डॉ० प्रेमसुख मरोठी द्वारा चारित्रात्माओं की चिकित्सा सेवा में विशिष्ट योगदान रहा है। उनको पूर्व में 'शासनसेवी' अलंकरण भी प्रदान किया जा चुका है।

सप्तरंगी कार्यक्रम का आयोजन

गंगाशहर।

तेममं द्वारा आचार्य तुलसी की आगामी पुण्यतिथि १७ जून के उपलक्ष्य में सप्तरंगी कार्यक्रम रखे गए, कार्यक्रम में उपस्थिति अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया, महामंत्री मधु देरासरिया, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सरिता डागा, पूर्व महामंत्री सुमन नाहटा, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान अध्यक्ष महावीर रांका, महामंत्री हंसराज डागा, जतन दुगड़, किशन बैद, धर्मेन्द्र डाकलिया, सभा उपाध्यक्ष रतनलाल छल्लानी, बीकानेर टीपीएफ अध्यक्ष मिलाप चोपड़ा आदि की रही।

सर्वप्रथम आचार्य तुलसी समाधि स्थल द्वार का उद्घाटन महिला मंडल की राष्ट्रीय टीम द्वारा किया गया। उसके पश्चात विभिन्न संस्थाओं को महिला मंडल द्वारा सहायता प्रदान की गई, जिसमें आदर्श विद्या मंदिर स्कूल में प्रोजेक्टर और एम्प्लीफायर दिया गया, चोपड़ा स्कूल में साउंड सिस्टम प्राचार्य प्रदीप लोढ़ा को भेंट किया गया और पीबीएम अस्पताल तथा रेलवे स्टेशन को ७ व्हीलचेयर भेंट की गई। आचार्य तुलसी कैंसर हॉस्पिटल में हाई मार्क लाइट प्रदान की गई, जिससे बेहतर इलाज की सुविधा मिल सके। विश्व भारती संस्थान को १२ सिलाई मशीन भेंट की गई, ताकि जरूरतमंद बहनें आत्मनिर्भर बन सकें। अध्यक्ष ममता रांका ने बताया कि सभी संस्थाओं को राष्ट्रीय टीम द्वारा सारा सामान भेंट करवाया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने बताया कि गंगाशहर महिला मंडल सामाजिक कार्य में सदैव अग्रणी रहा है, उन्होंने कहा कि शिक्षा और चिकित्सा क्षेत्र में गंगाशहर महिला मंडल ने बहुत उत्कृष्ट काम किया है। मंत्री कविता चोपड़ा ने कहा कि कार्यक्रम में लगभग १५० बहनों की उपस्थिति रही। सभा-संस्थाओं के गणमान्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान का आभार व्यक्त किया गया।

स्वागत समारोह का आयोजन

कांटाबाजी।

चातुर्मासिक नगरी कांटाबाजी में नगर प्रवेश पर स्वागत समारोह मुन मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि आप सभी ने संतों का स्वागत किया है। सभी के मन में खुशी का भाव है। संत हमारे गाँव में पधारे हैं। सभी के मन में अच्छा उत्साह भावना है। यह भाव आगे से आगे बढ़ता रहे। साधु-साध्वी आते हैं, तो स्वागत एवं विदाई पर भावना को प्रकट करते हैं। संतों के प्रति यह भाव इसलिए होता है कि उनका जीवन त्याग का होता है। सभी यही चाहते हैं कि मेरा जीवन मेरा परिवार सुखी रहे, विघ्न, बाधाएँ दूर हो जाएँ। त्याग का हमेशा से भारतीय परंपरा में महत्त्व रहा है। सच्चा सुख त्याग संयम में है। साधना के विभिन्न प्रयोग करें। अध्यात्म का विकास हो, यह प्रयास होना चाहिए।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि चातुर्मास से पूर्व कांटाबाजी आना हुआ है। चारित्रात्माओं के प्रवास से ज्ञान, दर्शन, चारित्र तप की जीवन में साधना करें।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। सभा अध्यक्ष युवराज जैन, महिला मंडल अध्यक्षा बॉबी जैन, तेयुप से विकास जैन, किशोर मंडल संयोजक सोहन जैन, संजय जैन, अजय जैन, कन्या मंडल, ज्ञानशाला परिवार ने गीत एवं वक्तव्य के द्वारा अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन प्रांतीय सभा संगठन मंत्री अंकित जैन ने किया।

जीवन-विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, योगाभ्यास कार्यक्रम

चेन्नई।

उपनगर स्थित तमिलनाडु स्पेशल पुलिस प्रशिक्षण रेजिमेंटल केंद्र आवडी क्षेत्र में आयोजित इस प्रेक्षाध्यान एवं योगाभ्यास कार्यक्रम का आयोजन एवं संचालन अणुव्रत समिति सदस्य, योग प्रशिक्षक हरीश भंडारी एवं विनोद हिरण ने किया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में योग प्रशिक्षक हरीश भंडारी ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया। प्रेक्षाध्यान तथा यौगिक कलासार, प्राणायाम सहित अनेक योगासनों के प्रयोग तथा उनके लाभ आदि से शिक्षकों को अवगत करवाया। अणुव्रत समिति, चेन्नई अध्यक्ष ललित आंचलिया ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रेक्षाध्यान तथा अणुव्रत के बारे में जानकारी दी।

डेप्यूटी कमांडेंट चंद्रमोहन ने अणुव्रत समिति, चेन्नई के अध्यक्ष ललित आंचलिया एवं टीम का स्वागत किया। सब-इंस्पेक्टर मुरुगन ने अणुव्रत समिति की इस पहल पर धन्यवाद ज्ञापित किया। अणुव्रत समिति के निवेदन पर आईपीएस ऑफिसर वेनमदी ने इस कार्यक्रम की रूपरेखा रची। कार्यक्रम में चीफ ड्रिल इंस्ट्रक्टर शक्तिवेल मुरुगन एवं ड्रिल इंस्ट्रक्टर मुरुगन की गणमान्य उपस्थिति रही। १६८ कैडेट्स और ६ ऑफिसर की उपस्थिति में आयोजित यह कार्यक्रम सफल रहा।

कार्यक्रम में अणुव्रत समिति, चेन्नई के मंत्री अरिहंत बोथरा, समिति सदस्य कुशल बांठिया उपस्थित रहे।

अक्षय तृतीया के विविध कार्यक्रम

अक्षय तृतीया समारोह का आयोजन

गजपुर।

मुनि संजय कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में अक्षय तृतीया का समारोह त्याग और तपस्या के साथ मनाया गया। बहनों के द्वारा मंगलाचरण किया गया। प्रारंभ में बालक-बालिकाओं के द्वारा भगवान आदिनाथ पर परिसंवाद किया गया।

मुनि संजय कुमार जी ने कहा कि भगवान ऋषभ के समय लोग नहीं जानते थे कि जीवन कैसे जीना उन्होंने राजा बनकर लोगों को जीवन जीने की कला सिखाई, मुनि दीक्षा लेने के बाद उन्होंने लोगों को संयम , शांति के साथ जीने और अनशन के साथ मरने की कला बताई।

मुनि धैर्य कुमार जी ने कहा कि आज का दिन हमें त्याग और तपस्या के साथ जीने की प्रेरणा देता है। उन्होंने गीत का संगान किया। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि जब कोरा शरीर तपता है तब अहंकार बढ़ता है, शरीर और इंद्रियाँ दोनों तपते हैं, तब अहंकार कम होता है, शरीर इंद्रिय और मन तीनों तपते हैं तब आत्मा का द्वार खुलता है, शरीर, इंद्रिय, मन और बुद्धि यह चारों तपते हैं तब आत्म साक्षात्कार होता है। तपस्या से समस्या का समाधान होता है। इस अवसर पर रिछेड़ से वरिष्ठ उपासक सोहनलाल कोठारी ने भगवान ऋषभ के आदिकाल को अच्छे ढंग से प्रतिपादित किया। नेहल ने सुमधुर गीत का संगान किया। सीमा कोठारी ने स्वरचित छंदों द्वारा ऋषभदेव के प्रति श्रद्धा व्यक्त की।

स्वागत तेरापंथ सभा के अध्यक्ष कुंदन कोठारी ने किया। कार्यक्रम में आत्मा, रिछेड़, पड़ासली, राजनगर, कंटालिया आदि क्षेत्रों से अच्छी संख्या में लोग समाहित थे। आत्मा से आए विमलेश मुनिश्री के संसारपक्षीय माता-पिता का भी सभा की ओर से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि प्रकाश कुमार जी ने किया। अणुविभा के उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल, सरपंच किशनलाल गमेती, गजपुर, फतेहलाल मेहता मजेरा, पत्रकार भीमराज कोठारी रिछेड़, गुणसागर धींग पड़ासली, रमेश मांडोत, उपाध्यक्ष अणुव्रत समिति राजनगर, विनय कोठारी, तेरापंथ सभा उपाध्यक्ष राजनगर आदि महानुभावों का सभा की ओर से सम्मान किया गया।

आभार व्यक्त हीरालाल कोठारी ने किया। कार्यक्रम के संयोजन में तेरापंथ सभा के संरक्षक शांतिलाल सोलंकी का सराहनीय सहयोग रहा। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे।

अक्षय तृतीया पर २७ तपस्वियों ने वर्षीतप की पूर्णाहुति

चेन्नई।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया के अवसर पर वर्षीतप आराधकों के अभिनंदन, अनुमोदना का कार्यक्रम आयोजित हुआ। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। मुनि सुधाकर जी ने कहा कि इतिहस बनता नहीं, बनाया जाता है। जो धीर, वीर, गंभीर होते हैं वे ही तप के क्षेत्र में गतिशील होते हैं।

मुनिश्री ने भगवान ऋषभ के जीवन के तप से जुड़े दिवस पर तपस्वियों के आध्यात्मिक जीवन की शुभकामना के साथ प्रेरणा पाथेय प्रदान किया।

इस अवसर पर कहा कि वर्तमान में जहाँ भौतिकता की चकाचौंध बढ़ रही है, वहीं तप के क्षेत्र में भी लोग निरंतर गतिशील हैं। आज जहाँ ७० वर्षीय तपस्विनी विमला देवी वैदमूथा अपना ३८वाँ वर्षीतप लेकर आई हैं, वहीं ३२ वर्षीय युवक दर्शन सेठिया दूसरा वर्षीतप लेकर आया है। सभी परिवार वालों ने भी अपनी समतानुसार तपस्वियों का मनोबल, आत्मबल बढ़ाया, उनकी अनुमोदना में सहभागी बने।

मुनि नरेश कुमार जी ने संचालन करते हुए गीतिका प्रस्तुत की। सभी संघीय संस्थाओं की ओर से विमल चिप्पड़ ने चेन्नई प्रवासित साध्वी मंगलप्रज्ञा जी की सहवर्तीनी साध्वी राजुलप्रभाजी के दूसरे उपवास वर्षीतप और साध्वी सिद्धियशाजी के एकाशन वर्षीतप के पूर्णाहुति की अनुमोदना की।

प्यारेलाल पितलिया, घीसूलाल बोहरा, डॉ० कमलेश नाहर, संतोष सेठिया, पुष्पा हिरण ने तपस्वियों के तप की अनुमोदना गीत, वक्तव्य के माध्यम से की। पारिवारिकजनों ने भी तपस्वियों के तप की अनुमोदना की।

प्रचार-प्रसार प्रभारी स्वरूपचंद दांती ने बताया कि समारोह में तेरापंथी सभा के साथ तेरापंथ ट्रस्ट मंडल, साहूकारपेट, तेयुप, अणुव्रत समिति, टीपीएफ आदि संस्थाओं का सहयोग रहा। कार्यक्रम के व्यवस्था पक्ष में तेमम का विशेष सहयोग रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
6 - 12 जून, 2022

✦ *हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन

राजाजीनगर।

मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा 'वीतराग पथ' कार्यशाला का आयोजन अभातेयुप सहमंत्री भूपेश कोठारी की अध्यक्षता में तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ।

मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा वीतराग का अर्थ है—अधम से परम की ओर प्रस्थान। वीतराग का अर्थ है भवि आत्मा का सर्वोच्च पद। वीतराग का अर्थ बंधन से शाश्वत मुक्ति का संकेत। वीतराग वही बनता है जो संसार के स्वरूप को देख लेता है। जिस व्यक्ति को समझ आ गया संसार दुःख रूपी ज्वाला है, जिसमें आकर्षित होकर अनंत जीव भस्मीभूत हो गए समझ लो उसी दिन से उसका वीतराग पथ की ओर प्रस्थान हो गया। राग से वीतराग की ओर बढ़े जिसमें हमारी आत्मा को परमात्मा का दिव्य स्वरूप प्राप्त हो सके।

सहयोगी संत मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि पुण्य-पाप का होगा आभास-संसार में बढ़ता रहेगा प्रवास, करेंगे कर्मों का नाश, होगा जीवन का विकास। बाल संत जयदीप कुमार जी ने संयम पर प्रकाश डालते हुए गीत का संगान किया।

सामुहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। भिक्षु श्रद्धा स्वर के द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। बैंगलोर ज्ञानशाला संयोजक जुगराज श्रीश्रीमाल के द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। राजाजीनगर तेरापंथ महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने भिक्षु अष्टकम से मंगलाचरण किया। ज्ञानशाला के बच्चों के द्वारा संवाद प्रस्तुत किया गया। तेयुप अध्यक्ष मनोज मेहता ने सभी का स्वागत किया।

अभातेयुप सहमंत्री-द्वितीय भूपेश कोठारी, राजाजीनगर सभा अध्यक्ष शांतिलाल पितलिया, मंत्री महावीर मेहता, महिला मंडल अध्यक्षा चेतना वेदमूथा, अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा, राजाजीनगर शाखा प्रभारी तेजराज चोपड़ा, सतीश पोरवाड़ ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर अभातेयुप ने नेत्रदान प्रभारी नवनीत मूथा, तेरापंथ टाइम्स संपादक दिनेश मरोठी, बैंगलोर तेयुप अध्यक्ष विनय बैद, मंत्री प्रवीण बोहरा, तेयुप राजाजीनगर के परामर्शक, प्रबुद्ध विचारक, मंत्री मंडल, युवा साथी, किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही। तेयुप मंत्री राजेश देरासरिया ने संचालन किया। कार्यशाला संयोजक पंकज बोहरा एवं सह-संयोजक सचिन हिंगड़ ने आभार व्यक्त किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

साउथ कोलकाता।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के तहत तेयुप ने मानव ज्योत संस्था के साथ मिलकर केयर-२०२२ रक्तदान शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में किया। शिविर विशेष रूप से थैलेसीमिया पीड़ित बच्चों के सहयोग हेतु किया गया एवं पीपल्स ब्लड बैंक इस शिविर के ब्लड बैंक सहयोगी थे। इस शिविर में कुल १०८ पंजीकरण हुए और कुल १०४ यूनिट रक्त एकत्रित किए गए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद्मश्री हरखचंद सावला एवं कुलीनकांत लूथिया थे। मानव ज्योत के अध्यक्ष अरुण खंडेरिया की टीम के अथक प्रयास से यह रक्तदान शिविर सफल रहा।

परिषद के अध्यक्ष अमित पुगलिया ने एमबीडीडी के अंतर्गत परिषद की गतिविधियों से सबको अवगत कराया। कार्यक्रम के संयोजक सौरभ श्यामसुखा एवं संदीप मनोत थे। तेयुप साउथ कोलकाता के प्रबंध मंडल एवं कार्यकारिणी से अच्छी संख्या में रक्तदान कर शिविर को सफल बनाया।

रक्तदान शिविर में टीपीएफ, साउथ कोलकाता के अध्यक्ष आलोक चोपड़ा, साउथ सभा के सहमंत्री कमल कोचर एवं यशवंत रामपुरिया, परिषद के संस्थापक अध्यक्ष मनीष सेठिया, महासभा के ईडब्ल्यूसी सदस्य शैलेंद्र बोरड़, परिषद के विशिष्ट अतिथि अनिल जैन, आशीष दुगड़, संदीप डागा एवं सुशील ओस्तवाल की उपस्थिति रही। हिम्मत बरड़िया का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

रक्तदान शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप ने लघु उद्योग भारती, साउथ संभाग (पं०बं०) में उत्तर कोलकाता मारवाड़ी महिला समिति के साथ मिलकर आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में आयोजित किया। रक्तदान शिविर में कुल ३२ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ।

अध्यक्ष विकास सिंघी, पूर्व अध्यक्ष एवं एटीडीसी संयोजक नरेंद्र छाजेड़, उपाध्यक्ष-प्रथम अमित बैद, उपाध्यक्ष-द्वितीय धर्मेंद्र बूचा, मंत्री धीरज मालू, एमबीडीडी संयोजक विवेक सुराणा, प्रभात चंडालिया सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की शिविर उपस्थिति रही। एमबीडीडी के इस सत्र के प्रायोजक पवन जैन को साधुवाद।

रक्तदान शिविर का आयोजन

राजाराजेश्वरी नगर।

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव रक्तदान शिविर का आयोजन तेयुप द्वारा अध्यक्ष सुशील भंसाली के नेतृत्व में प्रेस्टीज बागमने टेम्पल बेल्स अपार्टमेंट, राजाराजेश्वरी नगर में किया गया। शिविर का आयोजन संकल्प इंडिया फाउंडेशन के सहयोग से थैलीसीमिया पीड़ित रोगियों के लिए किया गया। सामुहिक नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली ने अध्यक्षीय वक्तव्य में पधारे हुए सभी का स्वागत किया। प्रत्येक रक्तदाताओं से व्यक्तिशः रक्तदान करवाया गया। जिसके अंतर्गत २० यूनिट रक्त एकत्रित हुआ।

शिविर में तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, उपाध्यक्ष धर्मेश नाहर, सहमंत्री बरुण पटावरी, सरल पटावरी, संगठन मंत्री राकेश दुगड़, परिषद के परामर्शक एवं पूर्व अध्यक्ष राजेश भंसाली, विकास दुगड़, एमबीडीडी के स्थानीय संयोजक बिकास छाजेड़ एवं कार्यसमिति सदस्यों की उपस्थिति रही।

शिविर की सफल आयोजना में पूरी टीम के साथ प्रेस्टीज बागमने टेम्पल बेल्स के सदस्यों का श्रम उल्लेखनीय रहा। संस्था के पदाधिकारियों ने समस्त रक्तदाताओं को प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया। संयोजक बिकास छाजेड़ ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग दीक्षात समारोह का आयोजन

अहमदाबाद।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग दीक्षांत समारोह तेरापंथ भवन, शाहीबाग में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी संवेगप्रभाजी द्वारा नवकार महामंत्र से की गई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ की घोषणा की गई। विजय गीत का संगान अभातेयुप सदस्य राजेश चोपड़ा ने किया। अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। परिषद अध्यक्ष ललित बेंगवानी ने सभी का स्वागत किया। सात दिवसीय कार्यशाला के प्रथम दो दिवस अभिनंदन गादिया ने सुंदर तरीके से सभी को मंच पर खड़े होना, स्माइल आदि के बारे में विस्तार से बताया। अगले दो दिन चिराग पामेचा ने सभी प्रतिभागियों को स्वागत भाषण एवं आभार ज्ञापन आदि की जानकारियाँ दी। अंतिम तीन दिन नेशनल ट्रेनर सीमा संचेती ने पिछले चार दिनों का रिवीजन कर पाँचवें दिन समुह बनाकर नाटक प्रस्तुति एवं वक्तव्य कला के गुर बताते हुए कुशल वक्ता के लिए तैयार किया।

अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक एवं मुख्य अतिथि मुकेश गुगलिया ने सभी सीपीएस प्रतिभागियों को इस सफर को बरकरार रखने की प्रेरणा दी। अभातेयुप के महामंत्री पवन मांडोत, राष्ट्रीय प्रशिक्षिका सीमा संचेती, सीपीएस सह-प्रभारी कुलदीप कोठारी, अहमदाबाद परिषद के प्रभारी दीपक रांका ने अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यशाला के प्रशिक्षकों एवं व्यवस्था में सहयोग के लिए तेरापंथ सेवा समाज एवं अर्जुन छोटूलाल बाफना का मोमेंटों से सम्मान किया गया। सीपीएस संयोजक वैभव कोठारी, कुलदीप नवलखा, विनोद वडेरा, रौनक टोडरवाल, संयम चोरड़िया, हनुमान भूतोड़िया, दिलीप पारख, रमेश चोपड़ा का विशेष श्रम रहा। साथ में कांति दुगड़, अर्पित मेहता एवं प्रदीप बागरेचा एवं रवि बालड़ का योगदान रहा।

कार्यक्रम में अभातेयुप सदस्य राजेश चोपड़ा, पंकज डांगी, अरविंद संकलेचा एवं संघीय संस्थाओं के साथ-साथ अन्य संस्थाओं के पदाधिकारीगण की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। सुबह के बैच के ६ एवं संध्याकालीन बैच से ५ संभागियों को अच्छे प्रदर्शन के लिए पुरस्कार देकर उत्साहवर्धन किया।

सभी संभागियों को सीपीएस कार्यशाला सर्टिफिकेट के साथ-साथ उपहार देकर प्रोत्साहित किया गया। तेयुप मंत्री कपिल पोखरणा ने सभी का आभार व्यक्त किया। अंत में सभी प्रतिभागियों ने अनुभव किया कि उन्होंने सीपीएस कर बहुत कुछ पाया।

रक्तचाप-मधुमेह जाँच शिविर का आयोजन

राजाराजेश्वरी नगर।

तेयुप द्वारा प्रेस्टीज बागमने टेम्पल बेल्स अपार्टमेंट में निःशुल्क रक्तचाप, शुगर की जाँच शिविर का आयोजन आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, राजाराजेश्वरी नगर की टीम द्वारा किया गया। शिविर में पहुँचे ६१ लोगों ने परीक्षण करवाया।

ब्लड प्रेशर एवं शुगर पीड़ितों को खान-पान में तेल, मिठाई आदि का सीमित मात्रा में प्रयोग करने पर जोर दिया। शिविर में तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, सहमंत्री बरुण पटावरी, सरल पटावरी, परिषद के परामर्शक एवं पूर्व अध्यक्ष राजेश भंसाली, विकास दुगड़, कार्यसमिति सदस्य प्रकाश छाजेड़ की उपस्थिति रही।

अभिनव सामायिक कार्यक्रम

कोटे (कर्नाटक)।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में प्रथम बार अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया गया। साध्वी मेरुप्रभाजी के मंगल गान से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। डॉ० रेणु कोठारी ने सामायिक के महत्त्व को उजागर किया। साध्वी डॉ० गवेषणाजी ने कहा कि भगवान महावीर का सूत्र है—जीवन द्वंध से युक्त है। लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जन्म-मरण, निंदा-प्रशंसा, मान-अपमान का चक्र चलता रहता है। इन सभी परिस्थितियों में सम रहना ही समता है। सामायिक का अर्थ है—समभाव में रमण करना।

साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि सामायिक बाहरी प्रदर्शन नहीं आत्मदर्शन का भाव है। यह कोरी अभिव्यक्ति नहीं है। साध्वी दक्षप्रभाजी ने कार्यक्रम का संचालन किया। सरस्वती बेन ने गीतिका प्रस्तुत की। मल्लाराम, पिंटु चौधरी भीयाराम, नारायण कुमावत, ताराचंद, प्यारेलाल, प्रकाश, संजु पोकरणा, रवि कोठारी, ओमप्रकाश सहित अनेक सदस्य कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

भौतिक ज्ञान के साथ आध्यात्मिक ज्ञान भी आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

ढ़ाणी भोपालराम, २५ मई, २०२२

मानवता के उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित कर जन-जन का कल्याण करने वाले महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी लूणकरणसर से ६ किलोमीटर का विहार कर ढ़ाणी भोपालराम के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे। मुख्य प्रवचन में अनंत आस्था के आस्थान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आर्हत वाङ्मय में कहा गया है—ज्ञान और आचार एक तत्त्व है। दोनों एक-दूसरे से संबध हैं। आचरण अच्छा रखने के लिए, क्रिया को सम्यक् रखने के लिए, उस क्रिया के संबंध में ज्ञान भी सम्यक् और सही होना चाहिए।

ज्ञानविहीन आचरण और आचरण विहीन ज्ञान दोनों में कमियाँ हैं। फिर चाहे वो गृहिणी हो, व्यापारी हो, डॉक्टर हो, वकील हो, व्यक्ति जो भी कार्य करे, उसमें उसका ज्ञान ठीक होता है, तो वह कार्य सम्यक्तया संपन्न हो सकता है।

धर्म के क्षेत्र में भी ज्ञान है, तो धर्म की साधना अच्छी हो सकती है। शास्त्र में कहा गया है कि संयम को जानना है, संयम की साधना करनी है, तो पहले जीव-अजीव आदि को जानो। जो जीव-अजीव को जान पाएगा वो संयम को जान पाएगा, साधना कर पाएगा। चाहे लौकिक क्षेत्र में देखें या आध्यात्मिक क्षेत्र में देखें, ज्ञान का तो दोनों जगह बड़ा महत्त्व है।

ज्ञान एक पवित्र तत्त्व है। ज्ञान और आचरण दोनों सही हो, वरना दोनों एक-दूसरे से अधूरे हैं। यह एक अंधे और पंगु आदमी के प्रसंग से समझाया कि दोनों एक-दूसरे के पूरक बन जाएँ तो काम हो सकता है। ज्ञान रहित व्यक्ति अंधा है और आचरण रहित व्यक्ति पंगु है। दोनों मिल जाएँ तो परिपूर्णता आ सकती है।

कुछ लोग दुनिया में ऐसे होते हैं, जो जानते तो हैं, पर आचरण नहीं कर सकते। कई आचरण में सक्षम है, पर उनके पास ज्ञान नहीं है। जो तत्त्व को जानते भी हैं और उसका आचरण भी करते हैं, ऐसे लोग दुनिया में विरल होते हैं। ज्ञान का सार है—आचार।

अध्यात्म के क्षेत्र में अच्छा ज्ञान है, जिस ज्ञान से व्यक्ति राग से विराग की ओर आगे बढ़े। वो ज्ञान आध्यात्मिक है, जिसको जानकर व्यक्ति कल्याणकारी कार्यों में अनुरक्त हो जाए, हमारी आत्मा मैत्री भाव से भावित हो जाए। ज्ञान तो हर विषय में शुद्ध तत्त्व है। ज्ञान तो बहुत है, पर जीवनकाल सीमित है, तो क्या करें?

ज्ञान अनंत है। हमसे भी बड़े ज्ञानी दुनिया में हैं। सारा ज्ञान पढ़ पाना मश्किल है। सारभूत ज्ञान को पढ़ लो, जैसे हंस दूध-दूध को ले लेता है, पानी को छोड़ देता है। जो उपयोगी तुम्हारे लिए है, वो तुम पढ़ो। धर्म के क्षेत्र में तो थोड़ा ज्ञान सभी को होना चाहिए। आगे के लिए अध्यात्म विद्या का भी ज्ञान हो। जीवन में शांति रह सके। भौतिक ज्ञान के साथ आध्यात्मिक ज्ञान भी हो। हमें अच्छा इंसान बनना है। यह कल्याणकारी हो सकता है।

आज गाँव ढ़ाणी में आए हैं। हम तीन बातें बताते हैं—सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। पूज्यप्रवर ने इन तीनों के संकल्प-प्रतिज्ञा गाँव के लोगों को करवाई।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में लूणकरणसर व्यवस्था समिति के अध्यक्ष हंसराज बरड़िया, तेयुप लूणकरणसर गीत, ढाणी गोपालाराम के जगदीश श्रेयांस बैद ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

जैविभा द्वारा प्रकाशित मुनि सुखलालजी की दो कृतियाँ चिंतन महावीर का और सच्चे बच्चे श्रीचरणों में लोकार्पित की गई। परम पावन ने आशीर्वचन फरमाया। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि शासनश्री मुनि सुखलालजी एक अच्छे विद्वान संत थे। उनका विपुल साहित्य है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि हमें सहना चाहिए। सब जीवन में शांति चाहते हैं।

हम अपनी आत्मा को पापों से बचाने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

रुणीया बड़ाबास २८ मई, २०२२

संयम सुमेरु युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी शेरेरा से ६ किलोमीटर का विहार कर रुणीया बड़ाबास पधारे। मुख्य प्रवचन में भवसागर तारक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में तीन प्रवृत्ति के साधन हैं। शरीर हमारे पास है, वाणी है और मन भी है। शरीर के द्वारा चलना-फिरना आदि कार्य किए जाते हैं। वाणी से बोला जाता है। मन के द्वारा अतीत की स्मृति, कल्पना और चिंतन कर लेते हैं।

प्रवृत्ति आवश्यक भी हो जाती है। आदमी ध्यान दे कि प्रवृत्ति पापकारी न हो। हम अपनी आत्मा को पापों से बचाने का प्रयास करें। हम अपनी आत्मा के नाथ बन जाएँ। हम आत्मा की रक्षा करें। अरक्षित आत्मा संसार में भ्रमण करती है। सुरक्षित आत्मा सब दुःखों से मुक्त हो जाती है।

शरीर और वाणी से हम उतनी प्रवृत्ति नहीं करते हैं, जितनी मन से करते हैं। मन हमारा मतिमान रहता है। मन बड़ा चंचल है। साधु-सज्जन पंखे के समान होते हैं, जो स्वयं घूमते हुए दूसरों का ताप हरते हैं। मन की चंचलता को हम कम करने का प्रयास करें। अशुभ चिंतन तो करें ही नहीं।

गृहस्थ में भी सज्जन मिल सकते हैं। धर्म साधना करने वाले मिल जाते हैं। परंतु मन में विचार आ सकते हैं। मन की चंचलता को एक प्रसंग से समझाया कि मन धर्म साधना में भी भटकता रहता है। विचार हमारे चंचल हैं, पर आत्मज्ञ उनको जान सकता है। मन हमारा अनावश्यक चंचलता में न जाएँ।

मन से भी आदमी पाप कर सकता है। ज्यादा पाप मन वाला प्राणी करता है। मनुष्य और तिर्यंच सातवीं नरक तक जा सकते हैं। मन में संताप भी होता है। ज्यादा धर्म की साधना भी मन वाला प्राणी ही कर सकता है। साधु मन वाला प्राणी ही बनेगा। आगे मोक्ष या ऊँचे देवलोक तक जा सकता है। मन अच्छा और बुरा दोनों काम कर सकता है। हम प्रयास करें, हमारा मन सु-मन बन जाए।

मन सु-मन बनने से आत्मा की आगे की गति अच्छी हो सकती है। जप-स्मरण से भी हमारा मन सु-मन बन सकता है। धार्मिक साधना से मन चंचलता, मन की मलीनता कम हो सके, ऐसा प्रयास करें।

हमारे आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु ने एक तत्त्व दिया। एक साधना का पथ स्वीकार किया। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत और आचार्य महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान जैसे अवदान दिए हैं। इनसे हमारा मन और आचरण अच्छा बन सकता है।

आज रुणीयाबास में आना हुआ है। छोटे गाँवों में श्रद्धालु परिवार हैं, इनसे भी मिलना हो जाता है। यहाँ के लोगों में धार्मिक प्रवृत्ति रहे। जीवन आदमी का अच्छा बने। शनिवार की ७ से ८ की सामायिक होती रहे। मन सु-मन रहे, ऐसा प्रयास रहे।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अजीत भादाणी, महिला मंडल (लुणियासर), अंशिका-खुशी, तेरापंथ समाज, कन्या मंडल, भादाणी परिवार, पूर्व मंत्री राजस्थान सरकार वीरेंद्र बेणीवाल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

यादें... शासनमाता की - (१०)...

(पृष्ठ २४ का शेष)

आचार्यप्रवर ने आराधना की छठी ढाल का पाठ शुरू करवाया। दुष्कृत की निद्रा तथा सुकृत की प्रशंसा—जीव अनंत काल से संसार में है। कोई जीव पाप करता है तो उसका फल भी भोगना पड़ता है। पाप हो गए तो हो गए, उनकी निंदा करने से उन पर चोट लगती है।

दसवेंआलियं में बार-बार 'पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि---' पाठ आता है।

आराधना की छठी ढाल में बताया गया कि भ्रमण करते-करते जीव ने मिथ्यात्व को भी धारण कर लिया हो, ऊँची सरधा (उल्टी श्रद्धा) ली हो तो निंदा करता हूँ। मैंने तो ली जो ली, दूसरों को भी उल्टी श्रद्धा करवाई तो उसकी भी निंदा करता हूँ। ५ आश्रवों का सेवन किया हो तो उनकी भी निंदा करता हूँ। हिंसा, झूठ, चोरी आदि आश्रव हैं। मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय आदि पाँचों का सेवन किया हो, जो दुर्गति के कारण हैं, उनकी भी निंदा करता हूँ। वीतराग का मार्ग ढका हो, कुमार्ग का मार्ग खोला हो तो सरलतापूर्वक उनकी भी निंदा करता हूँ। कोई परिवार का दोषण किया—कराया हो जैसे आश्रम आदि में खाना बाँट दिया हो आदि तो उसकी भी निंदा करता हूँ। तीन योगों से जो पाप किए हों तो उन सबकी मैं निंदा करता हूँ। दृष्कृत की निंदा के साथ सुकृत की प्रशंसा भी करनी चाहिए। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की अनुमोदना, अ०सि०आ०उ०सा० को नमन की अनुमोदना, सामायिक आदि छहों आवश्यक तथा सूत्रों की अनुमोदना, ५ समिति, ३ गुप्ति, ५ महाव्रतों की अच्छी तरह आराधना की हो तो उनकी अनुमोदना एवं दान, शील, तप, भाव का सेवन किया हो तो उनकी भी अनुमोदना करता हूँ।

साध्वीप्रमुखाश्री : कृपा करवाई, माइतपणा करवाया, शुभ दृष्टि करवाई। गुरुदेव विराजे हुए हैं, मैं सोयी हुई हूँ।

आचार्यप्रवर : कामना कर रहे हैं कि आप भी विराजें, स्वस्थ होकर विराजें, यही कामना करते हैं।

आचार्यप्रवर : आहार में क्या लिया? (साध्वियों से)

साध्वी कल्पलता : जो भी लेते हैं, बहुत थोड़ा ही लेते हैं।

आचार्यप्रवर : जो भी जितनी भी रुचि हो, गवेषणा करके ला दें।

साध्वीप्रमुखाश्री : गुरुदेव के प्रताप से कमी किसी की भी नहीं है।

फिर मंगलपाठ आदि का उच्चारण कर आचार्यप्रवर अपने प्रवास स्थल पर पधार गए।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
6 - 12 जून, 2022

✦ *धर्म का ही एक महत्त्वपूर्ण अंग है सच्चाई। नैतिकता सच्चाई से जुड़ा हुआ तत्त्व है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

भय के कारण व्यक्ति ईमानदारी और सच्चाई से दूर हो सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

खारड़ा, २६ मई, २०२२

महान परिव्राजक आचार्यश्री महाश्रमणजी भीषण गर्मी में १६ किलोमीटर का प्रलंब विहार कर खारड़ा ग्राम के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे। मुख्य प्रवचन में आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आर्ष वाणी में कहा गया है—जो जिन तीर्थंकर होते हैं, केवलज्ञानी होते हैं। क्षीण मोह वीतराग हो जाते हैं, वे भय से मुक्त होते हैं।

आठ कर्म जैन दर्शन में बतलाए गए हैं। उनमें एक कर्म है—मोहनीय कर्म, जिसको आठों कर्मों में राजा कहा गया है। मोहनीय कर्म का बड़ा परिवार है। इसकी कुल २८ प्रकृतियाँ हैं। उनमें एक प्रकृति है—भय की प्रकृति। अभय हो जाना बहुत बड़ी बात हो जाती है। अभय यानी न तो डरना, न दूसरे को डराना। डरना कमजोरी है, तो डराना भी एक तरह का पाप हो सकता है।

अभय में भी सात्त्विकता हो। हमारा अभय अहिंसापूर्ण है। भय के कारण आदमी हिंसा भी कर सकता है। भय के कारण आदमी झूठ भी बोल सकता है। भगवान महावीर का जीव अपने पिछले भव में त्रिपृष्ठ नाम का वासुदेव भी बना था। उनके उस समय में एक प्रतिवासुदेव था—अश्वग्रिह। उसको मारकर त्रिपृष्ठ वासुदेव बन सत्ता में आए थे। अश्वग्रिह के मौत के प्रसंग को समझाया कि किस तरह आदमी भय के कारण हिंसा और झूठ बोल देता है।

तात्कालिक लाभ के कारण आदमी झूठ की शरण भी ले लेता है। गृहस्थ प्रयास रखे कि कभी झूठ का सहारा न लेना पड़े। दूसरे पर झूठा आरोप लगाना, खुद की आत्मा पर पाप लगाना हो जाता है। सच्चाई से परेशानियाँ आ सकती हैं, पर सच्चाई परास्त नहीं होती। सच्चाई में शक्ति होती है, झूठ के पैर नहीं होते हैं। सच्चाई बोलने वाले का दिमाग साफ रहता है। झूठ बोलने वाले को तो कितने ताने-बाने बुनने पड़ते हैं।

झूठ का तो रास्ता ही गलत और तनाव भरा है। ईमानदारी का रास्ता बढ़िया है। भय के कारण आदमी ईमानदारी और सच्चाई से दूर हो सकता है। प्रेक्षाध्यान में भी अभय की अनुप्रेक्षा कराई जाती है। धर्म और अध्यात्म की साधना में एक तत्त्व है—अभय। भगवान महावीर ने कितने अभय को प्राप्त कर लिया था। किस प्रकार वे उपसर्गों में निर्भय रहे थे।

आदमी अभ्यास करे, अभ्यास करते-करते विकास हो सकता है। पुरुषार्थ भी हो। किसी प्राणी को डराने का प्रयास न करें। चाहे छोटे जीव हो या बड़े जीव। सावधानी रखें। हमारे भीतर भय का भाव पैदा हो जाता है, पर डरे नहीं, शांति रखें। डर लगना हमारी कमजोरी है। डर का उपाय है—नवकार मंत्र का जाप करें। हम अभय की साधना करें, न डरना, न डराना और अभय में भी सात्त्विकता को बनाए रखना।

ज्ञानशाला लूणकरणसर ने नौ तत्त्वों पर अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि जिस व्यक्ति में श्रद्धा होती है, वह अपने कार्य में सफल हो सकता है।

पूज्यप्रवर ने ज्ञानार्थियों से भक्तामर के श्लोकों को पूछा। ज्ञानार्थियों ने अच्छी प्रस्तुति दी। पूज्यप्रवर ने गुरुधारणा करवाई।

यादें... शासनमाता की - (१०)

● **साध्वी स्वस्तिक प्रभा** ●

१५ मार्च, २०२२, प्रातः करीब ७ बजे साध्वीप्रमुखाश्री के कक्ष में परमपूज्य का आगमन एवं शासनमाता को विधिवत वंदना। तदुपरांत।

साध्वीप्रमुखाश्री : गुरुदेव रोज मुझ पर कृपा करवा रहे हैं। बस इतनी कृपा और करवा दें—आप नीचे नहीं विराजें।

आचार्यप्रवर : (थोड़ा मुस्कराते हुए) कैसे हैं?

साध्वी सुमतिप्रभा : गला सूख रहा है।

आचार्यप्रवर : अब पानी पिला दिया क्या?

साध्वी सुमतिप्रभा : तहत् डॉ० नवीन संचेती ने बताया कि ऑक्सीजन की हवा से होंठ सूखते हैं।

आचार्यप्रवर : पानी के साथ और कुछ दिया क्या?

साध्वी सुमतिप्रभा : थोड़ी सी उकाली दी है।

आचार्यप्रवर ने फिर अपने आगमन के संदर्भ में भाषा बनायी—

हम प्रातः सूर्योदय के बाद यथाशीघ्र अनुकंपा भवन में आ जाएँ और यहाँ से अपने कक्ष में चले जाएँ। फिर ७ बजे के आसपास जैसे भी सुविधा हो, साध्वीप्रमुखाश्री के पास आ जाएँ। थोड़ी सी देर ठहरकर वापस हम अपने कमरे में चले जाएँ। सूर्योदय के बाद हम प्रथम बार अधिक समय न लगाकर यहाँ से रवाना हो जाएँ। बाकी मौके पर जैसी अपेक्षा लगे, वैसा हो सकता है। फिर हम लगभग ६:१५ पर साध्वीप्रमुखाश्री के पास आ जाएँ। उसके बाद अंदाज ६:४५ के आसपास तक साध्वीप्रमुखाश्री के पास रहकर वापस यहाँ से रवाना हो जाएँ।

साध्वीप्रमुखाश्री : गुरुदेव बहुत कृपा करवा रहे हैं। बस एक कृपा और करवाएँ—नीचे विराजें नहीं।

साध्वी सुमतिप्रभा : ये अर्ज तो हम सब कर रहे हैं।

आचार्यप्रवर : (पिछली बात को जारी रखते हुए) दूसरा टाइम अपना ६:१५ वाला, तीसरा समय मोटामोटी ३:३०-४:०० बजे तक। चौथा समय मान लें ५:३०-६:०० बजे लगभग। बीच में जब कभी हमारी इच्छा हो जाए या साध्वीप्रमुखाश्री हमें बुला लें, हमें याद कर लें कभी भी संभवतया साध्वीप्रमुखाश्री के पास आ सकते हैं। किंचित संशोधन के साथ ये व्यवस्था रख रहे हैं। (फिर साध्वियों द्वारा वंदना का स्थान, समय भी तय करवाया)।

आचार्यप्रवर : (साध्वी कल्पलताजी से) वो होम्योपैथिक दवाई चल रही है?

साध्वी कल्पलता : तहत्।

साध्वीप्रमुखाश्री : कृपा कराई, माइतपणा करवाया।

करीब ६:२० बजे—

आचार्यप्रवर : थोड़ा स्वाध्याय करें? कैसे है?

साध्वी सुमतिप्रभा : थोड़ी श्वास में तकलीफ है।

आचार्यप्रवर : अच्छा, आज थोड़ी ज्यादा है।

साध्वी सुमतिप्रभा : तहत् अभी थोड़ा सा बिठाया पानी के लिए मगर दो घूँट ही ले सकें।

आचार्यप्रवर : और कोई उपाय या कुछ करना?

साध्वी सुमतिप्रभा : अभी तो एक्स-रे होगा। उसके बाद ही पता चलेगा कि पानी निकालना या नहीं।

आचार्यप्रवर : अभी भी श्वास लेना कठिन लग रहा है। एक्स-रे में तो समय लग जाएगा।

साध्वीप्रमुखाश्री : एक्स-रे करने से क्या होगा? पता चलने से भी क्या होगा?

आचार्यप्रवर : मूल तो अभी अल्ट्रासाउंड करने से पता चले लेकिन वो नहीं कर सकते तो एक्स-रे से पता चल जाएगा कि पानी कितना कहाँ है? निकलना जरूरी लगेगा तो फिर डॉ० निकालेंगे।

साध्वीप्रमुखाश्री : कृपा करवाई।

दोपहर करीब ३:३० बजे

आचार्यप्रवर : कैसे हैं?

साध्वी सुमतिप्रभा : साँस थोड़ा भारी तो है।

आचार्यप्रवर : (साध्वी कल्पलताजी से) वो रिपोर्ट कैसे आई?

साध्वी कल्पलता : रिपोर्ट डॉ० ने ऐसा बताया कि आज पानी नहीं निकालेंगे।

आचार्यप्रवर : अगर बोलें तो अरुचिकर तो नहीं लगेगा?

(शेष पृष्ठ २३ पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**